वर्ष 08 अंक 1-2 माह अप्रैल-मई, 2023 (संयुक्तांक) ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

लोकसभा चुनाव क्या मुद्दा बनेगा राम मंदिर ?

20

साइबर अपराध
मोबाइल मधुर फांस

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24

Make your life more Comfortable

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

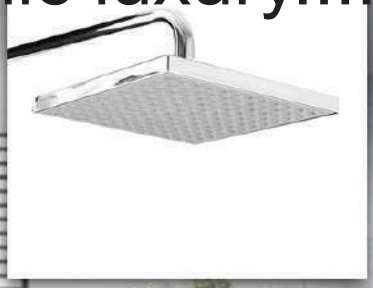

Mathura

Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष: 08, अंक: 1-2, अप्रैल-मई, 2023 (संयुक्तांक)

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेन्द्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट (सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)

बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश

पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
विश्व पृथ्वी दिवस

08 मानव जीवन को बचाने के लिये पृथ्वी संरक्षण ...

पृथ्वी सभी ग्रहों में से अकेला ऐसा ग्रह है जिस पर अभी तक जीवन संभव हैं। मनुष्य होने के नाते, हमें प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने वाली गतिविधियों में सख्ती से शामिल होना चाहिए और पृथ्वी को बचाना चाहिए क्योंकि यदि पृथ्वी रहने के लायक नहीं रही तो मनुष्य का विनाश निश्चित है। प्रदूषण और स्मॉग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पृथ्वी दिवस विश्व भर में मनाया जाता है।

विशेष
स्मृतियाँ

27 राजनीति के शिखर पुरुष थे प्रकाश सिंह बादल

प्रकाश सिंह बादल 11 बार विधायक रहे और केवल दो बार राज्य विधानसभा का चुनाव हारे। वर्ष 1977 में वह केंद्र में कृषि मंत्री के रूप में मोरारजी देसाई की सरकार में थोड़े समय के लिए शामिल हुए। 2008 में बादल ने अकाली दल की...

जरूर पढ़ें
राजनीति

28 राहुल गांधी ने क्यों छेड़ा है जातीय जनगणना का राग

भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर यह दावा करती रहती है कि 2014 में केंद्र की सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ओबीसी लोगों के लिए इतने ऐतिहासिक काम किए हैं जो इससे पहले की किसी भी केंद्र सरकार ने नहीं किया था।

विशेष
लोकनायक

10 भारत में श्रमिक आंदोलन के अग्रदूत नारायण मेघाजी

भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों में मई दिवस के नाम से प्रसिद्ध एक मई सार्वजनिक अवकाशों का दिन होता है। मई दिवस के दिन राजनीतिक दलों, कामगार यूनियनों व समाजवादी समूहों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम व समारोह आयोजित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस अथवा श्रम दिवस मनाया जाता है ...

जरूर पढ़ें
विशेष

14 बाघ व तेंदुओं का शिकार करते थे जिम कॉर्बेट

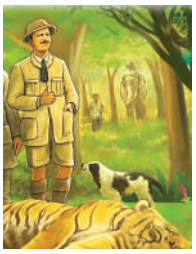

महान शिकारी, पर्यावरणविद, फोटोग्राफर और लेखक जिम कार्बेट का निधन 19 अप्रैल को हुआ था। जिम ने दर्जनों खतरनाक बाघ और तेंदुओं का शिकार किया था। लेकिन बाद में जिम ने शिकार छोड़ वन्यजीवों के संरक्षण का प्रयास करने लगे थे।

48 कहानी

50 कविता

सम्पादकीय

'मन की बात' यूं ही नहीं बनी जन-जन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज दुनिया के सबसे अग्रणी नेताओं में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी कार्यशैली और अनूठी पहल से वैश्विक राजनीतिक मंच पर अलग पहचान स्थापित की है। प्रधानमंत्री ने भारतीय राजनीति में अनेक दूरगामी कठोर निर्णयों के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक नवाचार के विविध आयोजनों में सदैव लीक से हटकर कुछ न कुछ नया करने का प्रयास किया है। अनेक अवसरों पर अपने निर्णयों से सहयोगियों के साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों को न केवल चौंकाया, बल्कि आश्चर्यचकित किया है। प्रधानमंत्री की अग्रगामी सोच और अनूठी पहल का उत्कृष्ट उदाहरण है, उनका मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात। यह उनकी कार्यशैली को लेकर अलग प्रतिमान स्थापित करता है। आज मन की बात रेडियो-टेलीविजन के माध्यम से सुना जाने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है। इससे नियमित जुड़ने वालों श्रोताओं और दर्शकों की संख्या लगभग 25 करोड़ है। ताजा सर्वे बताते हैं कि मन की बात को आरंभ होने से अब तक एक अरब से अधिक लोग सुन चुके हैं। भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र, जहां टेलीविजन जैसे माध्यम की पहुंच पूरी तरह नहीं है, तक रेडियो के माध्यम से सुना जानेवाला यह कार्यक्रम देश को एक सूत्र में जोड़ने वाला प्रमाणित हुआ है। कोई भी देश तभी तरक्की कर सकता है जब उस देश की जनता अपनी बात को देश के मुखिया तक और देश का मुखिया अपनी बात जनता तक पहुंचा पाये । इससे देश की जनता में अपने मुखिया के लिए विश्वास पनपता है और देश के मुखिया को भी पता चलता है कि आखिर जनता की क्या अपेक्षाएं हैं। फिर पूरे जोश के साथ देश के विकास से जुड़े कार्यों में भागीदारी होती है और देश विकास की राह में अग्रसर होता है। इसी तरह के प्रयास का नाम है- मन की बात। कोई आश्चर्य नहीं कि मन की बात अब जन की बात से भी आगे बढ़कर जन-जन की बात बनता जा रहा है। नरेन्द्र मोदी ने मई 2014 में प्रधानमंत्री बनने के कुछ महीनों बाद ही मन की बात श्रृंखला शुरू की थी। 03 अक्तूबर, 2014 को इसके पहले एपिसोड का प्रसारण हुआ। तब से यह निरंतर जारी है। इसमें प्रधानमंत्री ने राजनीतिक कार्यक्षेत्र से अलग हटकर भारतीय समाज के कुछ उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण लोगों से संवाद स्थापित किया। हजारों ऐसे लोगों से बात की जो नाम और प्रसिद्धि की चकाचौंध से दूर रहकर चुपचाप कुछ नया और असाधारण कार्य कर रहे हैं। ऐसी अनेक गुमनाम प्रतिभाएं मन की बात के माध्यम से प्रकाश में आईं, जिनके संबंध में पहले अधिकतर लोगों को कुछ अधिक नहीं मालूम था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सुदूर क्षेत्रों तक अपनी बात पहुंचाना और अपनी पहुंच बनाना था । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस कार्यक्रम को प्रसारित करने का माध्यम रेडियो को बनाया गया। भारत में लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या के पास रेडियो उपलब्ध है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री देश की जनता को किसी एक विषय पर जागरूक कर उन्हें वह कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे राष्ट्र सही राह पर चलता हुआ तरक्की कर सके। प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम का 100वां एपिसोड रविवार को प्रसारित हुआ। यह कार्यक्रम जब आरंभ हुआ था, तब अनेक लोगों (विशेषकर प्रधानमंत्री के राजनीतिक विरोधियों) को समझ में नहीं आया था। लोग रेडियो जैसे माध्यम को कमोबेश महत्वहीन मान रहे थे। अधिकांश विरोधियों ने मन की बात को प्रसिद्धि का स्वांग कहा। मजाक । उनके अनेक सहयोगियों को भी समझ में नहीं आया कि वो करना क्या चाह रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने ठान ली थी। देश की धड़कन माने जाने वाले आकाशवाणी की मंद और धीमी होती हुई आवाज को उन्होंने ऐसी पहचान दी कि आज देश के कोने-कोने में इसे सुना जा रहा है। यह आज जीवंत लोकप्रिय कार्यक्रम बन चुका है। प्रधानमंत्री कहते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान हो, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ हो, या हर घर तिरंगा अभियान हो, मन की बात ने इन अभियानों को जन आंदोलन बना दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस कार्यक्रम के जरिये पूर्वोत्तर और अन्य राज्यों की संस्कृति और त्योहारों को लोकप्रिय बनाने और मुख्यधारा में लाने के लिए एक प्रभावी मंच के रूप में सेवा की। उन्होंने कहा भी- मन की बात, वास्तव में, हमारी सभ्यता और लोकाचार की भावना का प्रतिबिंब है। मन की बात की विषय वस्तु के लिए जनता से आग्रह किया जाता है कि वे विषय भेजें। सलाह दें। इसके लिए एक टोल फ्री नंबर भी है। लोगों के भेजे गए विषयों में से ही प्रधानमंत्री किसी एक का चुनाव करते हैं। फिर उस पर जनता को संबोधित करते हैं। इस संबोधन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आकाशवाणी और दूरदर्शन के चैनलों के साथ गैरसरकारी रेडियो और चैनलों का भी प्रयोग किया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन इतना सहज होता है कि जनता पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है । इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री यही आशा करते हैं कि लोग प्रेरणा लेकर अच्छे एवं सही मार्ग पर चलें। अभी तक कई विषयों पर प्रधानमंत्री अपने मन की बात लोगों से साझा कर चुके हैं। वो मन की बात में विज्ञान, कौशल विकास, स्वच्छ भारत अभियान, स्वास्थ्य और दिव्यांग बच्चों की छात्रवृत्ति पर चर्चा कर चुके हैं। नौजवानों को नशे से दूर रहने का सलाह दे चुके हैं। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ जनता से संवाद कर चुके हैं। बच्चों को परीक्षा के समय होने वाले तनाव से बचाने के लिए प्रभावशाली पहल कर चुके हैं। किसानों से उनकी समस्या पर रूबरू हो चुके हैं। बोर्ड परीक्षा में सफल बच्चों को बधाई देकर प्रोत्साहित कर चुके हैं। वन रैंक वन पेंशन के मुद्दे पर अपनी बात कह चुके हैं। ■

> मन की बात को लेकर मेरी संकल्पना है कि इसकी 100 कड़ियों को विभिन्न भाषाओं में संकलित कर पुस्तक के रूप में सामने लाया जाए। इसका मकसद है कि यह किताब ऐतिहासिक एवं प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में नरेन्द्र मोदी अध्ययन केंद्र की स्थायी धरोहर के रूप में अक्षुण्ण रहे।

डॉ. वंदना पालीवाल

जनगण के कवि हैं रबींद्र नाथ टैगोर

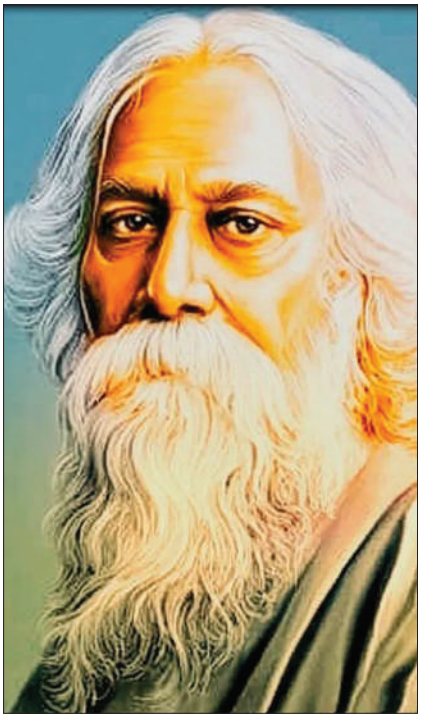

महाकवि रबींद्र नाथ टैगोर की जयंती 07 मई को मनाई जाएगी। उन्हें जनगण का कवि कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। गुरुदेव टैगोर दुनिया के एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनके लिखे दो गीत दो देशों के राष्ट्रगान हैं। उनका लिखा गीत जन गण मन भारत का राष्ट्रीय गान है। उनका लिखा दूसरा गीत आमार सोनार बांग्ला बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान है। दुनिया में गुरुदेव जैसे विरले ही लोग होते हैं जिन्हें इतना बड़ा सम्मान मिला है। जिनके लिखे गीत दो देशों के राष्ट्रगान बनकर अमर हो गए। भारत और बांग्लादेश में जब भी कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम होता है तो गुरुदेव टैगोर के लिखित गीत राष्ट्रीय धुन के रूप में गाए जाते हैं। गुरुदेव के लिखे इन गीतों के माध्यम से उन्हें हर समारोह में याद किया जाता है।

रबींद्रनाथ टैगोर ने अपनी रचनाओं से न केवल हिंदी साहित्य के विकास में योगदान दिया। बल्कि अनेकों कवियों और साहित्यकार को भी प्रोत्साहित किया है। वह एक ऐसे प्रकाश स्तंभ थे जिन्होंने पूरे संसार को अपनी रचनाओं के माध्यम से आलोकित किया। गुरुदेव रबींद्र नाथ टैगोर कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता हैं। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान फूंकने वाले युगद्दष्टा हैं। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। टैगोर की रचनाओं में मानवीय दुख की सघन अनुभूति होती है। वे अपने माता-पिता की तेरहवीं संतान थे। उनका जन्म 07 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी में हुआ था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। रबींद्रनाथ टैगोर ने अपनी शुरूआत की पढ़ाई कोलकाता में प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल की। वह बैरिस्टर बनना चाहते थे। इसके लिए 1878 में इंग्लैंड के ब्रिजटोन में पब्लिक स्कूल में नाम लिखाया। फिर लन्दन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया। किन्तु 1880 में बिना डिग्री प्राप्त किए ही स्वदेश पुनः लौट आए। सन 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। टैगोर की माता का निधन उनके बचपन में हो गया था और उनके पिता व्यापक रूप से यात्रा करने वाले व्यक्ति थे। अतः उनका लालन-पालन अधिकांशतः नौकरों द्वारा ही किया गया। टैगोर के भाई सतेंद्र टैगोर सिविल परीक्षा पास करके एक अच्छी नौकरी करते थे और दूसरे भाई ज्योतिरेंद्रनाथ संगीतकार और नाटक के कवि थे। हिंदी साहित्य में टैगोर का योगदान अविस्मरणीय है। मात्र 13 साल की उम्र में उनकी पहली कविता अभिलाषा एक तत्व भूमि नाम की पत्रिका में छपी थी। इंग्लैंड से वापस आने के बाद उन्होंने बंगाली भाषा में लिखना शुरू कर दिया था। 1877 तक उन्होंने अनेकों रचनाएं की और कई रचनाएं अनेकों पत्रिकाओं में छपी। 1842 में रविंद्र नाथ टैगोर ने हिंदू मुस्लिम - एकता और घरेलू उद्योगों के विषय पर एक गंभीर लेख लिखा। 1860 में पहला उपन्यास गोरा लिखा। वह अच्छे लेखक के साथ-साथ एक अच्छे दर्शन शास्त्री भी थे। उन्होंने कई रचनाओं का निर्माण किया और स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान बड़ी संख्या में भारतीय लोगों को प्रभावित किया। बांग्लादेश का राष्ट्रगान ह्यआमार सोनार बांग्लाह्न भी लिखा है। अपने असरदार लेखन से पूरब और पश्चिम के बीच की भी दूरी को कम कर दिया। कई रचनाओं में समाज की तत्कालीन कुरीतियों, गरीबी और विभिन्न अवस्थाओं का भी चित्रण किया है। इनकी किताब गलपगुच्छा भारत के गरीबी, निरक्षरता और पिछड़ापन पर आधारित अनेकों कहानियों का संग्रह है। उनकी एक रचना पूरवी में संस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, नैतिक और सामाजिक गीत हैं। उन्होंने न केवल अपनी लेखन के जरिए समाज की कुरीतियों को मिटाने की कोशिश की बल्कि स्वयं भी योगदान दिया। अपनी प्रथम पत्नी के देहांत के बाद इन्होंने मृणालिनी देवी नाम की एक विधवा औरत से विवाह किया और समाज में विधवा औरतों की खराब स्थिति को दूर करके विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने की कोशिश की। उन्होंने कल्पना, सोनार तारी, गीतांजलि, आमार सोनार बांग्ला, घेर-बेर, रबीन्द्र संगीत, चित्रांगदा, मालिनी, गोरा, राजा और रानी जैसे ना जाने कितने ही उपन्यास, कविता और लघु कथाओं की रचना की। 1913 में उन्हें गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। टैगोर बड़े साहित्यकार होने के साथ ही एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। वह कहते थे सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो संपूर्ण दुनिया के साथ-साथ हमारे जीवन का भी सामंजस्य स्थापित करती है। टैगोर मानते थे कि बच्चों को बंद कमरे में शिक्षा देने से ज्यादा अच्छा है। उन्हें खुले वातावरण में प्रकृति के बीच में बिठाकर शिक्षा दें। मिट्टी पर खड़े पेड़ पौधे, बदलते मौसम, पंछियों का चहचहाना, विभिन्न जीव जंतुओं से भरे प्राकृतिक परिवेश बच्चों को कला की प्रेरणा देती है। इसीलिए इन्होंने कोलकाता शहर से 180 किलोमीटर दूर 1901 को शांतिनिकेतन की स्थापना की। उन्होंने सिर्फ पांच बच्चों को लेकर ये स्कूल खोला था जो 1921 में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन गया। आज शांति निकेतन का नाम बदलकर विश्वभारती हो गया है। जहां लगभग 6000 छात्र पढ़ते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजी हुकूमत का विरोध करते हुए ह्लसरह्व की उपाधि लौटा दी थी। उन्हें अंग्रेज 1915 में ह्लनाइट हुडह्व नाम से ये उपाधि देना चाहते थे। उनके नाम के साथ सर लगाया गया था। टैगोर ने जलियांवाला हत्याकांड की वजह से इस सम्मान को लेने से इनकार कर दिया था। ■

ब्रज की महत्ता ही ऐसी है- ब्रज की रज च्यों न भये वीर...। यहां जहां श्रद्धा का उपवन महकता है, वहीं उत्सव, महोत्सव, मेलों की धूम रहती है। कभी फाल्गुन महोत्सव, कभी श्रावण महोत्सव, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव। इन्हीं ब्रज की लोक परंपराओं में फूलडोल मेले भी हैं, जिनमें आज भी उल्लास बिखरता है। इनमें क्षेत्रीय लोगों के लिए स्वस्थ मनोरंजन होता है। बच्चों व महिलाओं के लिए झूले, चरख होते हैं। कृष्ण-बलदेव की शोभायात्रा भी निकाली जाती है। अब यह सब धीरे धीरे कम होते जा रहे हैं।

लोक परंपराओं की सुगंध बिखेरते फूलडोल मेले

आदर्श नंदन गुप्ता

ब्रजमंडल में होली को राधा-कृष्ण का पर्व माना जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने राधिका से होली खेली थी। उसके बाद चैत्र मास में ब्रज मंडल के नगर, उपनगरों में अपने भाई बलदाऊ के साथ श्रीकृष्ण ने भ्रमण किया था। उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए होली के बाद फूलडोल मेले आयोजित किए जाते हैं। कृष्ण और बलदेव के स्वरूपों को फूलों से सजे रथ में विराजमान कराके क्षेत्र में भ्रमण कराया जाता है। इसीलिए इन्हें फूलडोल मेला कहा जाने लगा। आगरा में जहां-जहां फूलडोल मेले आयोजित होते हैं उनमें पहले केवल श्रीकृष्ण-बलदेव की निकाली जाती थी, अब कई मेलों में अन्य देवी-देवताओं की झांकियों को भी शामिल किया जाने लगा है।

हर जगह की तिथि निश्चित

होली के बाद से यह फूलडोल मेला चैत्र मास में विभिन्न मोहल्लों में लगते है। सभी मेलों के दो-दो दिन निश्चित होते हैं, पहले दिन छोटा मेला, दूसरे

दिन बड़ा मेला। जहां बिना किसी प्रचार-प्रसार के लोग एकत्र होते हैं। क्षेत्र में रंग, बिरंगे विद्युत बल्बों से सजावट की जाती है। कई दिन पहले से झूले, चरख, खेल, तमाशे वाले वहां पहुंच जाते हैं। निश्चित दिन वहां आसपास के क्षेत्रों के लोग मेले का लुत्फ उठाते हैं। रात्रि को कृष्ण-बलदेव की शोभायात्रा बैंड बाजों के साथ निकाली जाती है, जिसमें मेला स्थल के लोग शामिल होते हैं। यह शोभायात्रा शहर में भ्रमण करती हुई वापस मेला स्थल पर पहुंचती है।

पुराणों में भी है उल्लेख

फूलडोल मेले का उल्लेख गरुण पुराण में भी किया गया है। विख्यात साहित्यकार पं. गोपाल प्रसाद व्यास द्वारा संपादित ब्रज विभव ग्रन्थ में लिखा है कि स्कंद पुराण में उत्कल खंड के 42 वे अध्याय में फूलडोल मेले का वर्णन है। इसमें यह भी उल्लेखित है कि फूलडोल मेले मनाने का तरीका क्या होता है।

कई जगह होते हैं लक्खी मेले

वृंदावन में चैत्र कृष्ण नवमी को रंगजी के मंदिर से विशाल रथ यात्रा निकाली जाती है। उसके बाद दूसरे दिन बगीची में रात को आतिशबाजी होती है। यह तीन दिन का लक्खी मेला होता है। विश्राम घाट, चामुंडा मसानी पर मेले लगते हैं। मान सरोवर पर राधारानी का मेला, मानबिहारी श्रीकृष्ण फूल डोलोत्सल, रनवारी (छाता), बठैन कलां (छाता) में आयोजन होते हैं। गोवर्धन में मुड़िया पूनों का मेला अषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को लगता है।

आगरा में सिमट रहे मेले

आगरा में फूलडोल अब कम होते जा रहे हैं। जहां भी होते हैं, उनमें आधुनिकता आ गई है। मोतीकटरा में 125 साल से दो दिन का मेला होता था। छोटी होली वाले दिन कृष्ण, बलदेव की शोभायात्रा निकाली जाती थी। 25 साल से अब एक ही दिन मेला होने लगा, जिस दिन होली खेली जाती है, उसी दिन शाम को बैंड बाजों के साथ कृष्ण-बलदेव की परंपरागत शोभा यात्रा निकाली जाती है। आयोजक राकेश दधीच के अनुसार इसकी शुरूआत करीब सवा सौ साल पहले उनके बाबा पंडित हरिशंकर दधीच (काकड़ व्यास) ने की थी। उसके बाद दधीच परिवार द्वारा जन सहयोग से इस परंपरा का निरंतर निर्वहन किया जा रहा है। कृष्ण-बलदेव के स्वरूप को पहले जरी के मुकुट पहनाए जाते थे, लेकिन अब बनारस से उनकी पोशाक और चांदी के मुकुट मंगाए गए हैं, जिन्हें प्रति वर्ष पहनकर क्षेत्र में ये स्वरूप भ्रमण करते हैं।

- धाकरान चौराहा पर बाबा बुंदेले का मेले का मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की सप्तमी और अष्टमी भव्यता के साथ मनाया जाता है। पूरे धाकरान मोहल्ले में और चौराहे पर आकर्षक सजावट की जाती है। नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी की धर्मशाला से विशाल शोभायात्रा निकाली जाती है। जिसमें कृष्ण-बलदाऊ के रथ के अलावा अन्य देवी देवताओं की दर्जनों झांकियां बैंड बाजों के संग होती हैं। धाकरान मुहल्ले में बुंदेले बाबा के मंदिर पर फूलबंगला सजाया जाता है। मेला कमेटी के पूर्व अध्यक्ष प्रेम सिंह धाकड़ के अनुसार मेले में कंस के पुतले का दहन किया जाता है।
- बेलनगंज में चैत्र मास की अष्टमी को प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां कचौड़ा बाजार स्थित दाऊजी के मंदिर से कृष्ण-बलदेव की शोभायात्रा निकाली जाती है। मंदिर के पुजारी विनोद कुमार मिश्र ने बताया कि कई पीढ़ियों से यह मेला लगता चला रहा है। पहले केवल कृष्ण-बलदेव की सवारी निकलती थी। अब उन झांकियों में वृद्धि की गई है।
- नाला भैरों निवासी अधिवक्ता संजय कप्तान का कहना है कि उनके यहां शहर का प्रमुख मेला होता था। करीब 40 साल पहले जब कांग्रेस नेता हरिओम भारद्वाज मेला कमेटी के अध्यक्ष थे, तब उन्होंने शहर के प्रमुख बैंड किशोर और जगदीश को कृष्ण-बलदेव की शोभायात्रा में बजवाया था। मेले में सभी वर्ग जाति धर्म के लोगों का सहयोग होता था।
- कचहरी घाट में ज्योतेस्वर नाथ फूलडोल मेला होता था। 11 अप्रैल 2001 के बाद यह मेला नहीं हुआ। मेला कमेटी के महामंत्री जुगल किशोर ने बताया कि उस समय अध्यक्ष हरेशचंद अग्रवाल उर्फ हरो लाला थे। चैत्र मास की एकादशी को भैरों बाजार का मेला लगता था। क्षेत्रीय नागरिक विष्णु कटारा ने बताया कि स्थानीय लोगों की कोई दिलचस्पी न होने के कारण मेले की लकीर पीटी जा रही है। झूले व खेल तमाशे वाले आते हैं लेकिन निराश होकर उन्हें लौटना पड़ता है।
- आगरा की फुलट्टी में दो दिवसीय आयोजन होता था, दो साल से किसी कारण से नहीं हो रहा। आयोजन समिति के उपाध्यक्ष नवीनचंद शर्मा ने बताया कि छोटी होली यानी धूल के दिन कृष्ण-बल्देव की सवारी आसपास के क्षेत्र में भ्रमण करती थी। दूसरे दिन रास लीला आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। ■

> **आगरा की फुलट्टी में दो दिवसीय आयोजन होता था, दो साल से किसी कारण से नहीं हो रहा। आयोजन समिति के उपाध्यक्ष नवीनचंद शर्मा ने बताया कि छोटी होली यानी धूल के दिन कृष्ण-बल्देव की सवारी आसपास के क्षेत्र में भ्रमण करती थी। दूसरे दिन रास लीला आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे।**

लोक गायन की परंपरा

फूलडोल मेलों में रात्रि को लोक संस्कृति से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते थे, जिनमें रसिया, रासलीला, ख्यालगोई, भगत आदि का लोग लुत्फ उठाते थे। रात-रात भर ये आयोजन होते थे। कालांतर से कवि सम्मेलन भी इन मेलों में हुए।

कुछ अलग ही होते हैं मेले के व्यंजन

मेलों में खानपान भी विशेष होता है, जिसमें अब कमी आती जा रही है। फास्ट फूड की जम कर बिक्री होती है। परम्परागत बिकने वाले खजला, जलेबी के स्थान पर चाऊमीन, पेटीज और मोमोज ने ले लिया है। गुलाब लच्छे तो लुप्त होते जा रहे हैं । मेलों में सबसे ज्यादा बिक्री नानखटाई की अभी भी होती है

डंडे खेलते हुए निकलते थे नागरिक

पहले जितने भी मेले लगते थे, सभी में कृष्ण-बलदेव की शोभायात्रा निकाली जाती थी। अब भी कई मेलों में इस परंपरा का निर्वाह किया जाता है। पहले लोग डंडे खेलते हुए निकलते थे। जगह-जगह आरती उतारी जाती थी। अब बैंड बाजों के साथ सवारियां शामिल की जाने लगी हैं।

नहीं पसंद आते मिट्टी के खिलौने

पहले तो केवल मिट्टी के खिलौने ही मेलों में बिकते थे। अब उनकी बिक्री कम होती जा रही है। अब ये मिट्टी के बजाय पीओपी के बनने लगे है। प्लास्टिक के खिलौने भी बच्चों द्वारा पसंद किए जा रहे हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस

मानव जीवन को बचाने के लिये पृथ्वी संरक्षण जरूरी

पृथ्वी सभी ग्रहों में से अकेला ऐसा ग्रह है जिस पर अभी तक जीवन संभव हैं। मनुष्य होने के नाते, हमें प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने वाली गतिविधियों में सख्ती से शामिल होना चाहिए और पृथ्वी को बचाना चाहिए क्योंकि यदि पृथ्वी रहने के लायक नहीं रही तो मनुष्य का विनाश निश्चित है। प्रदूषण और स्मॉग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पृथ्वी दिवस विश्व भर में मनाया जाता है।

आज आवश्यकता है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ओर विशेष दिया जाए, जिसमें मुख्यतः धूप, खनिज, वनस्पति, हवा, पानी, वातावरण, भूमि तथा जानवर आदि शामिल हैं।

ललित गर्ग

वहीं, लोगों को संदेश देने के लिए सरकार द्वारा कुछ बेसिक थीम भी तय किए जाते हैं। हर साल प्रकृति एवं पर्यावरण चुनौतियों को ध्यान में रख कर पृथ्वी दिवस के लिए एक खास थीम रखी जाती है और उस थीम के अनुसार टारगेट अचीव करने का प्रयास किया जाता है। इस बार विश्व पृथ्वी दिवस की थीम इन्वेस्ट इन अवर प्लैनेट है। पृथ्वी दिवस या अर्थ डे जैसे शब्द को दुनिया के सामने लाने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे- जूलियन कोनिग। दरअसल, उनका जन्मदिन 22 अप्रैल को होता था। इसी वजह से पर्यावरण संरक्षण से जुड़े आंदोलन की शुरूआत भी उन्होंने इसी दिन की और इसे अर्थ डे का नाम दे दिया। इस वर्ष पृथ्वी दिवस हमें हरित समृद्धि से समृद्ध जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह थीम संदेश देती है कि हमारे स्वास्थ्य, हमारे परिवारों, हमारी आजीविका और हमारी धरती को एक साथ संरक्षित करने का समय आ गया है। पृथ्वी दिवस आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की वर्षगांठ का प्रतीक है, जो पहली बार सन् 1970 में मनाया गया था। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं पृथ्वी के संरक्षण के लिये जागरूक करना है। दुनिया में पृथ्वी के विनाश, प्रकृति प्रदूषण एवं जैविक संकट को लेकर काफी चर्चा हो रही है। पौधे जीवन की सबसे बुनियादी जरूरत है चाहे इंसान हो, जानवर हो या अन्य जीवित चीजें। वे हमें भोजन, ऑक्सीजन, आश्रय, ईंधन, दवाएं, सुरक्षा और फर्नीचर देते हैं। वे पर्यावरण, जलवायु, मौसम और वातावरण के बीच प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक हैं। हमें वनों की कटाई को रोककर और वनीकरण को बढ़ावा देकर वन्यजीवों की देखभाल करनी चाहिए।

आज विश्व भर में हर जगह प्रकृति का दोहन एवं शोषण जारी है। जिसके कारण पृथ्वी पर अक्सर उत्तरी ध्रुव की ठोस बर्फ का कई किलोमीटर तक पिघलना, सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, भयंकर तूफान, सुनामी और भी कई प्राकृतिक आपदाओं का होना आदि ज्वलंत समस्याएं विकराल होती जा रही है, जिसके लिए मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जो आज हमारे सामने हैं। ये आपदाएं पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। जीव-जन्तु अंधे हो जाएंगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से तटवर्ती इलाके चपेट में आ जाएंगे। कोरोना महामारी जैसी व्याधियां रह-रहकर जीवन संकट का कारण बनती रहेगी। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। बात अगर इन मूलभूत तत्व या संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। आप ही बताइये कि कहां खो गया वह आदमी जो स्वयं को कटवाकर भी वृक्षों को कटने से रोकता था? गोचरभूमि का एक टुकड़ा भी किसी को हथियाने नहीं देता था। जिसके लिये जल की एक बूंद भी जीवन जितनी कीमती थी। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थी। जो वन्य पशु-पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियों बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था। अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार-बार प्राकृतिक आपदाएं कहर बरपा रही है। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है, लेकिन हमने राजस्थान में अनेक शहरों में बाढ़ की विकराल स्थिति को देखा हैं। जब मनुष्य पृथ्वी का संरक्षण नहीं कर पा रहा तो पृथ्वी भी अपना गुस्सा कई प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखा रही है। वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियां नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। आज चिन्तन का विषय न तो युद्ध है और न मानव अधिकार, न कोई विश्व की राजनैतिक घटना और न ही किसी देश की रक्षा का मामला है। चिन्तन एवं चिन्ता का एक ही मामला है लगातार विकराल एवं भीषण आकार ले रही गर्मी, सिकुड़ रहे जलस्रोत विनाश की ओर धकेली जा रही पृथ्वी एवं प्रकृति के विनाश के प्रयास। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, दूषित गैसों से छिद्रित होती ओजोन की ढाल, प्रकृति एवं पर्यावरण का अत्यधिक दोहन- ये सब पृथ्वी एवं पृथ्वीवासियों के लिए सबसे बड़े खतरे हैं और इन खतरों का अहसास करना ही विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का ध्येय है। प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ रहा है। आबादी बढ़ रही है, जमीन छोटी पड़ रही है। हर चीज की उपलब्धता कम हो रही है। आक्सीजन की कमी हो रही है। साथ ही साथ हमारा सुविधावादी नजरिया एवं जीवनशैली पर्यावरण एवं प्रकृति के लिये एक गंभीर खतरा बन कर प्रस्तुत हो रहा हैं। आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा संकट बन गया है। अगर पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाए तो मानव जीवन कैसे सुरक्षित एवं संरक्षित रहेगा? पृथ्वी है तो सारे तत्व हैं, इसलिये पृथ्वी अनमोल तत्व है। इसी पर आकाश है, जल, अग्नि, और हवा है। इन सबके मेल से प्रकृति की संरचना सुन्दर एवं जीवनमय होती है। अपने-अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी पर अत्याचार रोकना होगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर ध्यान केंद्रित करना होगा। अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से औद्योगिक क्रांति पर नियंत्रण करना होगा, क्योंकि उन्हीं के कारण कार्बन उत्सर्जन और दूसरी तरह के प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। यह देखा गया है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ इस प्रकार से खिलवाड़ होती रही तो वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियां नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। आज आवश्यकता है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ओर विशेष दिया जाए, जिसमें मुख्यतः धूप, खनिज, वनस्पति, हवा, पानी, वातावरण, भूमि तथा जानवर आदि शामिल हैं। इन संसाधनों का अंधाधुंध दुरुपयोग किया जा रहा है, जिसके कारण ये संसाधन धीरे-धीरे समाप्त होने की कगार पर हैं। प्रकृति के संरक्षण को सभी देशों की सरकारों एवं विभिन्न गैर-राजनैतिक संगठनों ने बड़ी गम्भीरता से लिया है और इस पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। ऐसे भी अनेक तरीके हैं जिनमें आम आदमी भी इनके संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकता है। ■

भारत में श्रमिक आंदोलन के अग्रदूत

नारायण मेघाजी लोखंडे

भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों में मई दिवस के नाम से प्रसिद्ध एक मई सार्वजनिक अवकाशों का दिन होता है। मई दिवस के दिन राजनीतिक दलों, कामगार यूनियनों व समाजवादी समूहों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम व समारोह आयोजित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस अथवा श्रम दिवस मनाया जाता है। बेलटेन के केल्टिक त्योहार और वालपुर्गिस नाईट के जर्मनिक त्योहार से परम्परागत रूप से संबंधित मई दिवस वर्तमान में मजदूर आंदोलनों के सामाजिक और आर्थिक उपलब्धियों का एक अंतर्राष्ट्रीय उत्सव बन गया है।

अशोक प्रवृद्ध

यद्यपि मई दिवस को प्रेरणा संयुक्त राज्य अमेरिका के मजदूर आंदोलनों और 1886 में शिकागो में श्रमिकों द्वारा काम की अवधि आठ घंटे करने और एक दिन साप्ताहिक अवकाश घोषित करने की मांग को लेकर हड़ताल पर चले जाने से मिली, तथापि प्रथमतः 1 मई अर्थात मई दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाये जाने की मान्यता 1889 में पेरिस में अन्तर्राष्ट्रीय महासभा की द्वितीय बैठक में फ्रेंच क्रांति को स्मरण करते हुए तत्सम्बन्धी एक प्रस्ताव पारित किये जाने से मिली। उसी समय से विश्व भर के 80 देशों में मई दिवस को राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मान्यता प्रदान की। वर्तमान में यह लगभग वैश्विक रूप ले चुका है। इसका मूलभूत आशय व उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मजदूरों को मुख्य धारा में बनाए रखना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति समाज में जागरुकता लाना है। यह सच है कि मई दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के रूप में परिवर्तित करने का श्रेय विदेशियों को है, लेकिन हैरतनाक तथ्य यह है कि ईसाईयों का अवकाश दिवस के रूप में प्रसिद्ध रविवार की छुट्टी एक भारतीय की देन है। और रविवार को सार्वजनिक अवकाश घोषित कराने का श्रेय एक भारतीय को है। आज रविवार अवकाश, छुट्टी का दिन होता है। रविवार को विद्यालय, कार्यालय, बैंक सभी बंद और इनमें कार्य करने वालों की दिन भर की फुर्सत होती है। दफ्तरों और फैक्ट्रियों में काम करने वालों के लिए रविवार का दिन बहुत ही खास होता है। हाथ पर लगी और दीवारों पर टंगी घड़ियों के अतिरिक्त मनुष्य के मस्तिष्क, दिमाग में भी एक घड़ी चलती रहती है। आमतौर पर इसमें रविवार आने की आहट मात्र से यह काम पर लगे लोगों को खुशी दे जाती है, क्योंकि पूरे सप्ताह तमाम भागदौड़ के बाद रविवार ही एक ऐसा दिन होता है, जब ज्यादातर लोगों को छुट्टी मिलती है। ऐसे लोग इस दिन का बेसब्री से इंतजार करते हैं, क्योंकि पूरे सप्ताह काम करने के बाद उन्हें इस दिन छुट्टी मिलती है, जिसका उपयोग वे अपने व्यक्तिगत कार्य, घूमने और आराम करने में करते हैं। 10 जून 1890 को ब्रिटिश ने पहली बार रविवार को छुट्टी की घोषणा की थी। इसके पूर्व सप्ताह के सातों दिन काम करना पड़ता था। उस समय कम का सप्ताह सोमवार से शुरू नहीं होता था और रविवार पर खत्म भी नहीं होता था। ईसाई लोगों के लिए रविवार का दिन धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है। इस दिन ईसाई लोग चर्च में जाकर प्रार्थना करते हैं। इस कारण ब्रिटिश लोग रविवार के दिन कामकाज नहीं करते थे। लेकिन भारतीयों को काम करना पड़ता था। इस भेदभाव को देखकर धीरे-धीरे कपड़ा मिल में काम करने वाले भारतीय मजदूरों में भी यह मांग उठने लगी कि उन्हें भी सप्ताह में एक दिन काम से छुट्टी दी जाए। नारायण मेघाजी लोखंडे ज्योतिराव फुले के सत्यशोधक आंदोलन के कार्यकर्ता थे। और कामगार नेता भी थे। अंग्रेजों के समय में हफ्ते के सातों दिन मजदूरों को काम करना पड़ता था। नारायण मेघाजी लोखंडे जी का यह मानना था कि हफ्ते में सात दिन हम अपने परिवार के लिए काम करते हैं। लेकिन जिस समाज की बदौलत हमें नौकरियां मिली है उस समाज की समस्या छुड़ाने के लिए हमें एक दिन छुट्टी मिलनी चाहिए। उसके लिए उन्होंने अंग्रेजों के सामने 1881 में प्रस्ताव रखा, लेकिन अंग्रेज यह प्रस्ताव मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए आखिरकार नारायण मेघाजी लोखंडे को रविवार की छुट्टी के लिए 1881 में आंदोलन करना पड़ा था। आखिरकार 1889 में अंग्रेजों को रविवार की छुट्टी घोषित करनी पड़ी। भारत में श्रमिक आंदोलन के अग्रदूत नारायण मेघाजी लोखंडे का जन्म 1848 में पुणे जिले के कन्हेरसर में एक निर्धन फूल माली जाति के साधारण परिवार में हुआ था। कालांतर में इनका परिवार आजीविका के लिए थाने आ गया। थाणे से ही लोखंडे ने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उच्च शिक्षा की इनकी इच्छा पूर्ण न हो सकी। और गुजर-बसर के लिए उन्होंने रेलवे के डाक विभाग में नौकरी करनी शुरू कर दी। बाद में इन्होने मुंबई टेक्सटाइल मेल में स्टोर कीपर का कार्य कुछ समय के लिए किया। यहीं पर लोखंडे को मजदूरों की दयनीय स्थिति को समझने का अवसर मिला और वे कामगारों की समस्याओं से अवगत हुए और उन्होंने स्वयं भी करीब से यह सब महसूस किया था। इसके बाद लोखंडे ने 1880 में दीनबंधु नामक जनरल के संपादन का दायित्व ग्रहण किया, जिसका निर्वहन उन्होंने अपनी मृत्यु सन 1897 तक बखूबी किया। वह उस जर्नल में प्रकाशित होने वाले अपने तेजस्वी लेखों के माध्यम से मालिकों द्वारा श्रमिकों के शोषण का प्रभावपूर्ण तरीके से चित्रण करना व उसकी आलोचना और उनकी कार्य परिस्थितियों में बदलाव का समर्थन किया करते थे। समाज के उपेक्षित, असुरक्षित व असंगठित वर्गों को संगठित करने का अभियान उन्होंने यहीं से प्रारम्भ किया जो जीवन पर्यंत चलता ही रहा। सन 1884 में बॉम्बे हेड एसोसिएशन नाम से भारत में उन्होंने प्रथम ट्रेड यूनियन की स्थापना की और इसके अध्यक्ष भी रहे। 1881 में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने मजदूरों की मांग व दबाव के कारण कारखाना अधिनियम बनाया। लेकिन मजदूर इस अधिनियम से संतुष्ट नहीं थे। ब्रिटिश सरकार को 1884 में इस अधिनियम में सुधार के लिए जांच आयोग नियुक्त करना पड़ा। इस आयोग के माध्यम से उन्होंने पहली बार अंग्रेजों से कारखाना अधिनियम में बदलाव करने की बात रखी थी, लेकिन उनकी मांगों को सरकार ने खारिज कर दिया था। उसी वर्ष लोखंडे ने देश की पहली श्रमिक सभा का आयोजन किया। इसमें उन्होंने मजदूरों के लिए रविवार के अवकाश की मांग को उठाया। साथ ही भोजन करने के लिए छुट्टी, काम के घंटे निश्चित करने का प्रस्ताव, काम के लिए किसी तरह की दुर्घटना हो जाने की स्थिति में कामगार को सवेतन छुट्टी और दुर्घटना के कारण किसी श्रमिक की मृत्यु हो जाने की स्थिति में उसके आश्रितों को पेंशन मिलने के प्रस्ताव पर गुहार भी पहली बार लगाई गई। इन सभी मांगों को लेकर एक याचिका तैयार की गई। जिसमें 5500 मजदूरों ने हस्ताक्षर किए। जैसे ही याचिका फैक्ट्री कमीशन के सामने पहुंची, मिल मालिकों ने विरोध शुरू कर दिया। उनकी मिलों में काम करने वाले मजदूरों को क्षमता से दोगुना काम देकर प्रताड़ित किए जाने लगा। घर के बच्चों को भी काम में झोंक दिया गया। अपनी याचिका को सरकार के द्वारा नजरअंदाज किये जाते देख लोखंडे ने पूरे देश में आंदोलन छेड़ दिया। जिसमें मिल मजदूरों ने भी उनका साथ दिया। इसके बाद लोखंडे देश के अलग-अलग हिस्सों में गए। और श्रमिकों के लिए सभाएं की। इनमें सबसे अहम सभा 1890 में मुंबई के रेसकोर्स मैदान में आयोजित हुई, जिसमें मुंबई के अतिरिक्त आस-पास के जिलों से आए करीब 10000 मजदूरों ने हिस्सा लिया। इस सभा का असर यह हुआ कि मजदूरों ने मिलों में काम करने से साफ इनकार कर दिया। बाद में सरकार के द्वारा फैक्ट्री श्रम आयोग का गठन किया गया, जिसमें श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करने का अवसर लोखंडे को मिला। लोखंडे के अथक प्रयासों के बाद मजदूरों को भोजन का अवकाश मिलने लगा। काम के घंटे तय हो गए, लेकिन साप्ताहिक अवकाश अभी तय नहीं हुआ। इसके लिए 1890 में एक बार फिर से लोखंडे ने श्रमिक आंदोलन शुरू किया। इस संघर्ष में सबसे ज्यादा महिला कर्मचारियों ने भागीदारी दिखाई थी। तब जाकर 10 जून 1890 को रविवार के दिन भारत को पहला साप्ताहिक अवकाश मिला था। इसके बाद अंग्रेजों ने 1947 को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के कारण अपनी सत्ता समेटनी पड़ी, लेकिन उनका निर्धारित किया गया रविवार अवकाश आज भी दिया जा रहा है। भारत सरकार ने वर्ष 2005 में लोखंडे के नाम से डाक टिकट जारी कर उन्हें सम्मान दिया था। अपने परिवार और देश की सेवा करने हेतु मजदूरों के लिए रविवार का एक दिन की अवकाश की मांग करने वाले लोखंडे के द्वारा1895 में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दंगों के दौरान किये गए कार्यों के लिए राव बहादुर की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। ■

युगांडा से सूडान संकट तक

बदलती भारतीय विदेश नीति

सूडान में सेना और अर्धसैनिक बल के बीच चल रहे भीषण गृहयुद्ध के चलते वहां हालात तो बद से बदतर होते चले जा रहे हैं। ऐसे में वहां फंसे हजारों भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश लाने को लेकर सारा देश चिंतित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सूडान में फंसे भारतीयों को जल्द से जल्द सुरक्षित निकासी के लिए विदेश मंत्रालय के अधिकारियों को निर्देश दे दिए हैं। मतलब यह कि अब सरकार एक्शन मोड में आ गई है।

हरिश्चंद्र शर्मा

यह बदले हुए मजबूत भारत का नया चेहरा है। अब जहां पर भी भारतवंशी या भारतीय संकट में होते हैं, तो भारत सरकार पहले की तरह हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठती। आपको याद ही होगा कि रूस-यूक्रेन जंग के कारण हजारों भारतीय मेडिकल छात्र-छात्रायें यूक्रेन में फंस गए थे। उन्हें भारत सरकार तत्काल सुरक्षित स्वेदश लेकर आई। भारत के हजारों विद्यार्थी यूक्रेन में थे। वे वहां पर मेडिकल, डेंटल, नर्सिंग और दूसरे पेशेवर कोर्स कर रहे थे। ये रूस-यूक्रेन जंग को देखते हुए वहां से निकल कर स्वदेश आना चाहते थे। पहले तो किसी को समझ में ही नहीं आ रहा था कि इतनी अधिक संख्या में यूक्रेन की राजधानी कीव और दूसरे शहरों में पढ़ रहे भारतीय नौजवानों को स्वदेश कैसा लाया जाएगा। पर इच्छा शक्ति हो तो सब कुछ संभव है। यह साबित करके दिखाया गया।

अब अफगानिस्तान में गृहयुद्ध के दिनों की ही बात को जरा याद कर लें। भारतीय वायु सेना और एयर इंडिया के विमान लगातार अफगानिस्तान से भारतीयों को लेकर स्वदेश आते रहे थे। काबुल में जिस तरह के हालात बन गए थे उसमें सारे भारतीयों को लेकर तालिबानी आतंकियों के बीच से लेकर आना कोई छोटी बात नहीं थी। इनको ताजिकिस्तान के रास्ते दिल्ली या देश के अन्य भागों में लाया जा रहा था। कुछ विमान कतर के रास्ते से भी आ रहे थे। उस वक्त भारत के अफगानिस्तान में दर्जनों विकास के बड़े प्रोजेक्ट चल रहे थे, इनमें अफगानिस्तान को नये तरह से खड़ा करने के लिए भारत हर तरह की मदद भी कर रहा था। भारत के हजारों करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट फंस गए थे। पर इन प्रोजेक्ट्स से हजारों भारतीय जुड़े हुए थे। इन्हीं भारतीयों को सुरक्षित निकाला जा रहा था। भारत की तरफ से अफगानिस्तान बांध से लेकर स्कूल, बिजली घर से लेकर सड़कें, काबुल की संसद भवन से लेकर पावर इंफ्रा प्रोजेक्ट्स और हेल्थ सेक्टर आदि समेत न जाने कितनी परियोजनाओं को तैयार किया जा रहा था। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अफगानिस्तान से देश के नागरिकों की सुरक्षित स्वदेश वापसी सुनिश्चित करने और वहां से भारत आने के इच्छुक सिखों व हिंदुओं को भी भारत में शरण देने का अधिकारियों को निर्देश भी दे दिये। अफगानिस्तान की सत्ता पर तालिबान के नियंत्रण के बाद ही आने वाली परिस्थितियों को भांपते हुये भारत सरकार सक्रिय हो गई थी। जाहिर है, ये सब कदम उठाने के बाद भारत सरकार का इकबाल न केवल देश के अन्दर बल्कि विदेशों में भी बुलंद हुआ।

सूडान ने उसके चंदेक सालों के बाद राजधानी के चाणक्यपुरी में अपना दूतावास स्थापित किया। चाणक्यपुरी क्षेत्र में अमेरिका, ब्रिटेन, चीन के साथ सूडान का भी दूतावास सबसे पहले बन गया था। इससे साफ है कि भारत ने सूडान के साथ अपने संबंधों को हमेशा अहमियत दी है। अब भारत यह भी चाहेगा कि वहां पर हालात शांतिपूर्ण हो जाएं और वहां से सारे भारतीयों को सुरक्षित निकाल लिया जाये।

अब आगे बढ़ने से पहले 1972 के दौर में चलते हैं। अब भी बुजुर्ग हो रहे भारतीयों को याद ही होगा कि सन 1972 में अफ्रीकी देश युगांडा के तानाशाह ईदी अमीन ने अपने देश में रहने वाले हजारों भारतीयों को रातों रात आदेश दे दिया था कि वे सभी 90 दिनों में देश को छोड़ दें। हालांकि वे भारतीय ही युगांडा की अर्थव्यवस्था की जान थे। पर सनकी अमीन कभी भी और कुछ भी कर देता था। उसके फैसले से वहां पर दशकों से रहने वाले भारतवंशियों के सामने बड़ा भारी संकट खड़ा हो गया था। तब ब्रिटेन ने उन भारतीयों को अपने यहां शरण दी थी। तब हमारी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सरकार ने उन भारतवंशियों के लिए कुछ नहीं किया था। ऐसा उन्होंने क्यों किया यह लोगों को अचम्भे में डालने वाला था। क्योंकि, वे कोई कमजोर प्रधानमंत्री तो थी नहीं। उस समय बांग्लादेश की आजादी और पाकिस्तान के 93000 सैनिकों के आत्म समर्पण के बाद उनके शोहरत का डंका बज रहा था। लेकिन, उन्होंने कोई ठोस कदम नहीं उठाये। पता नहीं क्यों? भारतीय युगांडा में लुटते-पिटते रहे थे, लेकिन हमने घडियाली आंसू बहाने के सिवा कुछ नहीं किया था। उन भारतीयों को हमसे अभी तक गिला है जो होना भी चाहिये। क्या हम सात समंदर पार जाकर बस गए बहादुर उधमी भारतीयों से सिर्फ यही उम्मीद रखें कि वे भारत में आकर निवेश करें? पर अब भारत चुनौती का सामना करता है। भारत की बदली हुई विदेश नीति के चलते ही हमने टोगो में जेल में बंद पांच भारतीयों को सुरक्षित रिहा करवाया था। ये सब के सब केरल से थे। टोगो पश्चिमी अफ्रीका का एक छोटा सा देश है। भारत सरकार 2015 में यमन में फंसे हजारों भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश लाई थी। वह अपने आप में एक मिसाल है। भारतीय नौसेना के युद्धपोत आईएनएस सुमित्रा से इन्हें पहले जिबूती ले जाया गया था। जिबूती से इन लोगों को चार विमानों से भारत वापस लाया गया। उस समय यमन के हूती विद्रोहियों के खिलाफ सऊदी अरब के नेतृत्व वाली गठबंधन सेना ने सैन्य कार्रवाई शुरू की थी जिसमें हजारों भारतीय फंस गये थे।

अब भारत सरकार के सामने सूडान से भारत के नागरिकों को लाने की बड़ी चुनौती है। प्रधानमंत्री मोदी खुद सूडान से भारतीयों को वापस लाने के काम पर लगातार नजर रख रहे हैं। सूडान में चल रहे गृह युद्ध में कुछ भारतीयों के हताहत होने की भी खबरें हैं। सूडान में 3000 से अधिक भारतीय इस समय फंसे हैं। राजधानी खार्तूम में संघर्ष की वजह से इनकी निकासी में मुश्किलें आ रही हैं। बहरहाल, यह दुखद है कि भारत के मित्र देश सूडान में इतना गंभीर आतंरिक संकट चल रहा है। भारतीय विशेषज्ञ सूडान के वानिकी क्षेत्र के विकास में सन 1910 से सक्रिय हैं। महात्मा गांधी ने 1935 में इंग्लैंड जाते समय पोर्ट सूडान का दौरा किया था और सूडान में बसे भारत वंशियों से मुलाकात की थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू भी 1938 में सूडान गए थे। भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन ने 1953 में पहले सूडानी संसदीय चुनावों का निरीक्षण किया। 1957 में स्थापित सूडानी चुनाव आयोग ने भारतीय चुनाव कानूनों और प्रथाओं से प्रेरणा प्राप्त की। भारत ने फरवरी 1954 में स्थापित सूडानीकरण समिति को वित्तीय सहायता प्रदान की, जिसे स्वतंत्रता के बाद सूडानी सरकार में ब्रिटिश कर्मचारियों की जगह लेने का काम सौंपा गया था। भारत ने मार्च 1955 में खार्तूम में अपना दूतावास खोला। सूडान ने उसके चंदेक सालों के बाद राजधानी के चाणक्यपुरी में अपना दूतावास स्थापित किया। चाणक्यपुरी क्षेत्र में अमेरिका, ब्रिटेन, चीन के साथ सूडान का भी दूतावास सबसे पहले बन गया था। इससे साफ है कि भारत ने सूडान के साथ अपने संबंधों को हमेशा अहमियत दी है। अब भारत यह भी चाहेगा कि वहां पर हालात शांतिपूर्ण हो जाएं और वहां से सारे भारतीयों को सुरक्षित निकाल लिया जाये।

विशेष

दर्जनों आदमखोर बाघ व तेंदुओं का शिकार करते थे जिम कॉर्बेट

जिम की आत्मा में समाया था हिंदुस्तान

महान शिकारी, पर्यावरणविद, फोटोग्राफर और लेखक जिम कार्बेट का निधन 19 अप्रैल को हुआ था। जिम ने दर्जनों खतरनाक बाघ और तेंदुओं का शिकार किया था। लेकिन बाद में जिम ने शिकार छोड़ वन्यजीवों के संरक्षण का प्रयास करने लगे थे।

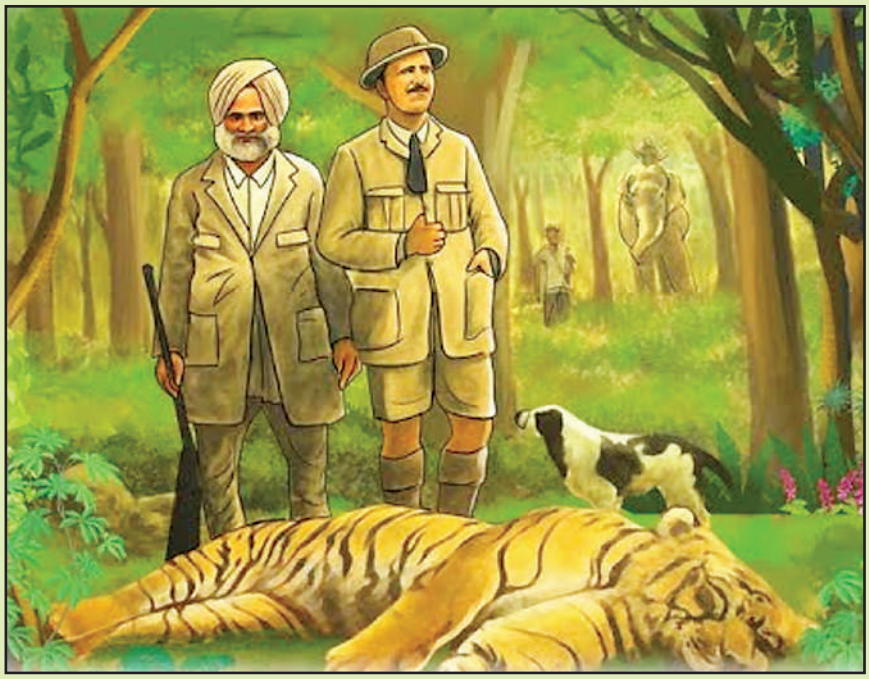

अविनाश वर्मा

आज हम आपको एक ऐसे शख्स के बारे में बताने जा रहे हैं जो भारत का नहीं था, लेकिन उनकी आत्मा में हिंदुस्तान समाया था। उनका बचपन जंगलों में बीता और जवानी बाघों के शिकार में बीती। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि कितने ही आदमखोर बाघों का शिकार करने के बाद भी उसने इंसानों और जानवरों को एक नजर से देखा। यहां हम आपको जिम कॉर्बेट के बारे में बताने जा रहे हैं। आप सभी ने जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क का नाम तो जरूर सुना होगा। लेकिन इस पार्क के पीछे सबसे बड़ा नाम जेम्स एडवर्ट जिम कॉर्बेट का है। देश को पहला नेशनल पार्क जिम कॉर्बेट के प्रयासों से ही मिला था। जिम कॉर्बेट ने दर्जनों आदमखोर बाघ और तेंदुओं का शिकार किया था। आज के दिन यानि की 19 अप्रैल को जिम कॉर्बेट ने हमेशा के लिए दुनियां को अलविदा कह दिया था। आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सिरी के मौके पर जिम कॉर्बेट के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

जिम कॉर्बेट का जन्म 25 जुलाई 1875 में नैनीताल में ही हुआ था। बता दें कि महज 6 साल की उम्र में इनके सिर से पिता का साया उठ गया था। जिम कॉर्बेट का बचपन कालाढूंगी के जंगल में तीर और गुलेल से शिकार करने का अभ्यास करते हुए बीता। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा नैनीताल से पूरी की। हालांकि जिम का मन पढ़ाई में ज्यादा नहीं लगता था। इसी कारण 18-19 साल की उम्र में उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और बंगाल एंड नार्थ वेस्टर्न रेलवे में फ्यूल इंस्पेक्टर के तौर पर भर्ती हो गए। साथ ही जिम को ब्रिटिश इंडियन ऑर्मी में कर्नल की रैंक प्राप्त थी।

फोटोग्राफी का शौक

पहाड़ और जंगल में रहने के कारण जिम जानवरों की आवाज को पहचान लेते थे। उन्हें प्रकृति और पशु-पक्षियों से काफी लगाव था। इसके अलावा उन्हें फोटोग्राफी का भी शौक था। जिम कॉर्बेट साल 1907 से 1938 के बीच लगभग 19 बाघों और 14 तेंदुओं का शिकार किया था। उस दौरान जिम की पहचान एक कुशल शिकारी के तौर पर होती थी। जब भी कुमाऊं में किसी आदमखोर की दहशत फैलती तो वहां जिम को बुलाया जाता था। जिम शिकार के बाद बाघों और अन्य जानवरों के शरीर को अपने घर ले जाते और उनकी जांच-पड़ताल किया करते थे। जिम जंगली जानवरों की खाल को अपने घर पर सजाया करते थे। लेकिन इस बीच उनके हाथों एक ऐसी जानकारी लगी। जिसके बाद न सिर्फ जिम की सोच बदली बल्कि उन्होंने शिकार करना भी छोड़ दिया।

छोड़ दिया शिकार करना

जब एक बार जिम शिकार किए गए बाघों की जांच-पड़ताल कर रहे थे तो देखा कि बाघ के

शरीर में पहले से घाव के कुछ निशान मौजूद हैं। जिसके बाज जिम ने समझा कि इन्हीं घावों और जख्मों के कारण ही जंगली जानवर आदमखोर बन जाते हैं। इस घटना ने जिम की सोच को पूरी तरह से बदल दिया। जिम को समझ आया कि इंसानों को बाघों से नहीं, बल्कि बाघों को इंसानों से सुरक्षा मिलनी चाहिए। इसके बाद जिम ने यूनाइटेड प्रोविंस में अपनी पहचान और सिफारिश लगाकर ऐसे पार्क को बनवाया, जिसमें वन्यजीव सुरक्षित रह सकें। इस पार्क का नाम हेली नेशनल पार्क था। जिसको बाद में नाम बदलकर जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क कर दिया गया।

जिम की किताबें

जिम शब्दों के जादुगर थे। अन्होंने अपनी जिंदगी से जुड़े कई अनुभवों को किताबों में साझा किया। उनकी मुख्य किताब 'माय इंडिया', 'जंगल लोर', 'मैन-ईटर्स ऑफ कुमाऊं', 'जिम कॉर्बेट्स इंडिया' और 'माय कुमाऊं' हैं। बता दें कि जिम की किताब 'जंगल लोर' को ऑटोबायोग्राफी कहा जाता है। जिम कॉर्बेट अपनी बहन मैगी कॉर्बेट के साथ गर्नी हाउस में रहते थे। बाद में गर्नी हाउस को कॉर्बेट म्यूजियम में बदल दिया गया

निधन

हालांकि भारत की आजादी के बाद जिम 1947 में केन्या में रहने लगे थे। वहां पर वह पेड़ों पर झोपड़ी बनाकर रहते थे। 19 अप्रैल 1955 को जिम कॉर्बेट ने आखिरी सांस ली। जिसके बाद उन्हें केन्या की नएरी नदी के पास बने सेंट पीटर चर्च में लॉर्ड बेडेन-पॉवेल की कब्र के पास उन्हें सुपुर्द-ए-खाक किया गया।

कैसे शिकारी से बाघों के मसीहा बने कॉर्बेट?

जिम कॉर्बेट की हमेशा से एक आदत रही थी कि वह सिर्फ आदमखोरों का शिकार ही नहीं करते थे, बल्कि उनके शरीर और स्वभाव पर अध्ययन भी करते थे। इसी तरह जब उन्होंने एक आदमखोर बाघिन के शरीर को गौर से देखा तो पाया कि उसके चेहरे और शरीर पर गोली तथा अन्य हथियारों के निशान मौजूद हैं। इस अध्ययन के बाद कॉर्बेट ये जान पाए कि इस बाघिन के जबड़े पर गोली मारी गई थी। कॉर्बेट ने ये बात समझी कि बेवजह ये जानवर आदमखोर नहीं बनते बल्कि जब इंसान इन पर हमला करता है तो ये इंसानों से चिढ़ने लगते हैं और उनका शिकार शुरू करते हैं। गहन अध्ययन के बाद कॉर्बेट इस नतीजे पर पहुंचे कि इंसानों को बाघ चीतों से बचाने से ज्यादा जरूरी है इन जानवरों को इंसानों से बचाना। इसके बाद से ही कॉर्बेट बाघ और चीतों को बचाने के अभियान में जुट गए। ऐसे ही अध्ययन करते हुए कार्बेट ने लोगों के सामने बाघों और तेंदुए के बीच के फर्क को भी उजागर किया। उन्होंने बताया कि बाग जब आदमखोर हो जाता है तो उसके मन से इंसानों का डर जाता रहता है। यही कारण है कि वे दिन में भी हमला करते हैं। वहीं तेंदुए कितने भी आदमखोर क्यों ना हो जाएं मगर इंसान का डर उनके अंदर बराबर बना रहता है। इसीलिए वे रात के अंधेरे में शिकार करते हैं। यही कारण है कि तेंदुओं के मुकाबले बाघों का शिकार करना ज्यादा आसान होता है। कॉर्बेट के लिए बाघ कोई जानवर नहीं, बल्कि जेंटलमैन था। वह उन्हें बड़े दिल वाला सज्जन कह कर संबोधित करते थे। ■

नई पहल

'नेट जीरो' इनोवेशन वर्चुअल सेंटर स्थापित करेंगे भारत और ब्रिटेन

डॉ. सिंह ने ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा के महत्व पर जोर देते हुए भारत की 'नेट जीरो' यात्रा पर भी चर्चा की। उन्होंने भारत सौर गठबंधन और स्वच्छ ऊर्जा मिशन जैसी पहलों में भारत के नेतृत्व का उल्लेख किया।

मधुसूदन भट्ट

भारत और यूनाइटेड किंगडम मिलकर भारत-यूके 'नेट जीरो' इनोवेशन वर्चुअल सेंटर बनाएंगे। केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान और प्रौद्योगिकी; राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान; पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने ब्रिटेन दौरे में यूके साइंस ऐंड इनोवेशन काउंसिल बैठक को संबोधित करते हुए यह घोषणा की है।

ब्रिटेन में अपने समकक्ष जॉर्ज फ्रीमैन की उपस्थिति में, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारत अपनी असाधारण तकनीकी और नवीन क्षमताओं से संचालित एक आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर तेजी से बढ़ रहा है, जिसे पूरी दुनिया, विशेष रूप से COVID वैक्सीन की सफलता की कहानी के बाद, स्वीकार कर रही है। दोनों नेताओं ने भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग बढ़ाने का आह्वान किया है। मंत्री ने भारत और यूके के बीच घनिष्ठ सहयोग पर जोर दिया, जैसा कि महत्वाकांक्षी 'रोडमैप 2030' से स्पष्ट होता है, जो स्वास्थ्य, जलवायु, व्यापार, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और रक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की रूपरेखा तैयार करता है।

सिंह ने फ्रीमैन को बताया कि मोदी के नेतृत्व में ब्रिटेन भारत का दूसरा सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान और नवाचार भागीदार बन गया है। दोनों मंत्रियों ने भारत-यूके "नेट जीरो" इनोवेशन वर्चुअल सेंटर के प्रस्ताव का समर्थन किया, जो दोनों देशों के हितधारकों के बीच विनिर्माण प्रक्रियाओं और परिवहन प्रणालियों के डीकाबोर्नाइजेशन और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत के रूप में ग्रीन हाइड्रोजन जैसे फोकस क्षेत्रों पर काम करने के लिए सहयोग की सुविधा प्रदान करेगा।

डॉ. सिंह ने ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा के महत्व पर जोर देते हुए भारत की 'नेट जीरो' यात्रा पर भी चर्चा की। उन्होंने भारत सौर गठबंधन और स्वच्छ ऊर्जा मिशन जैसी पहलों में भारत के नेतृत्व का उल्लेख किया। इस अवसर पर, डॉ. सिंह ने भारत के भविष्य को आकार देने में वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचारों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया है। ■

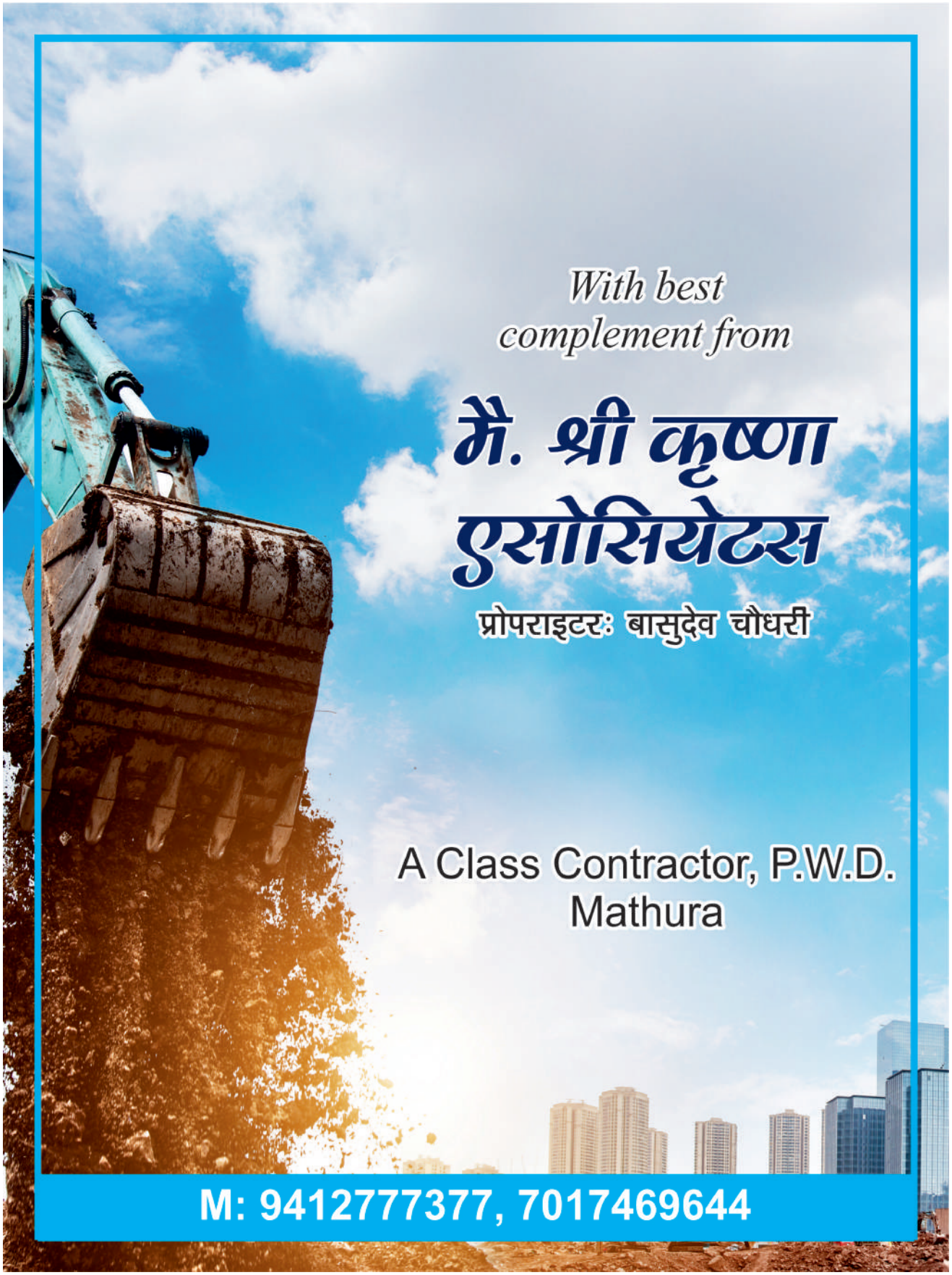
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

62वां जन्मोत्सव

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार संत आचार्य महाश्रमण

भारत की भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लेकर इस धरा का गौरव बढ़ाया, उसी आलोकधर्मी परंपरा का विस्तार है आचार्य महाश्रमण। महावीर, बुद्ध, गांधी, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने स्वयं को ऊपर उठाया, महनीय एवं कठोर साधना की, अनुभव प्राप्त किया और अपने अनुभव वैभव के आधार पर दुनिया को शांति, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द, अयुद्ध एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का सन्देश दिया। अतीत की धुंधली होती आध्यात्मिक परंपरा को आचार्य महाश्रमण एक नई दृष्टि प्रदान की हैं। यह नई दृष्टि एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात कही जा सकती है। विशेषत: उनकी विनम्रता और समर्पणभाव उनकी आध्यात्मिकता को ऊंचाई प्रदत्त रह रहे हैं।

बृजेश शर्मा

भगवान राम के प्रति हनुमान की जैसी भक्ति और समर्पण रहा है, वैसा ही समर्पण आचार्य महाश्रमण का अपने गुरु आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति रहा है। 29 अप्रैल 2023 यानी वैशाख शुक्ला नवमी को आचार्य श्री महाश्रमण सूरत में 62वां जन्मोत्सव मनायेंगे। आचार्य महाश्रमण निरुपाधिक व्यक्तित्व का परिचायक बन गया और इस वैशिष्ट्य का राज है उनका प्रबल पुरुषार्थ, उनका समर्पण, अटल संकल्प, अखंड विश्वास और ध्येय निष्ठा। सटीक ही कहा है कि जब प्रकृति को कोई महान कार्य सम्पन्न कराना होता है तो वह उसको करने के लिये एक प्रतिभा का निर्माण करती है। निश्चित ही आचार्य महाश्रमण भी किसी महान कार्य की निष्पत्ति के लिये ही बने हैं। ऐसे ही अनेकानेक महान कार्य उनके जीवन से जुड़े हैं, उनमें एक विशिष्ट उपक्रम बना था अहिंसा यात्रा। आचार्य महाश्रमण ने अपनी आठ वर्षीय इस ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं विलक्षण यात्रा में उन्नीस राज्यों एवं भारत सहित तीन पड़ोसी देशों की करीब सत्तर हजार किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए अहिंसा और शांति का पैगाम फैलाया। करीब एक करोड़ लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया। नेपाल में भूकम्प, कोरोना की विषम परिस्थितियों में इस यात्रा का नक्सलवादी एवं माओवादी क्षेत्रों में पहुंचना आचार्य महाश्रमण के दृढ़ संकल्प, मजबूत मनोबल एवं आत्मबल का परिचायक बना था।

आचार्य महाश्रमण का देश के सुदूर क्षेत्रों-नेपाल एवं भूटान जैसे पड़ौसी राष्ट्रों सहित आसाम, बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि में अहिंसा यात्रा करना और उसमें अहिंसा पर विशेष जोर दिया जाना अहिंसा की स्थापना के लिये सार्थक सिद्ध हुआ है। क्योंकि आज देश एवं दुनिया हिंसा एवं युद्ध के महाप्रलय से भयभीत और आतंकित है। जातीय उन्माद, सांप्रदायिक विद्वेष और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव- ऐसे कारण हैं जो हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के लिए आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा के विशिष्ट अभियान के माध्यम से प्रयत्नशील बने थे। भारत की माटी में पदयात्राओं का अनूठा इतिहास रहा है। असत्य पर सत्य की विजय हेतु मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा की हुई लंका की ऐतिहासिक यात्रा हो अथवा एक मुट्ठी भर नमक से पूरा ब्रिटिश साम्राज्य हिला देने वाला 1930 का डाण्डी कूच, बाबा आम्टे की भारत जोड़ो यात्रा हो अथवा राष्ट्रीय अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव और अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व भाव से समर्पित एकता यात्रा, यात्रा के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भारतीय जीवन में पैदल यात्रा को जन-सम्पर्क का सशक्त माध्यम स्वीकारा गया है। ये पैदल यात्राएं सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक यथार्थ से सीधा साक्षात्कार करती हैं। लोक चेतना को उद्बुद्ध कर उसे युगानुकूल मोड़ देती हैं। भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में अनेक प्रदेशों में विहार कर वहां के जनमानस में अध्यात्म के बीज बोये थे। लेकिन इन यात्राओं की श्रृंखला में आचार्य श्री महाश्रमण ने नये स्तस्तिक उकेरे हैं। समस्त पूर्वाचार्यों से एक विशेष कालखंड में सर्वाधिक लम्बी पदयात्रा करने के फलस्वरूप आचार्य श्री महाश्रमण को "पांव-पांव चलने वाला सूरज" की संज्ञा से अभिहित किया जाने लगा है। आचार्य महाश्रमण का बारह वर्ष के मुनि के रूप में लाडनूं में साक्षात्कार एक विलक्षण और यादगार घटना रही है। लेकिन उसके साढ़े चार दशक बाद उनके गहन विचारों से मेरा परिचय और भी विलक्षण घटना है क्योंकि उनके विचारों से मेरी मन-वीणा के तार झंकृत हुए। जीवन के छोटे-छोटे मसलों पर जब वे अपनी पारदर्शी नजर की रोशनी डालते हैं तो यूं लगता है जैसे कुहासे से भरी हुई राह पर सूरज की किरणें फैल गई। मन की बदलियां दूर हो जाती हैं और निरभ्र आकाश उदित हो गया है। आचार्य महाश्रमण का मानना है कि जिस राष्ट्र ने अपनी संस्कृति को भुला दिया, वह राष्ट्र वास्तव में एक जीवित और जागृत राष्ट्र नहीं हो सकता। उनकी दृष्टि में भारतीय संस्कृति का अर्थ है- ऊंची संस्कृति, त्याग की संस्कृति, संयम की संस्कृति और अध्यात्म की संस्कृति है। वे भारतीय संस्कृति की गरिमा से अभिभूत हैं, अतः देशवासियों को अनेक बार भारत

के विराट सांस्कृतिक मूल्यों को अवगति देते रहते हैं। बड़ी अपेक्षा यह है कि भारत अपना मूल्यांकन करना सीखे और खोई प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित करे। इसी व्यापक एवं गहन चिंतन के आधार पर उनका विश्वास है कि सही अर्थ में अगर कोई संसार का प्रतिनिधित्व कर सकता है तो भारत ही कर सकता है, क्योंकि भारत की आत्मा में आज भी अहिंसा की प्राणप्रतिष्ठा है। मैं मानता हूं कि यदि भारत आध्यात्मिकता को विस्मृत कर देगा तो अपनी मौत मरेगा। आचार्य श्री महाश्रमण का चिंतन है कि भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन ही नहीं, समृद्ध और जीवंत भी है, अतः किसी भी राष्ट्रीय समस्या का हल हमें अपने सांस्कृतिक तत्वों के द्वारा ही करना चाहिए, अन्यथा मानसिक दासता हमें अपनी संस्कृति के प्रति उतनी गौरवशील नहीं रहने देगी। भारत में सांस्कृतिक एकता बनी रही, इसका कारण बताते हुए राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा- बाहर से आने वाली अन्य संस्कृतियों को भी भारतीय संस्कृति ने अपनी समन्वय शक्ति के बल पर आत्मसात् कर लिया, इसलिए उसका प्रवाह बना रहा। उसी भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्री महाश्रमण के वार्तमानिक अनुभव प्रेरणादायी, सटीक एवं मार्मिक बन पड़े हैं। भारत कर्मभूमि है, भोगभूमि नहीं। यहां जो सभ्यता विकसित हुई, वह दुनिया में किसी से पराजित नहीं होगी। यदि हमने पश्चिमी सभ्यता की नकल करने की कोशिश की तो हम बरबाद हो जायेंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि उसमें जो अच्छा है और जिसे हम हजम कर सकते हैं, उसे अंगीकार न करें। अचेतन के संबंध में समझने के लिए मैंने आचार्य महाश्रमण को पढ़ना शुरू किया। आचार्य महाश्रमण जिस प्रकार से अचेतन और उसके प्रतिबिम्बों के संबंध में समझाते हैं, बातें गहरे में बैठ जाती हैं। स्वल्प आचार्य शासना में आचार्य महाश्रमण ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। कृष्ण, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ ही साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतों-आदि शंकराचार्य, कबीर, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा से ऐसे जीवन मूल्यों को चुन-चुनकर युग की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य उन्होंने किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके प्रवचनों-विचारों से अस्पर्शित रहा हो। योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला है। साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, हिंसा, जातीयता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, भ्रूणहत्या और महंगाई के विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी अपनी क्रांतिकारी जीवन-दृष्टि प्रदत्त की है। जब उनकी उत्तराध्ययन और श्रीमद् भगवद गीता पर आधारित प्रवचन श्रृंखला सामने आई, उसने आध्यात्मिक जगत में एक अभिनव क्रांति का सूत्रपात किया है। एक जैनाचार्य द्वारा उत्तराध्ययन की भांति सनातन परम्परा के श्रद्धास्पद ग्रंथ गीता की भी अधिकार के साथ सटीक व्याख्या करना न केवल आश्चर्यजनक है बल्कि प्रेरक भी है। इसीलिये तो आचार्य महाश्रमण मानवता के मसीहा के रूप में जन-जन के बीच लोकप्रिय एवं आदरास्पद है। वे एक ऐसे संत हैं, जिनके लिये पंथ और ग्रंथ का भेद बाधक नहीं बनता। आपके कार्यक्रम, विचार एवं प्रवचन सर्वजनहिताय होते हैं। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय की जनता आपके जीवन-दर्शन एवं व्यक्तित्व से लाभान्वित होती रही है। ■

साइबर अपराध मोबाइल मधुर फांस

दुनिया भर में पैर पसार रहे साइबर अपराध का नया वेरिएंट सेक्सटॉर्शन या रोमांस फ्रॉड हाल में भारत में तेजी से हजारों लोगों से करोड़ों ऐंठने और खुदकशी का कारण बना, लेकिन न सिर्फ हमारे कानून नाकाफी, बल्कि पुलिस और सरकारी उदासीनता भी इस अपराध में बढ़ोतरी की वजह

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के 2020 के आंकड़ों में जबरन वसूली की श्रेणी में

2,440

साइबर अपराध दर्ज किए गए

दुनिया भर में आफत

सेक्सटॉर्शन से संबंधित मामलों में न केवल भारत में तेजी देखी जा रही है, बल्कि दुनिया भर में मामले बढ़ रहे हैं। सितंबर 2022 में सेक्सटॉर्शन के बढ़ते मामलों का संज्ञान लेकर इंटरपोल के साइबर क्राइम डिवीजन और हांगकांग पुलिस की संयुक्त जांच में एक अंतरराष्ट्रीय सेक्सटॉर्शन रिंग का पदार्फाश हुआ। दिसंबर 2022 में अमेरिका के न्याय विभाग ने सार्वजनिक सुरक्षा चेतावनी जारी की कि कम से कम 3,000 नाबालिग सेक्सटॉर्शन का शिकार हो चुके हैं, जो पिछले वर्षों की तुलना में करीब डेढ़ गुना ज्यादा है। इसके अलावा, अमेरिका में फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन भी सेक्सटॉर्शन के मामलों को लेकर लोगों को चेता चुका है। एफबीआई ने सेक्सटॉर्शन के बारे में सूचना दी कि 2021 में उसके आंतरिक शिकायत केंद्र को 18,000 शिकायतें प्राप्त हुईं। अमेरिका और यूरोप ही नहीं, अफ्रीका और पश्चिम एशिया में भी सेक्सटॉर्शन महामारी का रूप ले चुका है। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के मुताबिक लेबनान में 23 फीसदी लोग इसके शिकार हो चुके हैं, जबकि फिलस्तीन और जॉर्डन में यह आंकड़ा क्रमशः 21 फीसदी और 13 फीसदी है।

राजीन नयन चतुर्वेदी

अमेरिका के वर्जिनिया में 2022 में एक युगल मारिया और स्टीफन पीक ने सेक्सटॉर्शनः द हिडन पैन्डेमिक नामक डॉक्यूमेंट्री बनाई। डॉक्यूमेंट्री ने सभी का ध्यान खींचा। अलबत्ता, वे दोनों सेक्सटॉर्शन से वाकिफ नहीं थे। दरअसल उनका इरादा तो मानव तस्करी पर डॉक्यूमेंट्री बनाने का था, लेकिन उन्होंने महसूस किया कि किसी अन्य खतरे से सेक्सटॉर्शन अधिक जघन्य है। मारिया सेक्स्टॉर्शन को ऐसे परिभाषित करती हैं, इसमें अश्लील फोटो या वीडियो को रिकॉर्ड करके किसी को ब्लैकमेल किया जाता है और मकसद पैसे ऐंठना होता है। डॉक्यूमेंट्री में अमेरिका में सेक्सटॉर्शन का शिकार हुए लोगों की आपबीती दिखाई गई है। इसके मुताबिक, अमेरिका में हर चार में से एक युवा सेक्सटॉर्शन का शिकार हो चुका है। भारत में भी स्थिति कम भयावह नहीं है। देश में साइबर अपराध बढ़ रहे हैं और इसी का एक बाय-प्रोडक्ट सेक्सटॉर्शन भी है, जो इधर हर हदें पार करने लगा है। आलम यह है कि सेक्सटॉर्शन के मामलों में न केवल अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है, बल्कि आम आदमी से लेकर नेता, अभिनेता, बिजनेसमैन हर किसी को अपराधी अपने जाल में फंसा चुके हैं। बहुतों से गाढ़ी कमाई, कई से मोटी रकम ऐंठी जा चुकी है, तो कुछ इज्जत-आबरू की खातिर अपनी जान ले बैठे हैं। उत्तर प्रदेश पुलिस के एक साइबर क्राइम विशेषज्ञ के अनुसार, सेक्सटॉर्शन के मामलों की संख्या में काफी उछाल देखी गई है। पुलिस अधिकारी ने नाम न छापने के शर्त पर बताया, हर राज्य में लगभग रोजाना 100-200 शिकायतें

आ रही हैं। यह संख्या और अधिक हो सकती है क्योंकि अधिकतर मामलों में रिपोर्ट नहीं की जाती है। राजस्थान पुलिस के मुख्य साइबर सलाहकार मुकेश चौधरी की भी यही राय है। उन्होंने आउटलुक से कहा, एक दिन में कितने लोग सेक्सटॉर्शन का शिकार होते हैं यह बताना मुश्किल है क्योंकि ज्यादातर मामले रिपोर्ट नहीं होते हैं। मेरे हिसाब से 95 प्रतिशत मामले रिपोर्ट नहीं होते हैं। अंदाजन कहूं तो एक स्टेट में रोजाना 100-200 लोग इसके शिकार हो जाते हैं। दिल्ली में रहने वाले बिहार के निवासी प्रेम सिंह (बदला हुआ नाम) भी सेक्सटॉर्शन का शिकार हो चुके हैं। उन्होंने अपनी आपबीती आउटलुक से साझा की, मैं इसका शिकार हो चुका हूं, हालांकि जैसे ही मुझे गलती की आशंका हुई मैं पुलिस में शिकायत दर्ज कराने गया। दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी थाने में पहले तो पुलिस अधिकारी ने आनाकानी की। मेरे जोर देने पर जैसे-तैसे शिकायत दर्ज हुई लेकिन छह महीने बीतने के बाद भी मुझे कोई जवाब नहीं आया है। पुलिस ऐसा ही करती है। कागज पर शिकायत लिखती है और कूड़े में डाल देती है। वे कहते हैं कि यही वजह है कि अपराधियों का मनोबल बढ़ा हुआ है और ऐसे मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। प्रेम सिंह की कहानी तो बस एक है। उनकी यह दिलेरी और जागरूकता ही थी कि वे पुलिस तक पहुंच गए, लेकिन ऐसी ढेरों कहानियां हैं जहां लोग इसका शिकार होने के बाद सुसाइड तक कर लेते हैं। हजारों लोग अपराधियों की धुन पर नाचते हैं और इज्जत बचाने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई उन्हें सौंप देते हैं। उसके बाद भी उन्हें राहत नाम मात्र की ही मिलती है।

असल में, पुलिस के उदासीन रवैये से इसे फलने-फूलने ज्यादा मौका मिला है। सरकारी आंकड़े स्थिति की गंभीरता को दर्शाते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के 2020 के आंकड़ों में जबरन वसूली की श्रेणी में 2,440 साइबर अपराध दर्ज किए गए अलबत्ता सही संख्या बहुत अधिक हो सकती है। फिर भी पुलिस और सरकार की अनदेखी बनी हुई है। इंटरनेशनल कमीशन ऑन साइबर सिक्योरिटी लॉ के संस्थापक तथा अध्यक्ष पवन दुग्गल ने आउटलुक से कहा, भारत का कानून सेक्सटॉर्शन से निपटने में पूरी तरह सक्षम नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी कानून-2000 की धारा-67 को ही सेक्सटॉर्शन पर लागू किया जाता है, जो नाकाफी है। मामला कोर्ट में जाए तब भी शायद ज्यादा राहत न मिले क्योंकि कोर्ट में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य दिखाना होता है, जो बड़ी चुनौती है। ऐसे मामलों में पुलिस का रवैया भी बहुत ही ढीला होता है। ज्यादातर मामलों में पुलिस केस दर्ज नहीं करती है या केस दर्ज भी करती है तो कमजोर धाराएं लगाती है।

जान पर बन रही ठगी

अक्टूबर 2022 में पुणे के पिंपरी चिंचवाड़ इलाके में एक शख्स ने सेक्सटॉर्शन का गठजोड़ चलाने वाले जालसाजों के झांसे में आकर अपनी जान दे दी थी। उसकी जेब से बरामद हुए सुसाइड नोट में लिखा था कि दो महिलाएं उसे बार-बार फोन कर रंगदारी मांग रही थीं। इसी तरह, गुरुग्राम में एक 38 वर्षीय व्यक्ति ने दिसंबर 2022 में अपराधियों को पैसे न देने के कारण उनकी धमकियों से डरकर अपना जीवन खत्म कर डाला। सूची अंतहीन है। कई लोग फंसकर करोड़ों रुपये गंवा चुके हैं। बड़ी उम्र के लोग हों या किशोर, सभी इसके शिकार बन चुके हैं। 2023 की शुरूआत में ही खबर आई कि गुजरात का एक 68 वर्षीय व्यक्ति सेक्सटॉर्शन के जाल में फंस कर 2.7 करोड़ रुपये गंवा चुका है। दिल्ली का एक कारोबारी भी डेटिंग ऐप टिंडर के जरिये सेक्सटॉर्शन का शिकार हुआ और बदले में करीब 1.5 लाख रुपये गंवा बैठा। बड़े शहरों में ही नहीं, छोटे शहरों में भी यही हाल है। पवन दुग्गल कहते हैं, अगर मैं बड़े शहरों की बात करूं तो 25-30 प्रतिशत लोग सेक्सटॉर्शन का शिकार हो जाते हैं, लेकिन टियर-3 शहरों में यह आंकड़ा 35-40 प्रतिशत तक पहुंच जाता जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा 10-15 प्रतिशत है। बिहार के मुजफ्फरपुर के कटरा रजिस्ट्री कारखाने में कार्य करने वाले रवि चौरसिया भी इसका शिकार हो चुके हैं। पुलिस के अनुसार, वे ऑनलाइन किसी लड़की से बात करते थे, जो पाकिस्तान की आइएसआइ एजेंट थी। ब्लैकमेलिंग से बचने के लिए वे उस लड़की से रक्षा मंत्रालय के कई गोपनीय दस्तावेज भी साझा कर चुके हैं। इसके पीछे भी सेक्सटॉर्शन का एंगल ही सामने आया है।

भारतीय कानून नाकाफी

भारत में सेक्सटॉर्शन के मामलों में वृद्धि की एक वजह इससे संबंधित कानूनों में मौजूद कमियों को माना जाता है। विशेषज्ञों और विश्लेषकों का मानना है कि सेक्सटॉर्शन से निपटने के लिए भारतीय कानून असंगत है। पवन दुग्गल कहते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी कानून, 2000 की धारा 67 एक तो जमानती धारा है, इसलिए अपराधियों के मन में कोई डर नहीं रहता है। विशेषज्ञों का मानना है कि देश में बच्चों और महिलाओं को ध्यान में रखकर नया कानून लाना चाहिए। पवन दुग्गल कहते हैं, सेक्सटॉर्शन को गैर-जमानती अपराध बनाया जाना चाहिए और कम से कम 5 से 7 साल की सजा का प्रावधान होना चाहिए। यही नहीं, वाट्सऐप, फेसबुक, इंस्ट्राग्राम जैसे ऑनलाइन सर्विस प्रोवाइडरों के लिए एक पैमाना तय करने की आवश्यकता है जिससे एक्सटॉर्शन को बढ़ावा न मिले और उन पर निगरानी रखी जा सके। कई विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को अमेरिका से सीख लेनी चाहिए, जहां महिलाओं और बच्चों को ध्यान में रखकर कई कानूनी प्रावधान बनाए गए हैं। भारतीय सुप्रीम कोर्ट में एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड कृतिका अग्रवाल ने आउटलुक से कहा, सेक्सटॉर्शन से निपटने के लिए एक व्यापक कानून की जरूरत है। आइपीसी की विभिन्न धाराओं में इसे अपराध के रूप में परिभाषित करना होगा। इसके अलावा, लोगों को ठगे जाने से रोकने के लिए इन नए प्रकार के अपराधों या बुराइयों के बारे में जागरूकता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। कई साल पहले सरकार ने बड़े पैमाने पर उपभोक्ता जागरूकता अभियान चलाया था। इसी तरह, इसके खिलाफ सरकारी जागरूकता अभियान जरूरी है। गौरतलब है कि एक समय देश में लोग ओटीपी-फ्रॉड के शिकार होते थे। लोगों ने करोड़ों-करोड़ रुपये गंवाए हैं। इस मामले में भी सरकार को जागरूकता अभियान चलाना पड़ा था। इसका असर भी हुआ और आज क्राइम पहले की तुलना में काफी कम हो गया है। इससे पहले कि सेक्सटॉर्शन के जाल में फंसकर और लोग अपनी जान गंवाएं, सरकार को इसे बड़ी जालसाजी मानकर जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है।

फंस जाएं तो क्या करें?

अगर आपको लग रहा है कि आप सेक्सटॉर्शन के शिकार हो गए हैं तो भूल कर भी पैसे न दें क्योंकि यह एक ट्रैप है। सेक्सटॉर्शन का शिकार हो चुके प्रयागराज के रहने वाले गणेश सिंह बताते हैं, मैंने पैसे नहीं दिए। मुझे दर्जनों कॉल आए और मैं हर कॉल को ब्लॉक करता रहा। सभी सोशल मीडिया एकाउंट को लॉक कर दिया था। एक हफ्ते तक कॉल का सिलसिला चला और अब मुझे कोई कॉल नहीं आता है। गणेश यह भी बताते हैं कि मैं कई ऐसे लोगों को जानता हूं जिन्होंने शुरू में 5000 रुपये दिए और बाद में उगाही और बढ़ती गई। सभी लोग अंत में अपराधियों से संपर्क तोड़ लेते हैं। तो शुरूआत में आप उन्हें कोई पैसा चुकाएं और उसके बाद परेशान होकर उनसे संपर्क खत्म करें, इससे अच्छा है कि आप शुरूआत में ही उनसे कांटेक्ट खत्म कर लें। अधितकर मामलों में अपराधी एक हफ्ते बाद परेशान करना छोड़ देते हैं क्योंकि अगला टारगेट आ चुका होता है। मुकेश चौधरी भी यही सलाह देते हैं कि अगर अपराधी से आपकी बातचीत फेसबुक पर हुई है तो आप उसे वहां ब्लॉक कर दें और फेसबुक पर अपनी प्रोफाइल लॉक कर दें। अगर आपको ज्यादा डर है तो फेसबुक से अपना एकाउंट एक महीने के लिए डिसेबल कर लें। भूलकर भी उनसे गाली-गलौज न करें क्योंकि वे आपको पर्सनल ले लेंगे और हो सकता है कि बड़ा डैमेज कर दें। ■

लोकसभा चुनाव क्या मुद्दा बनेगा राम मंदिर?

आगामी सितंबर के महीने में राजधानी में जी-20 शिखर सम्मेलन के फौरन बाद से ही देश में 2024 के लोकसभा चुनावों की हलचल तेज होने लगेगी। माना जा रहा है कि लोकसभा चुनाव से पहले राम मंदिर के द्वार दुनिया भर के राम भक्तों के लिए खोल दिए जाएंगे। इससे दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि स्थानों पर पर्यटन भी तेजी से बढ़ेगा, इसलिए यह सवाल तो पूछा ही जाएगा कि क्या अगले आम चुनावों में राम मंदिर चुनावी मुद्दा बनेगा?

पवन आगरी

जिस तरह से भाजपा राम मंदिर को लेकर जनता के बीच जा रही है उससे तो यह स्पष्ट ही है कि पार्टी इसे अपनी उपलब्धि के तौर पर पेश करेगी और करे भी क्यों नहीं जो काम 500 वर्षों के समय-समय पर हुये भयंकर रक्तपातों और लाखों राम भक्तों की कुर्बानियों से भी हासिल न हो सका, वह भाजपा के शासन में आसानी से हो भी गया और किसी को चूं -चपड़ तक करने की हिम्मत तक न हुई । 1980 में अस्तित्व में आने के बाद से ही राम मंदिर भाजपा की राजनीति का एक मुख्य आधार रहा है। अगर बीजेपी इस चुनाव में सत्ता बरकरार रखने में सफल रहती है, तो देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद नरेंद्र मोदी जी ही ऐसे पहले राजनेता होंगे जिनकी अगुवाई में कोई पार्टी लगातार तीन बार सत्ता हासिल करने में कामयाब होगी। वहीं कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों के लिए 2024 का चुनाव एक तरह से अस्तित्व की अंतिम लड़ाई सरीखा है। इसीलिए शायद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ खुद नजर रख रहे हैं कि राम मंदिर का निर्माण समय पर पूरा हो जाए।

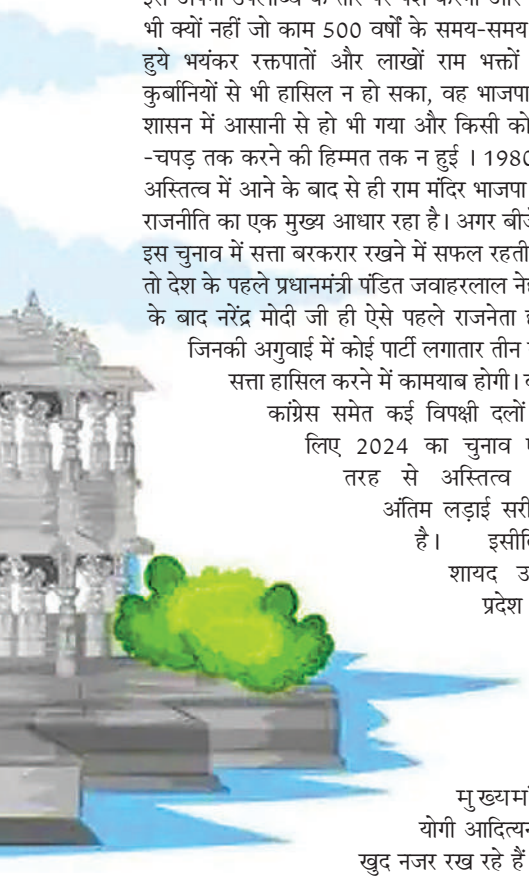

बेशक,आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति के बीच राम मंदिर का मुद्दा लोक सभा चुनाव 2024 के केंद्र में रहने वाला है। याद करें कि भाजपा ने एक दौर में राम और रोटी का नारा दिया था। आज यह नारा आगे बढ़कर सबका साथ, सबका विकास तक पहुंच गया है। पार्टी विद डिफरेंस के साथ आगे बढ़ी भाजपा आज न सिर्फ भारतीय राजनीति के केंद्र में है, बल्कि बीते एक दशक में उसने भारतीय राजनीति के सूर्य को दक्षिणायन कर दिया है। डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे प्रखर समाजवादी चिंतक तक ने राम के आदर्श और लोक स्वीकार को महत्व दिया था। वे कहते थे, भारत के तो कण-कण में राम बसे हैं। भारत की राम के बिना तो कल्पना करना भी असंभव है। सारा भारत राम को अपना अराध्य और पूजनीय मानता है। लोहिया जी यह भी कहते थे कि भारत के तीन सबसे बड़े पौराणिक नाम - राम, कृष्ण और शिव ही हैं। उनके काम के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी प्रायः सभी को, कम से कम दो में एक भारतीय को तो होगी ही। उनके विचार व कर्म, या उन्होंने कौन-से शब्द कब कहे, उसे विस्तारपूर्वक दस में एक तो जानता ही होगा। कभी सोचिए, कि एक दिन में भारत में कितनी बार यहां की जनता प्रभु राम का नाम लेती है। ये आंकड़ा तो अरबों - खरबों में पहुंच जाएगा। भारत राम का नाम तो लेता ही रहेगा। राम का नाम भारत असंख्य वर्षों से ले रहा है और लेता ही रहेगा। मोहम्मद इकबाल ने श्रीराम की शान में 1908 में एक मशहूर कविता लिखी थी। वे भगवान राम को राम-ए-हिंद कहते हैं। वे इस कविता में यह भी लिखते हैं: है राम के वजूद पर हिन्दोस्ताँ को नाज, अहले नजर समझते हैं उनको इमामे हिन्दकयानी भारत को गर्व है कि श्रीराम ने भारत में जन्म लिया और सभी ज्ञानी लोग उन्हें भारत का इमाम अथवा आध्यात्मिक गुरु मानते हैं। गांधी जी भारत में राम राज्य की स्थापना देखना चाहते थे। वे हिन्दू धर्म के भगवान नहीं हैं। बल्कि, वे भारत की मिट्टी की सांस्कृतिक धरोहर हैं और इस साँझा धरोहर को बाँटना न मुमकिन है न ही समझदारी। खैर, राम मंदिर निर्माण के साथ ही भारत में अगले वर्ष से नए युग का सूत्रपात होगा। जिसका असर भारतीय राजनीति पर पड़ेगा ही। इसकी आहट विभिन्न राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भी महसूस की गई। अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण भाजपा के लिए अपने इतिहास के सबसे गौरवशाली क्षण होंगे।

> **पाकिस्तान अल्पसंख्यक हिन्दुओं, सिखों, इसाइयों पर जो अत्याचार कर रहा है उसपर अबतक चुप्पी क्यों साध रखी है। खैर, यह मान कर चलिए कि 2024 के लोकसभा चुनावों में राम मंदिर फिर से बीजेपी की चुनावी कैंपेन के केन्द्र में होगा और 2024 में नरेन्द्र मोदी की सरकार तीसरी बार बनवाने में सफल होता दिख रहा है।**

याद करिए 1980 का वह दशक। जब देश में कम समय के लिए बनी पहली गैर कांग्रेसी सरकार की यादों के साथ दशक का आगाज हुआ। इस दशक से देश की राजनीति के इतिहास में यह मुद्दा बड़े महत्व का रहा। 1984 चुनाव में भाजपा को बहुत कम सफलता मिली, लेकिन राम मंदिर निर्माण को लेकर अपनी संकल्पना के प्रति पार्टी वचनबद्ध रही। 1989 के पालमपुर सम्मेलन में पार्टी ने तय किया कि उसका मुख्य राजनीतिक एजेंडा राम जन्मभूमि को मुक्त करवाकर भव्य मंदिर बनवाना होगा। वरीय नेता और पूर्व अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने अगले ही साल रथयात्रा शुरू की। राजनीतिक दृष्टिकोण से यह कालजयी घटना थी। 9 नवंबर, 1989 को शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया था। इसके कुछ दिनों बाद जब लोकसभा चुनाव हुए, तो भगवा पार्टी की संख्या 85 हो गई, और इसने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। 1990 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के आदेश पर कारसेवकों पर फायरिंग की गई। इस घटना से पूरा देश मर्माहत हो गया। प्रत्येक राष्ट्र भक्त देशवासी को गहरा धक्का लगा। 1991 में उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री बनने से भाजपा ने राम मंदिर मुद्दे को और जोर शोर से उठाया। 1996 और 1999 के चुनावों में भाजपा को खासी कामयाबी मिलती दिखी और देश में 1999 में पहली बार पूर्ण कार्यकाल वाली भाजपा सरकार बनी। अबतक मंदिर के लिए कानूनी लड़ाई भी सही ढंग से लड़ी जाने लगी थी। यह निश्चित तौर पर मानिए राम मंदिर का निर्माण पूरा होने को बीजेपी चुनावी मुद्दा बनाएगी। इसका असर सारे भारत पर होगा। इस बारे में कोई बहस नहीं हो सकती। बीजेपी धारा 370 जैसे सारे काले कानूनों को हटाने का भी क्रेडिट लेना चाहेगी। इस बीच, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी सरकार के आला अफसरों को उम्मीद है कि मंदिर खुलने पर तीर्थयात्रियों की संख्या प्रतिदिन लगभग एक लाख भक्तों तक बढ़ जाएगी। गृहमंत्री अमित शाह ने त्रिपुरा दौरे पर अपने संबोधन में 1 जनवरी 2024 को अयोध्या में गगनचुंबी राममंदिर तैयार हो जाने की बात कही। इस बीच, बीजेपी अगले लोकसभा चुनाव के समय असादुदीन ओवैसी और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को देश के सामने बेनकाब करेगी। पर्सनल लॉ बोर्ड ने कहा था की राम मंदिर को उसी प्रकार से बदल देंगे जैसे तुर्की की हगिया सोफिया मस्जिद के साथ हुआ। यह धमकाने वाला लहजा कभी भी हिन्दू बहुल देश स्वीकार नहीं करेगा। क्या इन्होंने तब कभी आपत्ति जताई थी जब देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दशकों से इफ्तार पार्टियों का आयोजन करते थे? औवेसी और दूसरे तमाम कथित सेक्युलरवादी अल्पसंख्यकों के हितों की तो खूब बातें करते हैं। उन्हें उनके अधिकार बिल्कुल ही मिलने भी चाहिए। पर ये सब कश्मीर में हिन्दू पंडितों के अधिकार देने के मसले पर चुप क्यों हो गए थे। पाकिस्तान अल्पसंख्यक हिन्दुओं, सिखों, इसाइयों पर जो अत्याचार कर रहा है उसपर अबतक चुप्पी क्यों साध रखी है खैर, यह मान कर चलिए कि 2024 के लोकसभा चुनावों में राम मंदिर फिर से बीजेपी की चुनावी कैंपेन के केन्द्र में होगा और 2024 में नरेन्द्र मोदी की सरकार तीसरी बार बनवाने में सफल होता दिख रहा है। ■

कश्मीर में आतंक नहीं, शांति का हो उजाला

कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। यहां के बर्फ से ढके पहाड़ और खूबसूरत झीलें पर्यटकों आकर्षित करती हैं। कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता की वजह से इसे भारत का स्विटजरलैंड भी कहा जाता है। इसी कारण यहां हर साल हजारों की संख्या में भारतीय और विदेशी पर्यटक आते हैं। हर किसी का सपना होता है कि वह चारों तरफ से खूबसूरत वादियों से घिरा हुआ जम्मू-कश्मीर की सुंदरता को एक बार तो जरूर देखें। यहां की बर्फीली पहाड़ियां, शांत वातावरण और खूबसूरत नजारे इस वादी की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं, यहां का मौसम साल भर सुहावना बना रहता है। यहां का शांत वातावरण, हरा-भरा पहाड़ी परिदृश्य, वनस्पतियां, झील और नदी इस वैली को जन्नत बनाने का काम करती हैं।

विनय शर्मा

प्रकृति की असल खूबसूरती आप यहां आकर देख सकते हैं। प्रदूषण रहित यह स्थल आपको आत्मिक और मानसिक शांति का अनुभव कराएगा। लेकिन इन शांत एवं खूबसूरत वादियों में पडोसी देश पाकिस्तान एवं तथाकथित उन्मादी तत्व आतंक की घटनाओं को अंजाम देकर अशांति फैलाते रहते हैं। ऐसे ही जम्मू-कश्मीर के पुंछ इलाके में एक आतंकी हमले के बाद सेना के वाहन में आग लगने से पांच जवान शहीद हो गए, जबकि एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया। नागरोटा में तैनात सेना की 16वीं कोर ने शहीद हुए सैनिकों की पहचान हवलदार मंदीप सिंह, लांसनायक देबाशीश बस्वाल, लांसनायक कुलवंत सिंह, सिपाही हरकृष्ण सिंह और सिपाही सेवक सिंह के रूप में बताई है। शहीद हुए पांच सैनिकों में से चार पंजाब के और एक ओडिशा का रहने वाला था। देबाशीश बस्वाल ओडिशा के अलगुम सामिल खंडायत के निवासी थे, जबकि मंदीप सिंह पंजाब के चानकोईयां काकन गांव के, हरकृष्ण सिंह तलवंडी बारथ गांव के, कुलवंत सिंह चारिक के और सेवक सिंह वाघा के रहने वाले थे। सूत्रों ने बताया कि अधिकारियों ने वाहन पर गोलियों के निशान देखे हैं और वहां से ग्रेनेड के टुकड़े बरामद हुए हैं, जिससे इसके आतंकी हमला होने की पुष्टि हुई है। लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आभा पर लगे ग्रहण के बादल छंटने लगे थे कि एक बार फिर कश्मीर के पुंछ इलाके में हुए इस आतंकी हमले की जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि इसे जम्मू-कश्मीर में जी-20 सम्मेलन से पहले एक सुनियोजित हमला बताया जा रहा है। यह हमला ऐसे समय में किया गया, जब भारत इस साल जी-20 समिट की अध्यक्षता कर रहा है। इसके तहत लेह में 26 से 28 अप्रैल को और श्रीनगर में 22 से 24 मई को बैठक होनी है। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में सेना के ट्रक पर हुआ आतंकी हमला इसी माह लेह में और अगले महीने श्रीनगर में होने वाली जी-20 समिट की बैठकों को रद्द कराने की साजिश के तहत किया गया था। मैंने हाल ही अपनी एक सप्ताह की कश्मीर यात्रा में देखा कि केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार करने में जुटी है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 8 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है। बीते साढ़े तीन दशक के दौरान कश्मीर का लोकतंत्र कुछ तथाकथित नेताओं का बंधुआ बनकर गया था, जिन्होंने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिये जो कश्मीर देश के माथे का ऐसा मुकुट था, जिसे सभी प्यार करते थे, उसे डर, हिंसा, आतंक एवं दहशत का मैदान बना दिया। तीन दशकों से कश्मीर घाटी दोषी और निर्दोषी लोगों के खून की हल्दीघाटी बनी रही है। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से वहां शांति एवं विकास का अपूर्व वातावरण बना है। केन्द्र सरकार के सामने अब बड़ा लक्ष्य है वहाँ लोगों को बन्दूक से सन्दूक तक एवं आतंक से अमन-चैन तक लाने का, बेशक यह कठिन और पेचीदा काम है लेकिन राष्ट्रीय एकता और निर्माण संबंधी कौन-सा कार्य पेचीदा और कठिन नहीं रहा है? इन कठिन एवं पेचीदा कामों को आसान करना ही तो नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार का जादू रहा है। मोदी कश्मीर को जी-20 की बैठक के लिये चुनकर दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि नेतृत्व चाहे तो दुनिया से आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है। इस बैठक में जी-20 सदस्य देशों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में भाग लेंगे। कश्मीर सहित समूची दुनिया से आतंकवाद को समाप्त करने का नेतृत्व करके मोदी एक और करिश्मा घटित करने को तत्पर है, पूंछ जैसी घटनाएं उनके इरादों को कमजोर नहीं, बल्कि बलशाली ही बनाती है। जिस जगह पर हमला हुआ वहां पर सीमा सड़क संगठन द्वारा एक बोर्ड लगाया गया है जिसमें लिखा है कि हेलमेट लगाकर दोपहिया वाहन चलाए, इस बोर्ड के ऊपर भी गोलियों के निशान बने हुए है। जहां पर हमला हुआ वहां पर एक बहुत बड़ा पत्थर है इस पत्थर की आड़ लेकर भी आतंकियों ने सैन्य वाहन पर गोलीबारी की। आतंकियों ने जिस जगह पर सैन्य वाहन पर हमला किया उस जगह पर सड़क के नीचे से एक पुलियां गुजरती है जिसमें एक नहीं कई लोग आराम से छीप कर बैठ सकते है और यह पुलिस किसी को नजर भी नहीं आती है। सड़क के किनारे पर अभी भी सामान बिखरा हुआ पड़ा है। जबकि सड़क के दोनों तरफ काफी घना जंगल है जिसके अंदर आतंकी सुरक्षित शरण लेकर अपने ठिकानों तक पहुंच सकते हैं। 15 अगस्त 47 के दिन से ही पड़ोसी देश पाकिस्तान एक दिन भी चुप नहीं बैठा, लगातार आतंक की आंधी को पोषित करता रहा, अपनी इन कुचेष्ठाओं के चलते वह कंगाल हो चुका है, आर्थिक बदहाली में कटोरा लेकर दुनिया घूम आया, अब कोई मदद को तैयार नहीं, फिर भी उसकी घरेलू व विदेश नीति कश्मीर पर ही आधारित है। कश्मीर सदैव उनकी प्राथमिक सूची में रहा। पाकिस्तान जानता है कि सही क्या है पर उसकी उसमें वृत्ति नहीं है, पाकिस्तान जानता है कि गलत क्या है पर उससे उसकी निवृत्ति नहीं है। कश्मीर को अशांत करने का कोई मौका वह खोना नहीं चाहता। आज के दौर में उठने वाले सवालों में ज्यादातर का जवाब केंद्र सरकार को ही देना है, उसने सटीक जबाव देकर आतंकियों के मनसूंबों को ढेर किया है, पडोसी देश की गर्दन को मरोड़ा भी है। यह बात भी सही है कि इस मसले को दलगत राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए। ऐसे वक्त में जब कश्मीर में लोकतांत्रिक तरीके से सरकार बनाने की तैयारियां चल रही हों, वहां शांति स्थापित करना सभी की प्राथमिकता होनी चाहिए। अब कश्मीर में आतंक का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होना ही चाहिए। आए दिन की हिंसक घटनाएं आम नागरिकों में भय का माहौल ही बनाती हैं। माना कि रोग पुराना है, लेकिन ठोस प्रयासों के जरिए इसकी जड़ का इलाज होना ही चाहिए। इनमें अपनी सुरक्षा के प्रति भरोसा जगाना सरकार की पहली जिम्मेदारी है। घाटी में सक्रिय आतंकियों के खात्मे में सुरक्षा तंत्र ने काफी कामयाबियां हासिल की हैं। अब जरूरत है खुफिया तंत्र को दूसरी तरह की चुनौतियों का सामना करने को तैयार एवं सक्षम किया जाये। आतंकी संगठनों में नए भर्ती हुए युवाओं और उनके मददगारों की शिनाख्त जरूरी है, ताकि लक्षित हत्याओं के उनके इरादों को पहले ही नाकाम किया जा सके। घाटी में हालात सुधरने के केंद्र सरकार के दावों की सत्यता इसी से परखी जाएगी कि घाटी में अल्पसंख्यक पंडित और प्रवासी कामगार खुद को कितना सुरक्षित महसूस करते हैं। वास्तव में देखा जाये तो असली लड़ाई कश्मीर में बन्दूक और सन्दूक की है, आतंकवाद और लोकतंत्र की है, अलगाववाद और एकता की है, पाकिस्तान और भारत की है। शांति का अग्रदूत बन रहा भारत एक बार फिर युद्ध के जंग की बजाय शांति प्रयासों एवं कूटनीति से पाकिस्तान को उसकी औकात दिखाये, यह अपेक्षित है। ■

क्या लोकसभा चुनावों से पहले वाकई साथ आ पाएंगे

नीतीश-तेजस्वी-ममता और अखिलेश यादव?

हालांकि इन चारों दलों के एक साथ आने में अभी कई अड़चनें हैं। बिहार में नीतीश कुमार और लालू यादव तो मिल गए हैं लेकिन सवाल यह है कि इस नए गठबंधन में कांग्रेस की भूमिका क्या होगी? क्या ममता बनर्जी कांग्रेस को सेंट्रल स्टेज देने को तैयार होंगी जैसा नीतीश कुमार चाहते हैं?

संतोष पाठक

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने उपमुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजस्वी यादव के साथ हाल ही में कोलकाता जाकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और लखनऊ जाकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ बड़ा गठबंधन बनने का संकेत देने का भरपूर प्रयास किया है। अगर ये चारों नेता लोक सभा चुनाव से पहले पूरी तरह से एकजुट हो जाते हैं तो इसका सीधा असर देश के तीन बड़े राज्यों- उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल की राजनीति पर पड़ना तय माना जा रहा है। भाजपा भले ही फिलहाल इन मुलाकातों को अपने लिए कोई बड़ा खतरा नहीं मान रही है लेकिन उसे भी इस बात की गंभीरता का अंदाज बखूबी है। क्योंकि उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल महज तीन राज्य भर नहीं हैं बल्कि इन तीनों राज्यों में कुल मिलाकर लोक सभा की 162 सीटें आती हैं जो यह तय करती है कि देश की गद्दी पर कौन राज करेगा? इसलिए यह कहा जा रहा है कि नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी और अखिलेश यादव के पूरी तरह से साथ आ जाने के बाद उत्तर प्रदेश से आने वाली लोकसभा की 80 सीट, बिहार से आने वाली 40 और पश्चिम बंगाल से आने वाली लोकसभा की 42 सीट यानी कुल मिलाकर 162 लोकसभा सीटों पर असर पड़ना तय है, क्योंकि इन 162 सीटों में से 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन को 121 सीटों पर जीत मिली थी (2019 के लोकसभा चुनाव में जेडीयू एनडीए गठबंधन का हिस्सा थी)। लेकिन नीतीश कुमार के एनडीए का साथ छोड़कर महागठबंधन में शामिल हो जाने के बावजूद एनडीए सांसदों का यह आंकड़ा 105 सांसदों का होता है।

2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में भाजपा को अकेले 62 और उसके गठबंधन सहयोगी अपना दल को 2 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। सपा के साथ गठबंधन करने का सबसे ज्यादा लाभ बसपा को मिला और उसके 10 सांसद चुन कर आए जबकि सपा के खाते में लोकसभा की सिर्फ 5 सीटें आईं और कांग्रेस को सिर्फ एक सीट मिली थी। वहीं पश्चिम बंगाल की 42 सीटों में से 2019 में टीएमसी को 22 और भाजपा को 18 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। 2 कांग्रेस को मिली थी। वहीं 2019 के लोक सभा चुनाव में भाजपा गठबंधन को बिहार के 40 में से 39 सीटों पर जिस हासिल हुई जिसमें से भाजपा के खाते में 17, जेडीयू के खाते में 16 और एलजीपी के खाते में 6 लोकसभा सीट आई थी। हालांकि बिहार में जेडीयू के आरजेडी के साथ जाने के बावजूद आज भी बिहार में एनडीए गठबंधन के पास 23 सांसद हैं। हालांकि इन चारों दलों के एक साथ आने में अभी कई अड़चनें हैं। बिहार में नीतीश कुमार और लालू यादव तो मिल गए हैं लेकिन सवाल यह है कि इस नए गठबंधन में कांग्रेस की भूमिका क्या होगी? क्या ममता बनर्जी कांग्रेस को सेंट्रल स्टेज देने को तैयार होगी जैसा नीतीश कुमार चाहते हैं? क्या अखिलेश यादव फिर से कांग्रेस के साथ गठबंधन करना चाहेंगे? या फिर ये चारों दल कांग्रेस को पूरी तरह से अलग-थलग यानी किनारे कर चुनाव लड़ेंगे? इन सवालों का जवाब ढूंढ़े बिना इस गठबंधन की कहानी मुकम्मल नहीं होगी। इन अंतर्विरोधों की वजह से ही भाजपा इस गठबंधन को फिलहाल अपने लिए कोई बड़ा खतरा नहीं मान रही है लेकिन पार्टी के आला नेताओं की नजर लगातार इन घटनाक्रमों पर बनी हुई है क्योंकि राजनीतिक स्थिति तो कभी भी बदल सकती है। ■

पंजाब की राजनीति के शिखर पुरुष थे प्रकाश सिंह बादल

प्रकाश सिंह बादल 11 बार विधायक रहे और केवल दो बार राज्य विधानसभा का चुनाव हारे। वर्ष 1977 में वह केंद्र में कृषि मंत्री के रूप में मोरारजी देसाई की सरकार में थोड़े समय के लिए शामिल हुए। 2008 में बादल ने अकाली दल की बागडोर बेटे सुखबीर सिंह बादल को सौंप दी।

प्रकाश सिंह बादल जीवन या राजनीति के क्षेत्र में आसानी से हार मानने वालों में से नहीं थे। पिछले साल ही, शिरोमणि अकाली दल (शिअद) ने विधानसभा चुनाव के लिए पंजाब के मुक्तसर जिले में लंबी सीट से उन्हें उम्मीदवार बनाया था। प्रकाश सिंह बादल यह चुनाव भले हार गए थे, लेकिन देश में चुनाव लड़ने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति होने के नाते रिकॉर्ड बुक में उनका नाम दर्ज हो गया। बठिंडा जिले के बादल गांव के सरपंच बनने के साथ शुरू हुए लंबे राजनीतिक करियर में यह उनकी 14वीं चुनावी लड़ाई थी। बादल एक अलग पंजाबी भाषी राज्य के लिए चलाए गए आंदोलन का हिस्सा भी रहे। पंजाब के पांच बार मुख्यमंत्री रह चुके बादल का चंडीगढ़ के पास मोहाली के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। सांस लेने में परेशानी होने के बाद उन्हें नौ दिन पहले ही अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वह 95 वर्ष के थे। पंजाब की राजनीति के दिग्गज नेता बादल पहली बार 1970 में मुख्यमंत्री बने और उन्होंने एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया, जिसने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया। इसके बाद वह 1977-80, 1997-2002, 2007-12 और 2012-2017 में भी राज्य के मुख्यमंत्री रहे।

बादल 11 बार विधायक रहे और केवल दो बार राज्य विधानसभा का चुनाव हारे। वर्ष 1977 में वह केंद्र में कृषि मंत्री के रूप में मोरारजी देसाई की सरकार में थोड़े समय के लिए शामिल हुए। अपने राजनीतिक जीवन के आखिरी दौर में 2008 में बादल ने अकाली दल की बागडोर बेटे सुखबीर सिंह बादल को सौंप दी, जो उनके अधीन पंजाब के उपमुख्यमंत्री भी बने। प्रकाश सिंह बादल का जन्म आठ दिसंबर 1927 को पंजाब के बठिंडा के अबुल खुराना गांव में हुआ था। बादल ने लाहौर के फॉरमैन क्रिश्चियन कॉलेज से स्नातक किया। उन्होंने 1957 में कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में मलोट से पंजाब विधानसभा में प्रवेश किया। 1969 में उन्होंने अकाली दल के टिकट पर गिद्दड़बाहा विधानसभा सीट से जीत हासिल की। जब पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री गुरनाम सिंह ने 1970 में दल-बदल कर कांग्रेस का दामन थामा था तब अकाली दल फिर से संगठित हो गया तथा इसके बाद इसने जनसंघ के समर्थन से राज्य में सरकार बनाई।

वह तब देश के सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री बने। यह बात दीगर है कि यह गठबंधन सरकार एक वर्ष से थोड़ा अधिक चली। वर्ष 2017 में बतौर मुख्यमंत्री अपना कार्यकाल समाप्त किया तो वह इस पर रहने वाले सबसे अधिक उम्र के नेता थे। वर्ष 1972 में बादल सदन में विपक्ष के नेता बने, लेकिन बाद में फिर से मुख्यमंत्री बने। बादल के नेतृत्व वाली सरकारों ने किसानों के हितों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उनकी सरकार के महत्वपूर्ण निर्णयों में कृषि के लिए मुफ्त बिजली देने का निर्णय भी शामिल था। अकाली दल के नेता प्रकाश सिंह बादल ने सतलुज यमुना लिंक (एसवाईएल) नहर के विचार का कड़ा विरोध किया, जिसका उद्देश्य पड़ोसी राज्य हरियाणा के साथ नदी के पानी को साझा करना था। इस परियोजना को लेकर एक आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए 1982 में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। यह परियोजना पंजाब के निरंतर विरोध के कारण अभी तक लागू नहीं हो सका है।

उनके नेतृत्व में राज्य विधानसभा ने विवादास्पद पंजाब सतलुज यमुना लिंक नहर (स्वामित्व अधिकारों का हस्तांतरण) विधेयक, 2016 पारित किया। यह विधेयक परियोजना पर तब तक की प्रगति को उलटने के लिए था। उनकी पार्टी ने 2020 में केंद्र के नए कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से अपना नाता तोड़ लिया। प्रकाश सिंह बादल की पत्नी सुरिंदर कौर बादल की 2011 में कैंसर से मौत हो गई थी। उनका बेटा सुखबीर सिंह बादल और बहू हरसिमरत कौर बादल दोनों ही राजनीति में सक्रिय हैं। सिखों की सर्वोच्च धार्मिक संस्था अकाल तख्त ने उन्हें पंथ रतन फख्र-ए-कौम - या प्राइड ऑफ द फेथ - की उपाधि से सम्मानित किया, जिसकी कई लोगों ने आलोचना भी की। ■

राहुल गांधी ने क्यों छेड़ा है जातीय जनगणना का राग

दरअसल, भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर यह दावा करती रहती है कि 2014 में केंद्र की सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ओबीसी लोगों के लिए इतने ऐतिहासिक काम किए हैं जो इससे पहले की किसी भी केंद्र सरकार ने नहीं किया था।

कर्नाटक या फिर लोकसभा चुनाव पर राहुल की नजर?

अजय कुमार

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी जिनकी संसद सदस्यता हाल ही में छिन गई है और देश की सत्ताधारी पार्टी भाजपा जिन पर ओबीसी समुदाय का अपमान करने का आरोप लगाकर देश भर में अभियान चला रही है, उन राहुल गांधी ने कर्नाटक विधानसभा चुनाव में प्रचार के दौरान जातीय जनगणना का राग छेड़ दिया है। राहुल गांधी ने कर्नाटक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चुनौती देने के अंदाज में 2011 में करवाए गए जाति आधारित जनगणना के आंकड़े सार्वजनिक करने की मांग की है। कांग्रेस जैसी बड़ी और राष्ट्रीय पार्टी के नेता आमतौर पर हाल फिलहाल तक इस मुद्दे पर इतने स्पष्ट अंदाज में बोलने से बचते ही नजर आया करते थे लेकिन आजकल कुछ नया और बड़ा करने की कोशिश में राहुल गांधी ने अब जातीय जनगणना को लेकर भी अपने इरादे साफ कर दिए हैं। ऐसे में सवाल यह खड़ा हो रहा है कि कर्नाटक की धरती पर जाकर राहुल गांधी को यह मांग करने की जरूरत क्या थी? 2011 में मनमोहन सिंह की सरकार को घटक दलों के दबाव में जिस जातीय जनगणना को कराना पड़ा और जिसका आंकड़ा कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए की मनमोहन सिंह सरकार भी जारी नहीं कर पाई थी, आखिर उस आंकड़े को अब राहुल गांधी क्यों जारी करवाना चाहते हैं? आखिर राहुल गांधी को क्यों इस मसले पर लालू यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के पीछे-पीछे चलने को मजबूर होना पड़ा? क्या सिर्फ कर्नाटक में विधानसभा का चुनाव जीतने के लिए राहुल गांधी को जातीय जनगणना और ओबीसी समुदाय के हितों की रक्षा करने का यह राग अलापना पड़ा या फिर इसके तार 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव तक जा रहे हैं? दरअसल, यह बात बिल्कुल सही है कि कर्नाटक में जीत हार का फैसला ओबीसी समाज के वोटर्स ही करते हैं क्योंकि राज्य में इस समुदाय के मतदाताओं की तादाद सबसे ज्यादा यानी 54 फीसदी के लगभग है। पिछले चुनाव में इनमें से सबसे ज्यादा लोगों ने भाजपा को वोट किया था और ऐसे में यह माना जा रहा है कि कांग्रेस ने इसी वोट बैंक को अपने पाले में लाने के लिए राहुल गांधी से जातीय जनगणना को लेकर यह बयान दिलवाया होगा। लेकिन वास्तव में इसकी वजह काफी गहरी है। कर्नाटक में ओबीसी समाज भी अलग-अलग जातियों में बंटा हुआ और हर जातीय समूह का अपना-अपना प्रभावशाली नेता हैं जिनमें से कई अभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर मजबूती के साथ भाजपा के साथ खड़े हैं। ऐसे में यह साफ जाहिर हो रहा है कि जातीय जनगणना का मुद्दा उठाकर कर्नाटक के बहाने राहुल गांधी लोक सभा चुनाव के समीकरणों को साधना चाहते हैं। दरअसल, भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर यह दावा करती रहती है कि 2014 में केंद्र की सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ओबीसी लोगों के लिए इतने ऐतिहासिक काम किए हैं जो इससे पहले की किसी भी केंद्र सरकार ने नहीं किया था। भाजपा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा देने, केंद्र सरकार में पहली बार ओबीसी समाज के 27 सांसदों को मंत्री बनाने और नवोदय, सैनिक एवं सेंट्रल स्कूलों में ओबीसी छात्रों के लिए 27 फीसदी आरक्षण जैसे कई कदमों का हवाला देते हुए देश भर के ओबीसी मतदाताओं को यह संदेश देने का प्रयास करती है कि उनके समाज के हितों की रक्षा सिर्फ और सिर्फ भाजपा ही कर सकती है। यही वजह है कि ओबीसी समाज का अपमान करने के आरोपों का सामना कर रहे राहुल गांधी ने भाजपा के इसी प्रचार तंत्र के प्रभाव को तोड़ने के लिए कर्नाटक में जातीय जनगणना के मुद्दे को जोर-शोर से उठा दिया। अगर राहुल गांधी के भाषण को ध्यान से सुना जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि वो कर्नाटक की धरती से सिर्फ देश भर के ओबीसी वोटरों को ही संबोधित नहीं कर रहे थे बल्कि इस समुदाय के प्रभावशाली नेताओं को भी एक राजनीतिक संदेश देने का प्रयास कर रहे थे। राहुल गांधी ने कहा था कि यदि मोदी सरकार ओबीसी का भला करना चाहती है तो वह 2011 के जातिगत जनगणना के आंकड़ों को सार्वजनिक करें ताकि ये पता चल सके कि देश में कितने दलित, कितने आदिवासी और कितने ओबीसी हैं। राहुल ने आरक्षण की उच्चतम सीमा पर लगी 50 फीसदी की रोक को हटाने की मांग करते हुए यहां तक आरोप लगा दिया कि नरेंद्र मोदी ने ओबीसी से वोट लिया, लेकिन नौ सालों में इनके लिए किया क्या? दरअसल, यह पूरी लड़ाई 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव की है। भाजपा मंडल की राजनीति को कमंडल में समाहित कर लगातार चुनाव दर चुनाव जीतती जा रही है और इसलिए राहुल गांधी भाजपा के कमंडल से मंडल के जिन्न को बाहर निकाल कर एक बार फिर देश की राजनीति के चरित्र को बदलने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन निश्चित तौर पर भाजपा की तरफ से इसका जवाब भी आएगा ही। बाकी अंतिम फैसला तो भारत की जनता 2024 में ही करेगी। ■

बच्चों का करियर चुनते समय पैरेंट्स न करें ऐसी गलतियां

खराब हो सकता है उनका फ्यूचर

कई बार करियर चुनते समय कई बच्चे काफी कंफ्यूज होते हैं। ऐसे में वह पैरेंट्स, टीचर आदि की मदद लेते हैं। सही करियर का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण निर्णय होता है। ऐसे में पैरेंट्स को बच्चों पर अपनी इच्छाएं थोपने से बचना चाहिए और उन्हें करियर चुनने के लिए पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिए।

डॉ. अरुण शर्मा

छात्रों की 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा खत्म होने के बाद जहां 10वीं के छात्रों को अपने स्ट्रीम का चुनाव करना है। वहीं दूसरी ओर 12वीं के छात्रों को हायर एजुकेशन पर फोकस करना होता है। बेहतर और सही करियर का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण निर्णय होता है। छात्र द्वारा चुना गया करियर ही उसके भविष्य का निर्माण करता है। ऐसे में कई बार स्टूडेंट्स अपने करियर और पढ़ाई को लेकर कंफ्यूज हो जाते हैं। इस कंफ्यूजन को दूर करने के लिए वह पैरेंट्स, सीनियर या टीचर्स की मदद लेते हैं। ऐसे में पैरेंट्स को अपने बच्चे का सही मार्गदर्शन किए जाने की जरूरत होती है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उन जरूरी बातों को बताने जा रहे हैं जो आपके बच्चे के करियर चुनाव में मदद करेगी। कई बार पैरेंट्स बच्चों पर अपनी इच्छाएं थोप देते हैं। जिसके कारण छात्रों को आगे स्ट्रगल करना पड़ता है। ऐसे में आप भी इन गलतियों को करने से बचें।

अपनी इच्छाएं थोपने से बचें

करियर का सुझाव देने के दौरान कई बार पैरेंट्स बच्चों पर अपनी इच्छाएं थोपने लगते हैं। हर पैरेंट्स अपने बच्चे को डॉक्टर, इंजीनियर या फिर टीचर बनाना चाहता है। लेकिन अगर आपका बच्चा बिना मन लगाए सिर्फ आपके कहने से इन फील्ड में जाएगा तो जरूरी नहीं है कि वह सफल हो। वहीं अपनी पसंद के करियर के साथ उसे सफल होने से कोई नहीं रोक पाएगा। इसलिए छात्र किस फील्ड में करियर बनाना चाहता है और उसमें क्या स्कोप है। इस बारे में जरूर जानकारी हासिल करें।

सोसायटी का दबाव

अक्सर देखने को मिलता है कि जब कोई बच्चा अपनी लीक से हटकर किसी फील्ड में करियर का चुनाव करता है तो उसे सोसायटी का डर दिखाया जाता है। सोसायटी क्या कहेगी, लोग क्या सोचेंगे। इन सब बातों को बोलने से बच्चे कई बार अपना पसंदीदा करियर छोड़ देते हैं। जबकि आपका बच्चा जिस भी फील्ड में जाना चाहता है, अपना करियर बनाना चाहता है। उस फैसले में आप डटकर उसके साथ खड़े रहें। ऐसा करने से बच्चों का मनोबल बढ़ता है और उन्हें आसानी से सफलता मिलती है।

करियर काउंसलिंग

अगर पैरेंट्स को लगता है कि वह अपने बच्चे को करियर से रिलेडेट बेहतर सलाह नहीं दे पा रहे हैं। तो ऐसी स्थिति में आप करियर काउंसलर की मदद ले सकते हैं। करियर काउंसलर के पास बच्चे को ले जाने से उसके सामने कई करियर के ऑप्शन खुलेंगे। पैरेंट्स को इस बात पर विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए कि बच्चों का टीचर भी उनका करियर काउंसलर बन सकता है। करियर का चुनाव करते समय यदि कंफ्यूजन हो तो आप टीचर की भी मदद ले सकते हैं। टीचर से जान सकते हैं कि आपका बच्चा किस सब्जेक्ट में बेहतर है। ऐसा करने से आपका बच्चा बेहतर तरीके से करियर का चुनाव कर पाएगा।

बच्चे पर न डालें प्रेशर

बच्चे पर अपने करियर के चुनाव को लेकर काफी प्रेशर रहता है। ऐसे में कई बार पैरेंट्स कोई एक खास करियर चुनने का उनपर दबाव डालते हैं। ऐसा करने से बचना चाहिए। उन्हें स्वतंत्रता देने से वह बेहतर तरीके से करियर का चुनाव कर पाएंगे। वहीं किसी खास करियर में ढकेलने के कारण न तो आपका बच्चा मोटिवेट हो पाएगा और हो सकता है वह उस फील्ड में बेहतर प्रदर्शन भी न कर पाएं। ■

तारिक फतेह
क्यों चुभते थे कठमुल्लों को

आर.के. सिन्हा

तारिक फतेह को उनके चाहने वाले एक बेखौफ लेखक के रूप में याद रखेंगे। वे सच का साथ देते रहे। वे भारत के परम मित्र थे। उन्हें इस बात का गर्व रहा कि उनके पूर्वज हिंदू राजपूत थे। वे बार-बार कहते-लिखते थे कि भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के तमाम मुसलमानों के पुर्खे हिंदू ही थे और उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। उनकी इस तरह की साफगोई कठमुल्लों को नागवार गुजरती थी। तारिक फतेह हिंदी पट्टी के मुसलमानों के दिल में चुभते हैं। उनकी तारीफ यह थी कि वह डंके की चोट पर अपने पूर्वजों को हिंदू बताते रहे। बहुत कम मुसलमान यह हिम्मत दिखा पाते हैं। वह मुस्लिम सांप्रदायिकता पर लगातार चोट करते रहे। तारिक फतेह पहली बार 2013 में भारत दौरे पर आए थे तब उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था, 'पाकिस्तान को तो अब भूल जाइए। इसको एक न एक दिन कई टुकड़ों में टूटना ही है। वो दिन भी दूर नहीं जब बलूचिस्तान और सिंध उससे अलग हो जाएगा। पाकिस्तानी सेना एक औद्योगिक माफिया है जिसका अपने देश के अनाज, ट्रकों, मिसाइलों से लेकर बैंकों तक पर नियंत्रण हैं।' यह सुनकर पाकिस्तान के हुक्मरान तिलमिला गए थे। वे मानते थे कि, 'भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहां मुसलमान बिना डरे स्वतंत्रतापूर्वक काम करते हैं।'

तारिक फतेह से जितने लोग मुहब्बत करने वाले हैं उससे बहुत ही कम नफरत करने वाले हैं। वे कभी इस्लाम की आलोचना नहीं करते थे, बल्कि इस्लाम के नाम पर झूठे गौरव और पाखंड की बखिया उधेड़ देते थे। अच्छा से अच्छा मौलवी उनके छोटे से चुभते हुए तर्क से तिलमिला कर रह जाता था। एक बार एक मौलवी साहब औरंगजेब की बहुत तारीफें कर रहे थे और उसे सच्चा और अनुकरणीय मुसलमान साबित कर रहे थे। तारिक फतह ने उससे सिर्फ एक सवाल किया कि अगर औरंगजेब एक सच्चा मुसलमान था तो क्या उसने हज की थी? मौलवी साहब बगलें झाँकते नजर आने लगे और उनकी सारी पिछली तारीफों पर फतेह साहब के एक सवाल ने पानी फेर दिया। किसी मुसलमान पर हज उतना ही बड़ा फर्ज है जितने कि नमाज, रोजा और जकात। इनमें से कोई एक दूसरे की भरपाई नहीं कर सकता। चारों ही अलग-अलग फर्ज हैं। कोई भी मुस्लिम जब बालिग हो जाए और हज करने के लायक स्वास्थ्य और आमदनी हो तो हज तुरन्त फर्ज हो जाती है। अल्लाह ने औरंगजेब को 96 साल की लम्बी उम्र दी, बचपन से बुढ़ापे तक तंदुरुस्त रखा। पहले शाहजादा फिर बादशाह बनाया। हज में दुनियावी मसायल की वजह से कोई माफी नहीं है। अगर सामर्थ्यवान होते हुए भी 96 साल की उम्र तक औरंगजेब हज नहीं करता तो या तो उसका हज के फर्ज होने पर ईमान नहीं है या उसे ईश्वर पर भरोसा

नहीं है कि वह हज करने गया तो वापस उसकी गद्दी उसे मिलेगी या नहीं। उसका पंजवक्ता नमाजी होना और टोपियाँ सिल कर रोजी कमाना सब बेकार गया। हज को महत्व न देना और उसको टालना दोनों ही गुनाहे कबीरा यानी घोर पाप हैं। देश में सीएए-एनआरसी के मुद्दे पर हुए दंगो के बाद तारिक फतेह ने कहा था, 'हर वह व्यक्ति हिंदू है, जो हिंदुस्तान के इतिहास और परंपरा की मिल्कियत रखता है।' मुस्लिम समुदाय में तारिक फतेह जैसा बोल्ड और जीनियस लेखक या विचारक मिलना मुश्किल है। इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध बिगुल फूंकने वाला, पाकिस्तान के आतंकवाद-प्रेम पर मुखर होकर निरंतर प्रहार करने वाला कोई दूसरा मुस्लिम लेखक या विचारक मिलना मुश्किल है। इस्लाम सहित तमाम मुद्दों पर मुखर रूप से बोलने वाले तारिक फतेह टीवी डिबेट में अक्सर खुद को हिंदुस्तानी बताते थे और हमेशा सिंध और हिंद का कनेक्शन जोड़ते थे। तारिक फतेह पाकिस्तान के विचार को खारिज करते थे। वे मानते थे कि देश का बंटवारा नहीं होना चाहिए था। दुर्भाग्य यह है कि उनकी मौत का कुछ कथित प्रगतिशील और कठमुल्ले जश्न मना रहे हैं। अगर आपको यकीन न हो तो सोशल मीडिया पर चले जाइये। वहां पर आपको तारिक फतेह को लेकर तमाम तरह की ओछी टिप्पणियां पढ़ने को मिलेंगी। तारिक फतेह धार्मिक अतिवाद के खिलाफ बोलने और एक उदारवादी इस्लाम के पक्ष को बढ़ावा देने के लिये प्रसिद्ध थे। उन्होंने 'यहूदी मेरे दुश्मन नहीं हैं' नाम से एक पुस्तक भी लिखी। पाकिस्तान में बलूचों के आंदोलनों के समर्थक भी रहे। बलूचिस्तान में मानवाधिकारों के हनन और पाकिस्तान द्वारा बलूचों पर की जा रही ज्यादतियों के विषय पर भी बोलते और लिखते रहे। तारिक फतेह मुस्लिम इतिहास के भी प्रकांड विद्वान थे, जिस कारण तर्कों और तथ्यों में उन्हें पराजित करना किसी के लिये नामुमकिन था। तारिक फतेह कोराना काल से पहले मेरे राजधानी के हुमायूं रोड के सरकारी आवास में भी कई बार पधारे। उनसे कई अहम मसलों पर चर्चा हुई। वे बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थे। वे पाकिस्तान के शहर कराची में जन्मे थे और 1987 से कनाडा में रहने लगे। तारिक फतेह आप वाकई पंजाब के शेर और हिंदुस्तान के बेटे थे, जैसा कि आपकी बिटिया नताशा ने कहा है। तारिक फतेह ने एक बार मुझसे जानना चाहा कि क्या सच है कि बहरत के संविधान की मूल प्रति पर हडप्पा और मोहन जोदड़ों के चित्र हैं। मैंने कहा कि मेरे पास संविधान की मूल प्रति है आपको नन्द लाल बसु की हडप्पा और मोहन जोदडे की पेंटिंग दिखाता हूँ। मैंने जब उन्हें संविधान की मूल प्रति पर हडप्पा और मोहन जोदडे की पेंटिंग दिखाई तो वे भावुक हो उठे और उनकी आँखों से आंसू निकल पड़े तारिक फतेह किसी टीवी के कार्यक्रम में सिंध का इतिहास, पंजाब का इतिहास, पाकिस्तान के वजूद और यूपी के मुसलमानों की बात अवश्य करते थे। वे बार-बार कहते थे कि पाकिस्तान के पंजाबियों पर उर्दू भारत से पाकिस्तान गए मुसलमानों ने थोपी। इस वजह से उनसे भारत और पाकिस्तान का एक तबका खफा रहता था। यह सच है कि पंजाबियों पर उर्दू थोपी गई। चूंकि वे एक बेखौफ साहसी लेखक थे और खुलकर अपनी राय का इजहार करते थे इसलिए उनकी जान के दुश्मन भी कम नहीं थे। उन्हें जान से मारने की धमकियां मिलती रहती थीं। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

यूपी में कानून व्यवस्था के लिए संकट पैदा करने वाले लोग

आज खुद संकट में हैं

कुख्यात माफिया अपने कुकर्मों के चलते मार दिया गया और इस बात पर देश तथा प्रदेश के तथाकथित सेक्युलर दल तथा जिन राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं हैं उन राज्यों के मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार को घेरने के लिए तरह-तरह के सवाल उठा रहे हैं।

प्रदेश का कुख्यात माफिया अतीक जिसने राजनीति में भी हाथ आजमाया था वह अपने भाई अशरफ के साथ मिट्टी में मिल चुका है यद्यपि अपराध में उसके दो प्रमुख साझीदार शाइस्ता और गुड्डू मुस्लिम अभी फरार हैं और हजारों करोड़ रुपयों का काला साम्राज्य अभी भी जीवित है। आतंक व भय के पर्याय बन चुके अतीक व अशरफ की अब केवल कहानियां ही शेष रह गई हैं किंतु यह हत्याएं अपने पीछे कई राज भी दफन कर गई हैं और कई नयी आशंकाएं भी पैदा कर गई हैं। जब अतीक व अशरफ की हत्या का समाचार मीडिया में आया तब एकबारगी लगा कि पुलिस हिरासत व सुरक्षा के बीच इस प्रकार से यह घटना नहीं घटित होनी चाहिए थी और यह भी लगा कि यह तो पुलिस प्रशासन और खुफिया एजेसियों की घोर लापरवाही है किंतु जैसै-जैसे समय आगे बढ़ रहा है तथा इनकी आपराधिक कहानियां व दर्दनाक घटनाएं सामने आ रही हैं उससे जन सामान्य स्वाभाविक रूप से कह रहा है कि जो हुआ वह अच्छा हुआ।

मृत्युंजय दीक्षित

माफिया अतीक पर इस समय 101 व उसके भाई अशरफ पर 52 मुकदमे चल रहे थे जिनमें से एक मुकदमे में उसको आजीवन कारावास की सजा हो चुकी थी और अन्य मामलों में उसे सजा दिलवाने के लिए रिमांड पर लेकर उससे पूछताछ की जा रही थी और सूत्रों की मानें तो वह दोनों सजा के भय से कुछ राज बेपर्दा भी कर रहे थे। यह भी एक कड़वा सत्य था कि क्या सभी 101 मामलों में उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलती क्योंकि वह राजनीतिक रूप से संरक्षण प्राप्त माफिया था और स्वयं भी एक बार सांसद और चार बार विधायक भी रह चुका था। एक कुख्यात माफिया अपने कुकर्मों के चलते मार दिया गया और इस बात पर देश तथा प्रदेश के तथाकथित सेक्युलर दल तथा जिन राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं हैं उन राज्यों के मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार को घेरने के लिए तरह-तरह के सवाल उठा रहे हैं। यही नहीं इन दलों के नेता ठीक उसी प्रकार से आंसू बहा रहे हैं जिस प्रकार से कभी कांग्रेस की नेता श्रीमती सोनिया गांधी ने बाटला हाउस एनकाउंटर पर आंसू बहाये थे। इस बात में कोई संदेह नहीं लग रहा है कि अतीक व अशरफ की हत्या एक सुनियोजित साजिश के तहत की गई है क्योंकि पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई से उनसे लिंक खुलने प्रारम्भ हो गये थे और जिसके तार विपक्ष के कुछ बहुत बड़े नेताओं से जुड़ सकते थे। साजिशकर्ताओं ने अतीक व अशरफ की हत्या कराकर एक बहुत बड़ा खेल खेलना चाहा था किंतु अब वह खेल विरोधी दलों व साजिशकर्ताओं के खिलाफ ही जा रहा है। यह लोग सोच रहे थे कि अतीक व अशरफ की हत्या के बाद पूरा प्रदेश दंगों की आग में झुलस उठेगा और फिर योगी सरकार कमजोर होगी तथा वह नैतिक आधार पर इस्तीफा देगी, प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगेगा किंतु प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी अदित्यनाथ की तत्परता और प्रशासनिक कुशलता के कारण प्रदेश में कहीं कोई तनाव नहीं है वरन् हर जगह शांति और संतोष का वातावरण है।

अतीक व अशरफ की मौत पर रो रहे निहित स्वार्थी व विकृत विचारधारा वाले सेक्युलर राजनैतिक दल कुख्यात माफिया अतीक अहमद के लिए "जी" शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। एआईएमआईएम पार्टी के नेता असद्दुदीन ओवैसी जैसे लोग माननीय मुस्लिम सांसद कहकर उस खतरनाक अपराधी का महिमामंडन कर रहे हैं और उसकी आड़ में अतीक के गुनाहों को कम करने का भी अपराध करते हुए अपनी राजनैतिक रोटियां सेंक रहे हैं। इन सभी राजनैतिक दलों को लग रहा है कि ऐसा करने से वह प्रदेश में योगी सरकार की छवि को खराब करने में सफल हो जायेंगे जबकि सच्चाई यह है कि इन दलों की ऐसी हरकतों से भाजपा मजबूत हो रही है और योगी जी की छवि एक सख्त प्रशासक के रूप में सामने आ रही है। प्रदेश का जनमानस आज प्रसन्न है क्योंकि उसे लग रहा है कि बहुत दिनों बाद प्रदेश में एक ऐसी सरकार आई है जो अपराधियों व माफियाओं को मिट्टी में मिल रही है। आज अतीक, अशरफ व उसके गुर्गों के एनकाउंटर व धरपकड़ से समाज का वह वर्ग खुशी मना रहा है जो कभी इन लोगों की प्रताड़ना का शिकार हुआ था। अतीक अहमद ने वर्ष 2005 में दलित नेता व बसपा के पूर्व विधायक राजू पाल की हत्या केवल इसलिए करवाई थी क्योंकि वह अतीक के भाई अशरफ के खिलाफ चुनाव जीतकर विधायक बने थे और एक बहुत ही साधारण परिवार से आए थे। राजू पाल ने विधायक बनने के बाद अतीक से आशीर्वाद लेने के लिए अतीक को फोन किया और कहा कि भइया विधायक बन गये तो अतीक ने जवाब दिया था कि विधायक तो बन गये लेकिन अब जिंदा रहकर दिखाओ। राजू पाल की आखिरकार एक दिन हत्या हो ही गई और फिर अब उसके गवाह उमेश पाल की भी हत्या कर दी गई। बसपा के पूर्व विधायक राजू पाल का परिवार 18 साल से न्याय मांग रहा था और इस बीच सपा और बसपा दोनों ही दलों की सरकारें आईं किंतु पिछड़ों और दलितों के नाम पर वोट मांगने वाले इन दलों ने कभी भी राजू पाल के परिवार के साथ न्याय नहीं किया।

अतीक अहमद एक दुर्दांत अपराधी था। विरोधियों को शांत करने के लिए वह हत्या और अपहरण जैसी वारदातों को अंजाम देता था। अतीक ने खौफ का साम्राज्य स्थापित किया था। इनका खौफ इतना अधिक था कि हाईकोर्ट में केस जाने के बाद जस्टिस तक अतीक मामले की सुनवाई करने से इंकार कर देते थे। आज कोई कुछ भी कह रहा हो लेकिन मन ही मन यह जज लोग भी कहीं न कहीं खुश हो रहे होंगे। इसी अतीक अहमद ने अपने घर के आसपास के हिंदुओं को मकान खाली करने का आदेश दिया था। उस समय प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव थे। अतीक का कहना था कि हिंदुओं ने कब्रिस्तान की जमीन पर कब्जा कर मकान बना लिये हैं। अतीक के फरमान का मामला लेकर घरों के मालिक पुलिस के पास गये थे कोई कार्रवाई नहीं हुई थी। प्रयागराज व उसके आसपास के जिलों के निवासियों का कहना है कि सपा सरकार के समय अतीक व उसके गुर्गों का खौफ इतना अधिक बढ़ गया था कि बहन बेटियां उनके इलाकों से जाने में डरती थीं क्योंकि यह लोग हिंदू समाज की बहन बेटियों के साथ ही नहीं अपितु मुस्लिम समाज की बेटियों के साथ भी छेड़छाड़ तथा बलात्कार जैसी जघन्य वारदातों को अंजाम देते थे और उन निरीह बच्चियों की कहीं कोई सुनवाई नहीं होती थी। आज उन बेटियों को सही और सच्चा न्याय मिल गया है और वह जहां भी होंगी वहां आनंद का उत्सव मना रही होंगी। लेकिन जन भावनाओं से परे तथाकथित सेक्युलर दल लगातार रो रहे हैं और अतीक के नाम पर अपना मुस्लिम वोट बैंक बटोरने का असफल प्रयास कर रहे हैं। यह वही दल हैं जो पालघर में पुलिस कस्टडी में साधुओं की हत्या पर गूंगे हो गए थे। यह वही दल हैं जो लखनऊ में घर में घुसकर कमलेश तिवारी की हत्या पर चुप रह जाते हैं और निंदा तक नहीं करते। राजस्थान में कन्हैया लाल से लेकर महाराष्ट्र में उमेश कोल्हे तक की हत्या पर रहस्यमयी चुप्पी साधे रहते हैं किंतु यही दल अतीक व अशरफ जो खतरनाक मुजरिम थे उनके लिए जी और माननीय मुस्लिम सांसद जैसे शब्दों का प्रयोग कर उनका महिमामंडन केवल अपने वोट बैंक के लिए कर रहे हैं जो अब सफल नहीं होने वाला है। अखिलेश का तो ठीक है लेकिन उत्तर प्रदेश में बसपा नेत्री मायावती ने जिस प्रकार से अतीक व अशरफ की हत्या पर दुख जताया है और निंदा की है वह तो बहुत ही आश्चर्यजनक है क्योंकि यह वही अतीक अहमद था जिसने मायावती के खिलाफ गेस्ट हाउस कांड की रचना की थी और अतीक की हत्या से उन्हीं की पार्टी के विधायक राजू पाल के परिवार को नैसर्गिक न्याय मिल गया है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने साफ बता दिया है कि प्रदेश में अब कानून का राज है। योगी का साफ कहना है कि पहले जो माफिया प्रदेश के लिए संकट थे अब वे स्वयं संकट में हैं। बात सच है क्योंकि आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में 2012 से 2017 तक के 700 से अधिक दंगे हुए जबकि 2002 से 2007 के बीच में 364 से अधिक दंगे हुए लेकिन योगी जी के शासन सँभालने के बाद 2017 से 2023 तक प्रदेश में कहीं कोई दंगा नहीं हुआ और न ही कहीं कर्फ्यू लगा। ■

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने साफ बता दिया है कि प्रदेश में अब कानून का राज है। योगी का साफ कहना है कि पहले जो माफिया प्रदेश के लिए संकट थे अब वे स्वयं संकट में हैं। बात सच है क्योंकि आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में 2012 से 2017 तक के 700 से अधिक दंगे हुए जबकि 2002 से 2007 के बीच में 364 से अधिक दंगे हुए लेकिन योगी जी के शासन सँभालने के बाद 2017 से 2023 तक प्रदेश में कहीं कोई दंगा नहीं हुआ और न ही कहीं कर्फ्यू लगा।

कानूनी शिकंजे में अमृतपाल सिंह

वारिस पंजाब दे संगठन के प्रमुख और खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह को पुलिस ने मोगा जिले से गिरफ्तार कर लिया है जो 18 मार्च से फरार चल रहे थे। गिरफ्तारी के बाद पंजाब पुलिस उन्हें बठिंडा के एयरफोर्स स्टेशन लेकर गई, जहां से उन्हें असम के डिबरूगढ़ जेल भेज दिया गया है।

डॉ. रामनरेश शर्मा

खालिस्तान की मांग का समर्थन करने वाले अमृतपाल सिंह के गिरफ्तार होने के बाद अब अलग-अलग प्रतिक्रयाएं आ रही हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने पूरे घटनाक्रम पर कहा कि पिछले कुछ दिनों से पंजाब के अमन-शांति को बर्बाद करने की कोशिश की जा रही थी। अगर चाहते तो उस दिन ही सभी को पकड़ लिया जाता लेकिन पंजाब सरकार कोई खून-खराबा नहीं चाहती थी। उन्होंने कहा, पंजाब में पिछले कुछ महीनों से कानून-व्यवस्था और अमन-शांति को तोड़ने की कोशिश हो रही थी, जैसे ही हमें इसकी जानकारी मिली हमने एक्शन लिया। हम किसी बेकसूर को तंग नहीं करेंगे। हम कोई बदले की राजनीति नहीं करते। मान ने कहा कि वो 3.5 करोड़ पंजाबियों का इस बात के लिए धन्यवाद करते हैं कि इस 35 दिनों में उन्होंने अमन-शांति और आपसी भाईचारे को बनाकर रखा। पंजाब में कृषि का जबरदस्त विकास मुख्यतः हरित क्रांति का परिणाम है, जिसने राज्य में आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी की शुरूआत की। अधिक पैदावार वाले गेहूँ और चावल के बीजों के आगमन साथ ही इन फसलों के उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई। पंजाब का लगभग समूचा कृषि क्षेत्र सिंचित है और इस प्रकार यह देश का सर्वाधिक सिंचित प्रदेश है। सरकारी नहरें और नलकूप सिंचाई के प्रमुख साधन हैं। यहां के लोग संपन्न एवं मिलनसार होते हैं। गिरफ्तारी के बाद पंजाब पुलिस के आईजी (हेडक्वॉर्टर्स) सुखचैन सिंह गिल ने बताया कि अमृतपाल सिंह के खलिफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत कार्रवाई की गई है। देर से ही सही, पंजाब पुलिस ने इस उग्र और अराजक खालिस्तानी समर्थक को पकड़ने में सफलता हासिल की। आखिरकार भगोड़े अमृतपाल सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी गिरफ्तारी के संदर्भ में यह तथ्य चिंताजनक है कि वह एक गुरुद्वारे में शरण लिए हुए था। आखिर पंजाब के साथ देश की सुरक्षा के लिए खतरा बने एक चरमपंथी को गुरुद्वारे में शरण क्यों मिली? इस प्रश्न का उत्तर न केवल संबंधित गुरुद्वारे के व्यवस्थापकों को देना चाहिए, बल्कि उन पंथिक संगठनों को भी, जो पंजाब के माहौल में जहर घोल रहे अमृतपाल की निंदा करने के बजाय पंजाब सरकार और पुलिस पर अनावश्यक सवाल उठाने में लगे हुए थे। अमृतपाल के इरादे कितने खतरनाक थे, इसका पता इससे चलता है कि वह खुद को भारतीय नागरिक मानने से तो इनकार करता ही था, अपनी एक निजी सेना बनाने की तैयारी भी कर रहा था। उसके इरादों पर पानी फिरा तो इसीलिए, क्योंकि पंजाब में अब अलगाववादी सोच के लिए कोई स्थान नहीं बचा है। चंद सिरफिरे मुट्ठी भर तत्व ही खालिस्तान की आवाज उठाते रहते हैं। इन तत्वों को सिर उठाने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। यह तभी संभव होगा, जब पंजाब के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक संगठन अमृतपाल सरीखे खतरनाक तत्वों के खिलाफ एक सुर में बोलेंगे। जब मामला राष्ट्रीय सुरक्षा का हो तब फिर संकीर्ण स्वार्थों वाली राजनीति के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। अमृतपाल सिंह की गिरफ्तारी जिस जगह से हुई वो इसलिए भी दिलचस्प है क्योंकि मोगा जिले का रोडे, ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान मारे गए जरनैल सिंह भिंडरांवाले का गाँव है। इसी गाँव में पिछले साल सितंबर में अमृतपाल को वारिस पंजाब दे संगठन का मुखिया बनाया गया था। अमृतपाल सरीखे अराजक, अलगाववादी और विभाजनकारी तत्व की पैरवी करना आग से खेलना है। किसी के लिए भी समझना कठिन है कि विभिन्न पंथिक संगठनों ने उस अराजकता के खिलाफ आवाज उठाने में संकोच क्यों किया, जो अजनाला थाने में अमृतपाल और उसके समर्थकों की ओर से की गई थी। अजनाला में केवल अराजकता ही नहीं की गई थी, बल्कि श्री गुरुग्रंथ साहिब की बेअदबी भी की गई थी। इस बेअदबी की जांच कराने वाले जिस तरह मौन साध कर बैठ गए, उससे वे स्वतः ही कठघरे में खड़े दिख रहे हैं। अमृतपाल को गिरफ्तार करके डिब्रूगढ़ भेज दिया गया है, लेकिन उससे गहन पूछताछ करने की आवश्यकता है, ताकि यह जाना जा सके कि वह दुबई से अचानक पंजाब किसके इशारे पर आया और किनके सहयोग और समर्थन से उसने पंजाब में अराजकता का माहौल बनाना शुरू किया। यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं हुआ कि पंजाब के कुछ संगठन उसे दबे-छिपे रूप में और कुछ खुले तरीके से समर्थन दे रहे थे। वास्तव में इसी कारण वह भिंडरांवाला के गांव जाकर खुद को एक उपदेशक के रूप में पेश करने में सफल रहा। स्पष्ट है कि उसके समर्थकों को भी कठघरे में खड़ा करने की जरूरत है। ■

भारत को मेडिकल टूरिज्म के हब के रूप में स्थापित करने को लेकर जो कोशिशें बीते कुछ सालों से चल रही हैं उनके सुखद परिणाम अब सामने आने भी लगे हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीपद नाईक ने हाल ही में गोवा में आयोजित जी-20 से जुड़े के एक कार्यक्रम में बताया कि पिछले साल भारत में 14 लाख विदेशी पर्यटक मात्र इलाज के लिए भारत आए। जाहिर है, इनमें वे भी शामिल हैं जो रोगियों के साथ आए थे। यह आंकड़ा ही साबित करता है कि भारत की मेडिकल सुविधाओं को लेकर दुनिया में भरोसा बढ़ रहा है।

मेडिकल टूरिज्म में छलांग लगाता भारत

डॉ. हेमा सिंह भगौर

यह तो अभी शुरूआत है। अभी तो भारत को बहुत सी मंजिलों को पार करना है। आप दिल्ली, चंडीगढ़, मुंबई वगैरह के किसी भी प्रतिष्ठित अस्पताल में खुद जाकर देख लें। वहां आपको अनेक विदेशी रोगी और उनके परिजन बैठे मिल जाएंगे। इनमें अफ्रीकी और खाड़ी देशों के रोगियों की तादाद भी खासी रहती है। भारत में ओमन, इराक, मालदीव, यमन, उज्बेकिस्तान, सूडान वगैरह से भी रोगी आ रहे हैं। अगर भारत-पाकिस्तान के संबंध सुधर जाएँ तो हर साल सरहद के उस पार से भी हजारों रोगी हमारे यहां इलाज के लिए आने लगेंगे। कुछ सीरियस मरीज तो अब भी आते हैं। कहना नहीं होगा कि इन रोगियों के भारत में आने से देश को अमूल्य विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है। जब भी एक रोगी भारत आता है तो उसके साथ दो-तीन रोगी की देखभाल के लिए सहयोगी भी आते हैं। ये महीनों होटलों में रहते हैं। भारत में हृदय रोग, अस्थि रोग, किडनी, लिवर ट्रांसप्लांट, आंखों और बर्न इंजरी के इलाज के लिए सबसे अधिक विदेशी रोगी आते हैं। दुनियाभर में बसे भारतवंशी भी अब यहां पर इलाज के लिए आने लगे हैं। राजधानी के अपोलो अस्पताल से जुड़े हुए मशहूर प्लास्टिक सर्जन डॉ. अनूप धीर कहते हैं कि उनके पास हर महीने कुछ विदेशी रोगी इलाज के लिए आ जाते हैं। अगर हमारे यहां भी इलाज सस्ता होता रहे तो यकीनन देश मेडिकल टुरिज्म के क्षेत्र में लंबी सफल छलांग लगाने की स्थिति में होगा। भारत के पास अत्यधिक योग्य चिकित्सा पेशेवर और अत्याधुनिक उपकरण हैं। इसके अलावा, भारत स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता से समझौता किए बिना अमेरिका और ब्रिटेन की तुलना में कम खर्चीला उपचार विकल्प प्रदान करता है। भारत में इलाज का खर्च अमेरिका के मुकाबले करीब एक चौथाई है। यदि हम इस मोर्चे पर संभल कर चले तो फिर इलाज के लिए रोगी थाईलैंड, सिंगापुर, चीन और जापान जैसे देशों की बजाय भारत का ही रुख करने लगेंगे। ये सभी देश विदेशी रोगियों को अपनी तरफ खींचने की चेष्टा तो कर ही रहे हैं। मेडिकल टुरिज्म सालाना अरबों डॉलर का कारोबार है। इस पर भारत को अपनी पकड़ मजबूत बनानी होगी। इस क्षेत्र में भारत के सामने तमाम संभावनाएं हैं। दरअसल अब सारी दुनिया के लोग बेहतर इलाज के लिए अपने देशों

की सरहदों को लांघते हैं। लेकिन, अपने यहाँ भारत के अस्पतालों की साफ-सफाई और नर्सिंग व्यवस्था में सुधार तो करना ही होगा। भारत में इलाज की बेहद कम लागत, उत्तम चिकित्सा तकनीकों और उपकरणों की उपलब्धता के चलते विदेशी मरीज यहां पर इलाज के लिए आते हैं। उन्हें यहां पर भाषा की समस्या से भी ज्यादा जूझना नहीं पड़ता। यहां पर अंग्रेजी बोलने वाले हर जगह मिल ही जाते हैं। यानी विदेशों से आए रोगियों के लिए भारत एक उत्तम स्थान है। कोरोना के आने से पहले भारत में मेडिकल टुरिज्म का बाजार 9 अरब डॉलर यानी 68 हजार 400 करोड़ रुपए तक पहुंचने का अनुमान था। लेकिन, कोरोना ने इस पर ब्रेक लगा दिया। जानकारों का कहना है कि दुनियाभर में हर साल एक-सवा करोड़ से ज्यादा लोग इलाज के लिए दूसरे देशों में जाते हैं। अब हमें मेडिकल टुरिज्म को और मजबूत गति देनी होगी। हमें अपने मेडिकल क्षेत्र में फैली बहुत सी कमियों में सुधार भी करना होगा। हमारे यहां के कुछ सरकारी तथा निजी अस्पतालों में मेडिकल लापरवाही और मरीजों और उनके सम्बन्धियों के साथ दुर्व्यवहार के केस बढ़ते ही जा रहे हैं। निजी अस्पतालों में इलाज भी तेजी से क्रमशः महंगा होता जा रहा है। अब लगभग हर दूसरे दिन किसी अस्पताल में रोगियों के परिजनों और डॉक्टरों में मारपीट के समाचार भी मिलते रहते हैं। डॉक्टरों ने अपनी सुरक्षा के लिए निजी सुरक्षा कर्मी और बाउंसर भी रखने चालू कर दिए हैं। कहना न होगा कि डॉक्टरों और रोगियों के बीच झगड़ों के समाचार सुनकर विदेशी भारत में इलाज के लिए आने से पहले दस बार सोचते होंगे। देश के मेडिकल टुरिज्म में नई जान फूंकने के लिए केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य, विदेश, गृह और पर्यटन मंत्रालयों को मिल-जुलकर पहल करनी होगी। विदेशी रोगियों को तुरंत वीजा सुविधा देने के साथ-साथ यहां पर उन अस्पतालों पर भी नजर रखने की आवश्यकता है, जहां पर ये इलाज के लिए आते हैं। विदेशी रोगियों को बिचौलियों से भी बचाना होगा। इसके साथ ही, विदेशी रोगियों का इलाज कुछ बड़े सरकारी अस्पतालों में ही करने के लिए अलग विंग भी शुरू किया जा सकता है। दिल्ली के एम्स या राम मनोहर लोहिया जैसे अस्पतालों में भी विदेशी रोगियों का इलाज हो सकता है। इनसे इलाज के बदले में मार्केट दर से पैसा लिया जाए। इस तरह के कदम उठाकर यह सरकारी अस्पताल अपने को आत्म निर्भर बनाने की स्थिति में भी होंगे। विदेशी रोगियों को एम्स तथा आरएमएल से काबिल डॉक्टर तो सारे संसार में मुश्किल से ही मिलेंगे। अगर बात मेडिकल टुरिज्म से हटकर करें तो भारत के टुरिज्म सेक्टर में आगे बढ़ने की अपार संभावनाएं हैं। यह सबको पता है। हमारे यहां सब कुछ तो है। यहां पर घने जंगलों में विचरण करते जानवर हैं, समुद्री तट हैं, पर्वत हैं, नदियां हैं मंदिर, मस्जिद, बुद्ध विहार, गिरिजाघर हैं। हमारे देश से बेहतर और विविध डिशेज कहीं हो ही नहीं सकतीं। बुद्ध और गांधी के भारत में कौन सा सच्चा घुमक्कड आना नहीं चाहेगा। भारत में विदेशी पर्यटकों की आवक तो हर सूरत में बढ़ानी होगी। हमारे यहां पर जितने महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं, उस अनुपात में हमारे देश में पर्यटक नहीं आते। भारत में ताजमहल, गुलाबी नगरी जयपुर, पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग, असीमित जल का क्षेत्र कन्याकुमारी, पृथ्वी का स्वर्ग कश्मीर समेत अनगिनत अहम पर्यटन स्थल हैं। इनके अलावा भारत में भगवान बुद्ध से जुड़े अनेक अति महत्वपूर्ण स्थल हैं। भारत में बौद्ध के जीवन से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थलों के साथ एक समृद्ध प्राचीन बौद्ध विरासत है। हम बौद्ध की भूमि होने के बावजूद दुनिया भर के बौद्ध अनुयायियों को आकर्षित करने में क्यों असफल रहे। भारतीय बौद्ध विरासत दुनिया भर में बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए बहुत रुचिकर है। बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। भगवान बौद्ध ने कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। इतना सब कुछ होने के बावजूद हमारे यहां विदेशी पर्यटकों का आंकड़ा सालाना तीन करोड़ तक भी नहीं पहुंचता। बेशक, ये विचारणीय बिन्दु है। इस पर सबको सोचना होगा। ■

प्रेग्नेंसी में इन फलों को अपनी डाइट में करें शामिल

मां और बच्चा दोनों रहेंगे स्वस्थ

प्रेग्नेंसी के दौरान कई फल बच्चे के विकास के लिए काफी सहायक होते हैं। वहीं कुछ फल ऐसे भी होते हैं जो मां और बच्चे दोनों के लिए नुकसानदायक होते हैं। इसलिए अपनी डाइट में इन फलों को शामिल नहीं करना चाहिए।

स्नेहलता शर्मा

किसी भी महिला के लिए प्रेग्नेंट होना उसके जीवन के सुखद अनुभवों में से एक होता है। हालांकि गर्भावस्था के दौरान मां और बच्चे को विशेष देखभाल की जरूरत होती है। हर महिला अपने लिए सुरक्षित और स्वस्थ गर्भावस्था की चाह रखती है। लेकिन इस दौरान सबसे बड़ी समस्या होती है वह प्रेग्नेंट महिलाओं की डाइट में कौन-से फ्रूटस शामिल करना चाहिए। साथ ही किन फलों के सेवन से उन्हें परहेज करना चाहिए।

पपीता

हालांकि पपीता पोषक तत्वों से भरपूर होता है। पपीता में कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है। साथ ही यह सेहत के लिए भी हेल्दी फल होता है। लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान पपीते का सेवन करने से बचना चाहिए। पपीते में लैक्टेस मौजूद होता है। जिसके कारण गर्भाशय में संकुचन, रक्तस्राव और यहां तक कि मिसकैरेज भी हो सकता है। इसलिए गर्भावस्था में पके व कच्चे पपीते के सेवन से परहेज करना चाहिए।

अनानास

अनानास एक बेहद स्वादिष्ट और रसीला फल होता है। यह फल सेहत के लिए भी अच्छा होता है। लेकिन गर्भावस्था में इस फल के सेवन से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि अनानास में ब्रेमलीन एंजाइम मौजूद होता है। जिसकी वजह से समय से पहले प्रसव हो सकता है। इसलिए गर्भावस्था के दौरान अनानास खाने से बचना चाहिए।

अंगूर

आमतौर पर प्रेग्नेंट महिलाओं को अपनी डाइट में अंगूर को भी नहीं शामिल करना चाहिए। अंगूर में रेस्वेराट्रोल नामक एक यौगिक पाया जाता है। यह महिलाओं की सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है। इसके सेवन से मां और बच्चे दोनों की सेहत पर गंभीर असर पड़ सकता है।

केला

केले का सेवन गर्भावस्था के दौरान काफी फायदेमंद माना जाता है। केला कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होता है। यह महिलाओं को ऊर्जावान बनाए रखने में मदद करता है। केले को आप अपनी डाइट में कई तरीके से शामिल कर सकते हैं। हालांकि अगर आपको एलर्जी या डायबिटीज की समस्या है तो प्रेग्नेंसी के दौरान आपको केला का सेवन करने से पहले एक्सपर्ट्स से सलाह जरूर लेनी चाहिए।

सेब

गर्भावस्था के दौरान सेब का सेवन काफी फायदेमंद माना जाता है। सेब में पोटैशियम और आयरन पर्याप्त मात्रा पाई जाती है। जो महिलाओं के शरीर में पोषक तत्वों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है।

संतरा

संतरे में भरपूर मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। इसके अलावा सेब में फोलेट भी पाया जाता है। यह गर्भ में पलने वाले बच्चे के विकास में सहायक होता है। ■

डिस्क्लेमरः इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह लें।

मिनटों में दूर होगा होंठों का कालापन

मुलायम होंठों के लिए आजमाएं ये घरेलू नुस्खे

कई बार लो क्वालिटी के लिप बाम इस्तेमाल करने से हमारे होंठों का रंग काला पड़ जाता है। अगर आप भी चाहती हैं कि आपके होंठों का रंग नेचुरली पिंक हो जाएं तो आप इन असरदार घरेलू नुस्खों को इस्तेमाल कर सकती हैं।

नीतू शर्मा

होंठ हमारे चेहरे की खूबसूरती को बरकरार रखने का काम करते हैं। लेकिन कई बार होंठों का रंग काला पड़ने लगता है। काले होंठों के कारण हमारे चेहरे की खूबसूरती कम होने लगती है। ऐसे में अगर आपके होठों का रंग भी किसी कारण अब गुलाबी नहीं रहा है। ऐसे में आपके मार्केट में मिलने वाले हजारों लिप बाम का भी उपयोग किया होगा। लेकिन इसके बाद भी अगर आपके होठों का रंग नहीं बदला और वह काले होते जा रहे हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए गुलाबी होंठ पाने के कुछ असरदार घरेलू नुस्खों के बारे में बताने जा रहे हैं। साथ ही आपको यह भी बताएंगे कि आप किस तरह से अपने होंठों का ख्याल रख सकती हैं। जिससे कि आपके होंठ नेचुरली गुलाबी रहें। आइए जानते हैं इन असरदार घरेलू नुस्खों के बारे में...

क्यों काले होते हैं होंठ

- लो क्वालिटी लिपस्टिक का उपयोग करने से भी कई बार हमारे होंठों का रंग काला पड़ने लगता है।
- वहीं बॉडी में आयरल की मात्रा बढ़ने पर भी होंठों का रंग बदलने लगता है। इसलिए आपको अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखना चाहिए
- त्वचा पर सूर्य की हानिकारक किरणें पड़ने के कारण शरीर में अधिक मेलानिन बनने लगता है। जिसकी वजह से हाइपरपिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है।
- स्मोकिंग करने से भी होंठों का रंग काला पड़ने लगता है। ऐसे में अगर आप भी चाहती हैं कि आपको होंठ हमेशा गुलाबी बने रहें। तो आपको स्मोकिंग से दूरी बनानी चाहिए।
- इसके अलावा हार्मोन के उतार-चढ़ाव के कारण भी होंठों का रंग बदलने लगता है।

चुकंदर आएगा काम

- चुकंदर का सेवन करने से न सिर्फ आप सेहतमंद रहते हैं। बल्कि इसका चेहरे पर भी इस्तेमाल किया जाता है। बता दें कि चुकंदर का जूस गुलाबी होंठों के लिए भी फायदेमंद होता है।

सामग्री

- चीनी- 1 चम्मच
- चुकंदर का जूस- 2-3 चम्मच

ऐसे करें इस्तेमाल चुकंदर आएगा काम

- सबसे पहले चुकंदर को पानी से धो लें। फिर इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर मिक्सी में डालकर जूस बना लें।
- अब इस जूस में एक चम्मच चीनी डाल दें।

फिर रात में सोने से पहले

- चुकंदर और चीनी के इस जूस को अपने होंठों पर अप्लाई करें
- कुछ देर मसाज करने के बाद ऐसे ही सो जाएं।
- सुबह उठने पर होंठों को साफ कर लें।
- इसका रोजाना इस्तेमाल करने से जल्द ही आपके काले पड़े होंठ गुलाबी होने लगेंगे।

खीरा आएगा काम

- होंठों पर खीरा के उपयोग से यह हाइड्रेट रहेंगे, बल्कि गुलाबी होंठों के लिए भी खीरा काम आएगा।

ऐसे करें इस्तेमाल

- सबसे पहले एक खीरे को धोकर उसे मिक्सी में पीस लें।
- अब एक हल्के कपड़े की मदद से खीरे का जूस निकाल लें।
- इसके बाद खीरे के जूस को फ्रिज में ठंडा होने के लिए थोड़ी देर रख दें।
- ठंडा होने के बाद जूस को रूई की मदद से अपने होंठों पर लगाएं।
- करीब आधे घंटे तक होंठों पर लगा रहने के बाद होंठों को साफ पानी से धो लें।
- इस प्रक्रिया को रोजाना अपनाने से धीरे-धीरे आपके होंठों का रंग बदलने लगेगा। ■

हाय-हाय यह गर्मी

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

कुछ कहावतें समय के साथ बदलती रहती हैं। जैसे तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा। लेकिन पंखे की तीन पत्तियाँ तीन तिगाड़ा तो कतई नहीं हो सकती। गर्मी के दिनों में वो न हो तो आदमी का बिगाड़ा हो सकता है। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तिकड़ी दुनिया चलाती है, ठीक उसी तरह पंखे की तीन पत्तियाँ मेरे घर को। पंखे की स्पीड पाँच की हो तो कहना ही क्या, बिखरे हुए अखबार के पन्नों की तरह सब कुछ फड़फड़ाने लगता है। पंखा पुराण में नाना प्रकार की कष्ट लीलाएँ वर्णित हैं। पंखा न चले तो बच्चे घर से भाग जाते हैं। सब्जियाँ खराब हो जाती हैं। गर्मी में जिन कपड़ों को धोने के लिए पांच मिनट लगते हैं, वही पसीने से तर-बतर होने के लिए दो मिनट। कभी-कभी तो लगता है कि मैगी नूडल्स ने दो मिनट का फार्मूला यहीं से चुराया है।

पंखे के बंद होते मैं इस तरह छटपटाने लगता हूँ जैसे बिन पानी मछली। वैसे मछलियाँ बरसात के दिनों में भी सुरक्षित नहीं होती। भूख के आगे सभी अभागे हैं। कभी-कभी सोचता हूँ यह पंखा न होता तो क्या होता? न मेरी शादी होती, न मेरे बच्चे। या यूँ कहिए कि दुनिया ही नहीं होती। बहरहाल, पंखे के बंद होते ही, सारा-का-सारा माहौल अचानक से पसीने का पानीपत बन जाता है। कभी आप बगलों को खुजलाते हैं तो कभी सिर। कभी पीठ को खुजलाते हैं तो कभी कुछ। ऐसे समय में हमें अपने शरीर पर बड़ा पछतावा होता है। भगवान से प्रार्थना करते दिखाई देते हैं कि यह गर्मी का मौसम क्यों बनाया? बनाया तो बनाया बदन खुजलाने के लिए और दो-चार हाथ क्यों नहीं दिए? सच कहें तो पंखे का बंद होना समस्त मानवजाति के लिए अभिशाप बन जाता है। पंखा है तो हवा है। हवा है तो वाह-वाह है। नहीं तो आह-आह है।

गर्मी के दिनों में वैसे तो सब कुछ जल्दी पकता है, लेकिन दिमाग का नंबर पहले आता है। इन दिनों में सरल वाक्यों का प्रयोग श्रेष्ठ माना जाता है। संयुक्त अथवा मिश्रित वाक्यों से खोपड़िया कुछ ज्यादा ही पक जाती है। ऐसे में मनुष्य गलतियों का पुतला वाली उक्ति को चरितार्थ करने में अपना सब कुछ लगा देता है। यही कारण है कि जब कोई किसी के घर जाता है तो उसके लिए टेबल वाला तीन पत्तियों का झेलनदार तीव्र गति में दौड़ा दिया जाता है। उसके बाद पानी, शरबत और आवभगत की अन्य सामग्री दी जाती है। गर्मी की दुपहरिया में जब सूर्य सिर को भूमध्य रेखा समझ शून्य डिग्री पर प्रयाण करता है तब सुनने, समझने और बोलने की क्षमता समाप्त हो जाती है। डैड डेड की तरह, मम्मी मिस्त्र की मम्मी की तरह दिखाई देने लगते हैं।

गर्मी के दिनों में बिजली चली जाए तो सबके मुँह से एक ही वाक्य निकलता है — बिजली कब आएगी? गर्मी के दिनों में बिजली को छुप्पम-छुपाई खेलने का बड़ा शौक होता है। आदमी जब तक जीने की आस न छोड़ दे तब तक उसके दर्शन नहीं होते। थोड़ी सी हवा भी कहीं से आ जाए तो मानो ऐसा लगता है जैसे पंखा चल पड़ा। अब भला पंखा सरकार थोड़े न है कि भेड़-बकरियों के वोट से चल पड़ेगा। इसके लिए बिजली की आवश्यकता पड़ती है, जो कि इस समय मंहगाई को छोड़कर कहीं दूसरी जगह दिखाई नहीं देती। मैं तो कहूँ महंगाई की बिजली से सपनों का पंखा चलाइए और इस जिंदगी से छुटकारा पाइए। ■

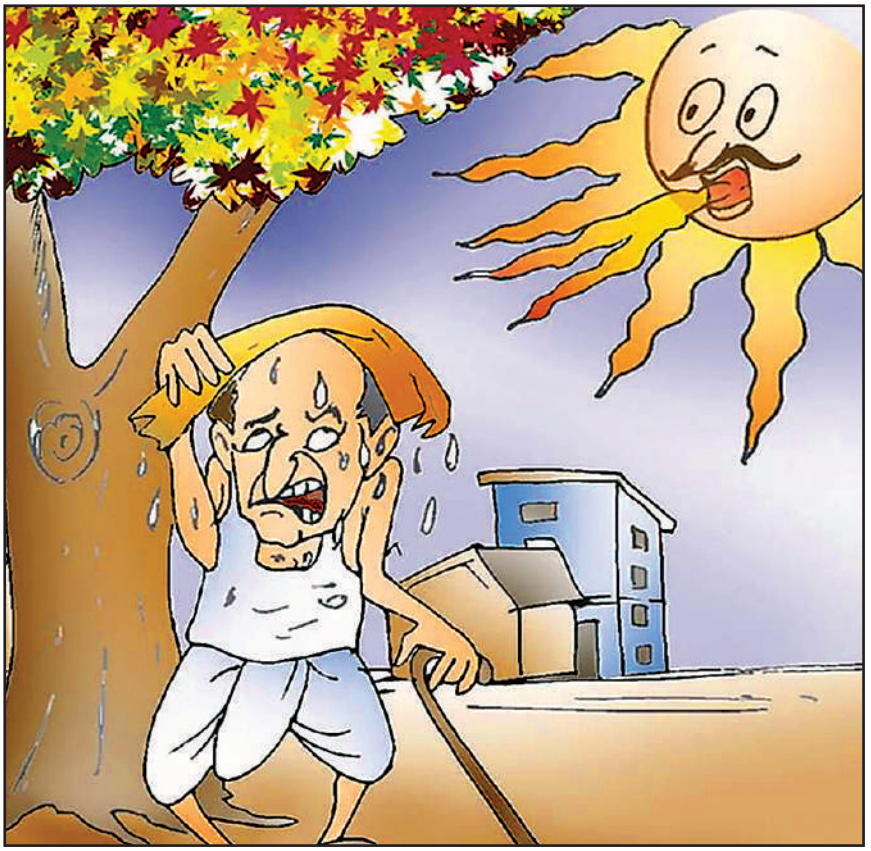

पंखे के बंद होते मैं इस तरह छटपटाने लगता हूँ जैसे बिन पानी मछली। वैसे मछलियाँ बरसात के दिनों में भी सुरक्षित नहीं होती। भूख के आगे सभी अभागे हैं। कभी-कभी सोचता हूँ यह पंखा न होता तो क्या होता? न मेरी शादी होती, न मेरे बच्चे।

गर्मियों में स्किन की देखभाल के लिए इस तरह बनाएं टोनर

गर्मी के मौसम में आपकी स्किन को अतिरिक्त ठंडक और ताजगी की आवश्यकता होती है और ऐसे में खीरे का इस्तेमाल करना यकीनन एक अच्छा विचार है। खीरे से टोनर बनाने के लिए सबसे पहले खीरे को ब्लेंडर में ब्लेंड कर लें।

मिताली जैन

स्किन की देखभाल का सबसे पहला नियम होता है कि आप अपनी स्किन और मौसम को ध्यान में रखते हुए स्किन केयर प्रोडक्ट्स का चयन करें। यूं तो मार्केट कई तरह के स्किन केयर प्रोडक्ट्स से अटा पड़ा है, लेकिन अगर स्किन की देखभाल के लिए घर पर ही इन प्रोडक्ट्स को तैयार किया जाए तो इसे सबसे अच्छा माना जाता है। यह ना केवल पॉकेट फ्रेंडली होता है, बल्कि नेचुरल होने के कारण इनसे स्किन को किसी तरह का नुकसान भी नहीं होता है। चूंकि अब गर्मियों का मौसम हैं तो ऐसे में आप स्किन की केयर के लिए घर पर ही टोनर बना सकते हैं। आप कई अलग-अलग इंग्रीडिएंट का इस्तेमाल करते हुए इसे बनाएं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको समर में स्किन टोनर तैयार करने के आसान तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

ग्रीन टी टोनर

यह स्किन टोनर एजिंग स्किन के लिए काफी अच्छा है। एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण ग्रीन टी फ्री रेडिकल्स को बेअसर कर सकती है और स्किन को यंगर बनाती हैं। इसे बनाने के लिए आप सबसे पहले एक कप ग्रीन टी तैयार करें। अब आप इसे ठंडा होने दें। फिर इसमें टी ट्री एसेंशियल ऑयल की पांच से छह बूंदें डालकर मिक्स करें। अब आप इसे एक स्प्रे बोतल में डालें और फ्रिज में स्टोर करें।

खीरे से बनाएं टोनर

गर्मी के मौसम में आपकी स्किन को अतिरिक्त ठंडक और ताजगी की आवश्यकता होती है और ऐसे में खीरे का इस्तेमाल करना यकीनन एक अच्छा विचार है। खीरे से टोनर बनाने के लिए सबसे पहले खीरे को ब्लेंडर में ब्लेंड कर लें। अब आप ब्लेंड किए हुए खीरे को एक साफ कपड़े से छान लें। खीरे के रस में रुई या रुई डुबोएं और इसे अपने पूरे चेहरे पर लगाएं। 10 से 15 मिनट के बाद साफ पानी से चेहरा धो लें।

एलोवेरा जेल से बनाएं टोनर

गर्मी के मौसम में एलोवेरा जेल से बेहतर दूसरा कोई स्किन केयर इंग्रीडिएंट नहीं हो सकता है। यह ना केवल आपकी स्किन को ठंडक पहुंचाता है, बल्कि इसकी हीलिंग प्रॉपर्टीज भी आपकी स्किन को बेदाग बनाने में मदद करती है।

एलोवेरा जेल से टोनर बनाने के लिए एक बाउल में आधा कप एलोवेरा जेल और आधा कप रोज वाटर डालकर मिक्स करें।

जब यह अच्छी तरह ब्लेंड हो जाए तो आप इसे बोतल में डालें और फ्रिज में स्टोर करें। ■

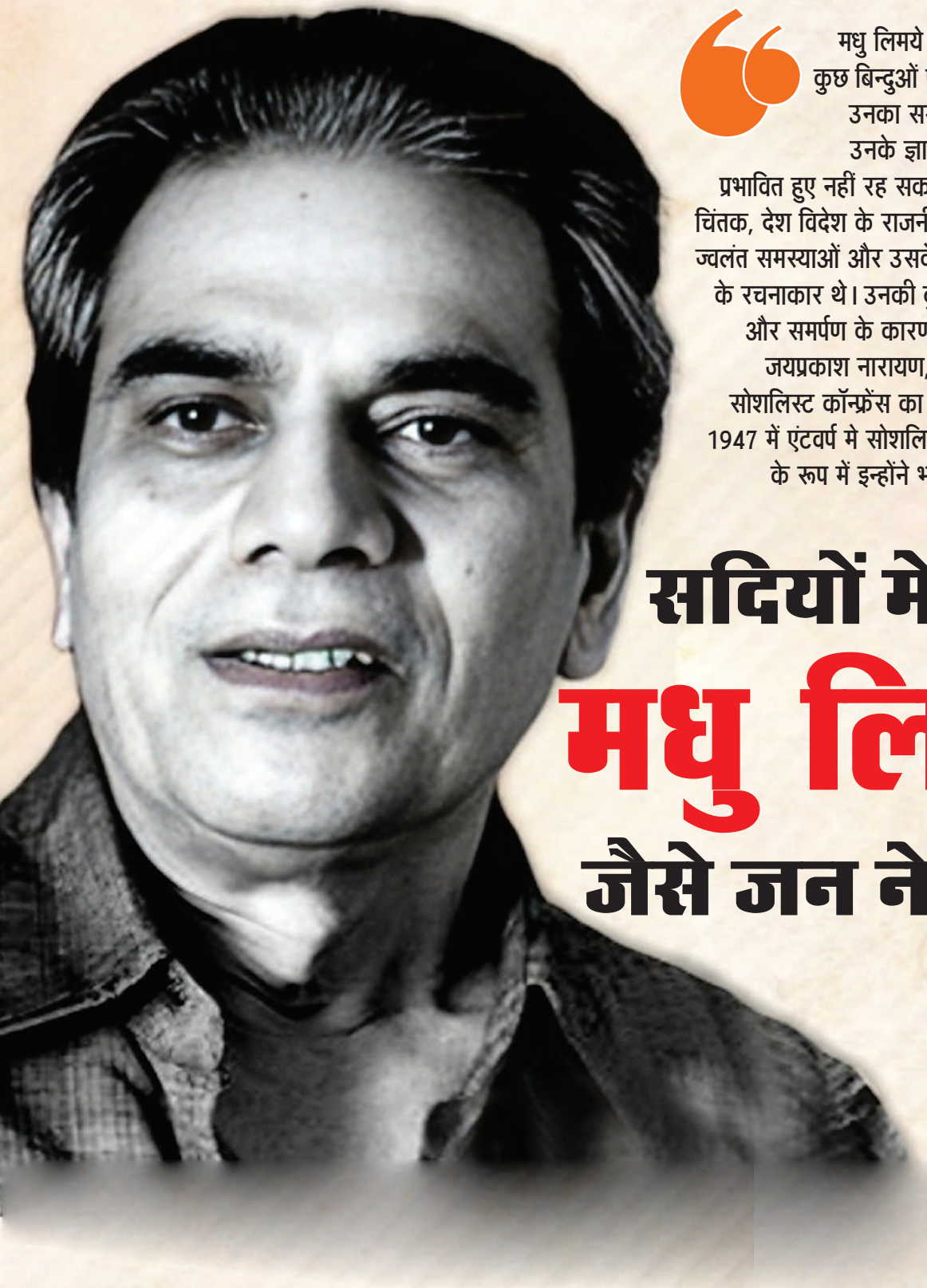

मधु लिमये उन नेताओं में से थे जिनसे कुछ बिन्दुओं पर मतभेद होने पर भी आप उनका सम्मान करना नहीं छोड़ पाते। उनके ज्ञान और सादगी से आप बिन प्रभावित हुए नहीं रह सकते थे। वे एक उद्भट् विद्वान, चिंतक, देश विदेश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, ज्वलंत समस्याओं और उसके निदान पर विपुल साहित्य के रचनाकार थे। उनकी बुद्धिमत्ता, प्रखरता, ध्येयनिष्ठा और समर्पण के कारण 25 वर्ष के मधु लिमये को जयप्रकाश नारायण, डॉक्टर लोहिया ने एशियन सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस का सचिव बनाकर रंगून भेजा। 1947 में एंटवर्प मे सोशलिस्ट इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में के रूप में इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

सदियों में होते हैं मधु लिमये जैसे जन नेता पैदा

आशीष कुमार

मधु लिमये मूल रूप से पुणे के थे। एक मराठी व्यक्ति का बिहार से चार बार चुनाव जीतना अपने आप में अनोखा है। राज्यसभा में ऐसे कई दूसरे नेता हुए हैं, लेकिन लोकसभा में ऐसे उदाहरण कम ही देखे गए हैं। लिमये का बचपन महाराष्ट्र में बीता, उनकी पूरी पढ़ाई भी वहीं से हुई, वो महाराष्ट्र की राजनीति में भी सक्रिय थे। लिमये समाजवादी विचारधारा से आते थे और गोवा लिबरेशन जैसे अनेक आंदोलनों का भी हिस्सा बने थे। लेकिन जब राष्ट्रीय राजनीति में उन्होंने कदम रखा तो चुनाव लड़ने के लिए बिहार ही चुना। पहली बार वो 1964 में मुंगेर से उप चुनाव जीतकर संसद पहुंचे थे। 1964 में, सोशलिस्ट पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का विलय हुआ और यूनाइटेड सोशलिस्ट पार्टी बनी थी। मधु लिमये पहली बार यूनाइटेड सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर लोकसभा गए थे। इस जीत के बाद, वह यूनाइटेड सोशलिस्ट पार्टी के संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष भी बने। मधु लिमये के दिल में बसता था बिहार जहाँ से लोकसभा में पहुंचे थे। उन्हें बिहार के समाज और संस्कृति की गहरी समझ थी। मधु लिमये ने एक बार बताया था कि गर्मियों में बिहारियों को लगातार मीठे आम मिल जाएं तो वह तृप्त हो जाते है। इसी क्रम में वे जदार्लु आम के स्वाद पर बोले। उन्होंने बताया था कि जदार्लु आम का स्वाद और खुशबू अद्वितीय होती है। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा, तीन विदेशी साम्राज्यों ब्रिटिश, पुर्तगाली, नेपाली हुकूमत की बर्बरता के खिलाफ लड़कपन से ही जूझने वाले मधु लिमये सच्चे गांधीवादी थे। उन्हें 1940 में विश्व युद्ध के समय 18 वर्ष की उम्र में अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ भाषण देने के कारण एक साल के सश्रम कारावास की सजा मिली। भारत छोड़ो आंदोलन मे 1943 में गिरफ्तार होने पर 1945 में जेल से छूटे। 1955 में गोवा मुक्ति आंदोलन में भाग लेने के कारण 12 वर्ष की सजा सुनाई गई। 1958 में सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष बने। उन्होंने नागरिक आजादी के हक में, गैर बराबरी, जुल्म, अन्याय, जातिवाद, सांप्रदायिकता के खिलाफ तथा समाजवादी व्यवस्था की स्थापना में अपनी जिंदगी खपा दी। जन सवालों के लिए संघर्ष करने के कारण 1959 में हिसार (पंजाब) पहुंचे और 1968 में लखीसराय (बिहार) तथा 1970 में मुंगेर, बिहार। भारतीय संसद के इतिहास में मधु जी ने एक और ऐतिहासिक कार्य 1975 में आपातकाल लागू होने के बाद संसद की अवधि 5 साल के स्थान पर 6 साल करने को असंवैधानिक घोषित करते हुए, संसद सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था।

वे सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, त्याग, सादगी मितव्ययिता के उच्च मानदंड, के प्रतीक भी हैं। उन्होंने समाजवादी दर्शन, सिद्धांत, विचारों, नीतियों को न केवल गढ़ा उसको अमलीजामा देने, हजारों कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने और उस मार्ग पर

चलने के लिए तमाम उम्र अलख भी जगाई। मधु जी की जीवन संगिनी आदरणीय चंपा लिमये के योगदान और त्याग को भी हम कभी भुला नहीं सकते। मधु लिमये के राजधानी के नार्थ एवेन्यू, वेस्टर्न कोर्ट और पंडारा रोड के घरों में शाम को अवश्य ही बैठकी जमती। उसमें दिल्ली यूनिवर्सिटी तथा जेएनएयू के अध्यापक, विद्यार्थी, संपादक और उनके अन्य मित्र हुआ करते थे। उनके घर में आने वाले अतिथियों को चाय चंपा जी ही बनाकर पिलाया करती थीं। गर्मियों में सुराही का पानी पीकर लोग अपनी प्यास बुझाते थे। सन 1995 में मधु जी की मृत्यु के बाद पंडारा रोड का घर खाली कर दिया गया। चंपा जी मुंबई चली गईं अपने बेटे के पास। इस बीच, पंडारा रोड में रहने वाले लिमये जी के नाम पर एक सड़क का नामकरण चाणक्यपुरी इलाके में हुआ। यह बात समझ से परे है। मधु जी के नाम पर जनपथ, पंडारा रोड या लोधी रोड के आसपास ही किसी सड़क का नाम रखा जा सकता था। मधु लिमये चार बार लोकसभा सांसद रहे पर स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व सांसद की पेंशन कभी नहीं ली। लेखन कार्य के मेहनताने से ही ज़िंदगी चलाते थे। सिद्धांत से कभी समझौता नहीं किया। दो बार विदेश मंत्री बनने का प्रस्ताव ठुकराया। लोकसभा चुनाव हारने पर राज्यसभा में जाने से इंकार किया। मधु जी को सत्ता का मोह विचलित नहीं कर सका। वे महात्मा गांधी, आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, डॉ राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, युसूफ मेहर अली की परंपरा के वारिस की भूमिका को भी आपने बखूबी निभाया। उन्होंने अपने जीवन में "न्यूनतम लिया अधिकतम दिया और श्रेष्ठतम जिया"। मधु जी के सरकारी निवास में भारत के तीन-तीन प्रधानमंत्री बने नेता चौधरी चरण सिंह, वीपी सिंह और चंद्रशेखर अक्सर सलाह मशवरा करने के लिए आते थे। मुख्यमंत्रियों, मंत्रियों, संसद सदस्यों, एमएलओ की तो कोई गिनती ही नहीं थी। मधु जी को कला और संगीत की भी गहरी समझ थी। उनके पास भीमसेन जोशी, कुमार गंधर्व, मलिकार्जुन मंसूर, डागर बंधु, जितेंद्र अभिषेकी, गंगूबाई हंगल, यामिनी कृष्णमूर्ति, सोनल मानसिंह, उमा शर्मा जैसे अनेकों कलाकार संगीत की बारीकियों पर चर्चा करने के लिए आया करते थे। मधु जी के घर में सरकारी बैंत का फर्नीचर बिछा रहता था। उनके पास एक पुराने किस्म का एक टेप रिकॉर्डर था।

आनंद के हिलोरे लेने के लिए वे अपने मनपसंद कैसेट को लगाकर शास्त्रीय संगीत सुनते थे। कई बार उनके मित्र, अनुयायी उनसे शिकायत करते कि मधु जी बड़ी गर्मी है, हम आपके लिए एयर कंडीशन ला देते हैं, फ्रिज भिजवा देते हैं। परंतु मधु लिमये की प्यास और चाहत कुछ अलग ही थी। उन्होंने लिखा है "शेक्सपियर की सभी रचनाओं, महाभारत और ग्रीक दुखांत रचनाओं के साथ मुझे एकांत आजीवन कारावास भुगतने में खुशी होगी। और अगर जीवन के अंत तक मुझे यह अवसर नहीं मिला तो संत ज्ञानेश्वर की रचनाओं को पढ़ने की मेरी प्यास अतृप्त रहेगी। बहरहाल, मधु जी के संघ की सोच से कुछ बिन्दुओं पर मतभेद थे। संघ की भी उनसे कुछ विषयों पर असहमति थी। लोकतंत्र में यह सब सामान्य है और इसका स्वागत होना चाहिए। पर मधु लिमये भारत की राजनीति को अपनी ईमानदारी, ज्ञान और सादगी से प्रभावित करते रहेंगे। ■

डिजिलॉकर क्या है?

समर्थित दस्तावेज, साइन अप और इसका उपयोग कैसे करें?

डिजिलॉकर एक क्लाउड-आधारित डिजिटल वॉलेट है जहां व्यक्ति अपने कानूनी दस्तावेज रख सकते हैं। यह लोगों को पैन कार्ड, टीकाकरण प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, लीगल दस्तावेज, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र आदि जैसे दस्तावेजों को अपलोड और एक्सेस करने की अनुमति देता है।

जे. पी. शुक्ला

वाहन अधिनियम लागू होने के बाद से लोग हर समय अपने मूल दस्तावेज साथ रखने लगे हैं। लेकिन डिजीलॉकर और एमपरिवहन ऐप्स ने अब इसे काफी आसान बना दिया है। हाल ही में सरकार ने एक बयान जारी किया और कहा कि नियमों के इस संशोधन के साथ अब लोगों के लिए संबंधित कागजी दस्तावेजों को ले जाना आवश्यक नहीं है। हालांकि इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों को मूल दस्तावेजों के साथ कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त माना जाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के प्रावधानों के अनुसार यह आवश्यक है कि वे उपयोगकर्ता द्वारा संचालित डिजीलॉकर या एमपरिवहन ऐप पर उपलब्ध हों। इसका मतलब है कि आपको बस अपने मोबाइल में ऐप डाउनलोड करना है और अब भौतिक दस्तावेज ले जाने की जरूरत नहीं है। आपके इन ई-दस्तावेजों को कानूनी तौर पर मूल दस्तावेजों के बराबर नहीं माना जाएगा जब तक कि कोई इसे डिजिलॉकर पर अपलोड नहीं करेगा। लेकिन क्या हम जानते हैं कि वास्तव में डिजिलॉकर क्या है? हम अपने मूल दस्तावेज कैसे इस पर अपलोड कर सकते हैं और कैसे इसे सुरक्षित रख सकते हैं? अगर नहीं तो घबराने की जरूरत नहीं है। हम आपको डिजिलॉकर सिस्टम के बारे में विस्तृत परिचय देंगे।

डिजिलॉकर क्या है?

डिजिलॉकर एक क्लाउड-आधारित डिजिटल वॉलेट है जहां व्यक्ति अपने कानूनी दस्तावेज रख सकते हैं। यह लोगों को पैन कार्ड, टीकाकरण प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, लीगल दस्तावेज, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र आदि जैसे दस्तावेजों को अपलोड और एक्सेस करने की अनुमति देता है। डिजिलॉकर डिजिटल इंडिया द्वारा की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय (MeitY) भारत के प्रत्येक नागरिक को यह सेवा प्रदान करता है। लोग इस डिजिटल लॉकर में संग्रहीत दस्तावेजों का उपयोग ई-दस्तावेजों की प्रामाणिकता को साझा करने और सत्यापित करने के

लिए कर सकते हैं। डिजिलॉकर पर सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आधार नंबर की आवश्यकता होती है। Digilocker ऐप पर साइन अप करने के लिए भी आधार नंबर जरूरी होता है।

डिजिटल लॉकर का उपयोग कैसे करें?

DigiLocker में अकाउंट बनाने के दो तरीके हैं। पहला- इसे आधार ओटीपी से और दूसरा फिंगरप्रिंट के जरिए बनाया जा सकता है। तरीका इस प्रकार है-

- डिजिटल लॉकर को आधिकारिक वेबसाइट पर एक्सेस करें: https://digitallocker.gov.in/
- वेबसाइट पर साइन इन बटन पर क्लिक करें
- अपना आधार नंबर दर्ज करें
- आपको दो विकल्प मिलेंगे: OTP या फिंगरप्रिंट का उपयोग करें
- ओटीपी का प्रयोग करते समय दिए गए विकल्प पर इसे दर्ज करें
- वैलिडेट ओटीपी बटन पर क्लिक करें, फिर यूजरनेम और पासवर्ड बनाएं
- प्रमाणीकरण के लिए फिंगरप्रिंट का उपयोग करना: सबसे पहले 'फिंगरप्रिंट का उपयोग करें' विकल्प का चयन करना होगा
- इसके लिए फिंगरप्रिंट स्कैन करने के लिए आधार स्वीकृत बायोमेट्रिक की जरूरत होगी
- अपने मोबाइल नंबर के बजाय आधार के साथ विकल्प का उपयोग करके साइन अप करने के लिए फिंगरप्रिंट बटन पर क्लिक करें
- स्कैनर से आपका फिंगरप्रिंट लिया जाएगा
- सभी सत्यापन प्रक्रिया के बाद उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड बनाने के लिए अंतिम पुष्टि प्राप्त होगी
- ऊपर दिए गए किसी भी तरीके से यूजरनेम और पासवर्ड बनाने के बाद कोई भी डिजिटल लॉकर इंडिया अकाउंट में आसानी से प्रवेश कर सकता है
- सफल लॉगिन के बाद आपको 'मेरा प्रमाणपत्र पृष्ठ' मिलेगा
- अंत में आप अपने दस्तावेजों को अपलोड करने में सक्षम हो जायेंगे और इसके बाद इसे सुरक्षित रख सकेंगे।

डिजिलॉकर के लाभ

- डिजिलॉकर दस्तावेजों पर सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा डिजिटल हस्ताक्षर किए जाते हैं।
- दस्तावेज सीधे राष्ट्रीय रजिस्टर डेटाबेस से लिए जाते हैं।
- इसमें रिकॉर्ड रखने के उद्देश्यों के लिए एक टाइमस्टैम्प होता है।
- यह डिजिटल दस्तावेज भारतीय आईटी अधिनियम 2000 के तहत कानूनी रूप से मान्य दस्तावेज है।
- डिजिलॉकर सेवा आपके विशिष्ट आधार नंबर से जुड़ी हुई होती है।
- यह 1GB तक का पर्सनल स्पेस स्टोर कर सकता है।
- डिजिलॉकर की मदद से दस्तावेजों पर ई-हस्ताक्षर कर सकते हैं।
- मूल दस्तावेजों को ई-दस्तावेजों में परिवर्तित कर प्रामाणिकता प्रदान करता है ।
- डिजिलॉकर सरकार से संबंधित सभी दस्तावेजों को सुरक्षित रखने का सबसे अच्छा तरीका है।
- दस्तावेजों का भौतिक उपयोग कम होता है।
- कोई भी डिजिटल हस्ताक्षर को ऑनलाइन सेव कर सकता है।

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

क्या है स्वर्ण मुद्रीकरण योजना और क्या है इसके लिए पात्रता

स्वर्ण मुद्रीकरण योजना के नियमों के अनुसार सोने-आभूषण, बुलियन, कलाकृतियों को बैंक में जमा करना आवश्यक होता है और बदले में बैंक इसकी शुद्धता का परीक्षण करेगा। एक बार सोने के गहनों की शुद्धता का पता चलने के बाद वे सोने के गहनों को पिघला देंगे और इसे बुलियन या सोने के सिक्कों में बदल देंगे।

जे. पी. शुक्ला

सरकार की स्वर्ण मुद्रीकरण योजना आपको भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा निर्दिष्ट बैंक के साथ अपना रखा हुआ सोना जमा करने और उस पर ब्याज अर्जित करने की अनुमति देती है। यह बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट की तरह काम करता है। जीएमएस की अवधि के आधार पर कोई व्यक्ति प्रति वर्ष 2.5% तक ब्याज अर्जित कर सकता है। यह योजना सरकार द्वारा 2015 में लोगों द्वारा अपने घरों और बैंक लॉकरों में रखे निष्क्रिय सोने को उत्पादक उपयोग में लाने के इरादे से शुरू की गई थी।

GMS के तहत जमा किए गए सोने का क्या होता है?

योजना के नियमों के अनुसार सोने-आभूषण, बुलियन, कलाकृतियों- को बैंक में जमा करना आवश्यक होता है और बदले में बैंक इसकी शुद्धता का परीक्षण करेगा। एक बार सोने के गहनों की शुद्धता का पता चलने के बाद वे सोने के गहनों को पिघला देंगे और इसे बुलियन या सोने के सिक्कों में बदल देंगे। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति योजना के तहत सोने की चूड़ियों या हार जैसे आभूषणों पर ब्याज अर्जित करने के लिए बैंक में जमा करता है तो परिपक्वता के समय बैंक जमा किए गए सोने को उसी आकार और रूप में वापस नहीं करेगा।

योजना की मुख्य विशेषताएं

स्वर्ण मुद्रीकरण योजना निम्नलिखित विशेषताओं के साथ आती है:

- यह योजना बार, सिक्के या गहनों के रूप में न्यूनतम 10 ग्राम कच्चे सोने की जमा राशि स्वीकार करती है।
- इस योजना के तहत निवेश की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती है।
- योजना न्यूनतम लॉक-इन अवधि के बाद समय से पहले निकासी की अनुमति देती है।
- सभी नामित वाणिज्यिक बैंक भारत में स्वर्ण मुद्रीकरण योजना को लागू करने में सक्षम हैं।
- स्वर्ण मुद्रीकरण योजना द्वारा प्रदान की जाने वाली अल्पावधि जमाओं को मोचन के समय लागू वर्तमान दरों पर या तो सोने में या रुपये में भुनाया जा सकता है।

स्वर्ण मुद्रीकरण योजना पात्रता

सभी निवासी भारतीय इस नई स्वर्ण मुद्रीकरण योजना में निवेश कर सकते हैं। निम्नलिखित संस्थाएं हैं जो नई स्वर्ण मुद्रीकरण योजना का लाभ उठाने के लिए पात्र हैं:

- व्यक्तियों
- हिंदू अविभाजित परिवार (एचयूएफ)
- कंपनियों
- धर्मार्थ संस्थान
- प्रोपराइटरशिप और पार्टनरशिप फर्म
- म्युचुअल फंड या एक्सचेंज ट्रेडेड फंड सहित कोई भी ट्रस्ट
- केंद्र सरकार
- राज्य सरकार
- केंद्र या राज्य सरकार के स्वामित्व वाली अन्य संस्थाएं

योजना में निवेश के लाभ

स्वर्ण मुद्रीकरण योजना में सोने का निवेश करके एक निवेशक निम्नलिखित लाभों का आनंद उठा सकता है:

- आप अपने निष्क्रिय रखे सोने पर ब्याज अर्जित करेंगे जो आपकी बचत की पूँजी को बढ़ा देगा।
- यह योजना देश के सोने के आयात को कम करके लाभान्वित करेगी।
- ये योजनाएं आपके निवेश या सोने में जरूरत पड़ने पर लचीलेपन की पेशकश करती हैं।
- आप कम से कम 10 ग्राम सोने से अपना निवेश शुरू कर सकते हैं।

स्वर्ण मुद्रीकरण योजना के माध्यम से एकत्र किए गए सोने के एक हिस्से को एमएमटीसी और आरबीआई को सोने के सिक्कों की ढलाई और बिक्री के लिए बेचा या उधार दिया जा सकता है। इस प्रकार सोने के आयात को कम करने में मदद करने के लिए इस योजना के माध्यम से जमा किए गए सोने को देश में फिर से परिचालित किया जाएगा। सोना देश की सबसे कीमती संपत्ति होने के नाते भारत सरकार का उद्देश्य इसका उपयोग राष्ट्र निर्माण और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य से करना है। ■

इन देशों में कार-बाइक की जगह नावों में घूमते हैं लोग

जब हॉलिडे मनाने की बात आती है तो हम अनोखी डेस्टिनेशन पर जाना चाहते हैं। आपको बता दें कि दुनिया के इन शहरों में आपको कुछ नया एक्सपीरियंस करने को मिलेगा। बता दें कि इन जगहों पर सड़क नहीं है। बल्कि यहां पर लोग नाव से इधर-उधर जाते हैं।

अनन्या मिश्रा

हनीमून पर जाना हो या हॉलिडे मनाना हो, हर कोई चाहता है कि उनकी डेस्टिनेशन सुंदर और अनोखी होनी चाहिए। अगर आप भी किसी ऐसी जगह की तलाश में हैं, तो दुनिया भर में कई खूबसूरत शहर और कस्बे मौजूग हैं। इन जगहों पर एक-जगह से दूसरी जगह पर जाने के लिए नाव करनी पड़ती है। इन जगहों पर आपको सड़क नहीं मिलेगी। अगर आप भी इन जगहों पर जाते हैं तो वहां पर आप नाव के जरिए इधर-उधर जा सकते हैं। आइए जानते हैं उन जगहों के बारे में...

सुझाऊ

सुझाऊ चीन का एक गांव है। इस गांव का अपना इतिहास रहा है। बता दें कि यहां के लोगों को नाव से चलना काफी पसंद है। इसलिए आपको यहां पर पेड़ों के आसपास नहरों में ढेरों चलती हुई नाव देखने को मिलेंगी।

एनेसी

फ्रांस का एनेसी पानी पर बसा हुआ है। आपको यहां पर कुछ ही मीटर पर कई ब्रिज देखने को मिलेंगे। यहां पर नहर के किनारे काफी संख्या में रेस्तरां बने हैं। इन रेस्तरां में आप सुबह की चाय की चुस्कियां लेने के लिए पहुंच सकते हैं। बता दें कि यह जगह लार्ड एनेसी के नाम बनी हुई है।

वेनिस

वेनिस शहर की गिनती इटली के सबसे खूबसूरत शहरों में आता है। यह पूरा शहर पानी में बसा हुआ है। इस शहर को छोटे-छोटे आइसलैंड के साथ मिलकर बनाया है। अगर आप भी इटली घूमने जाएं तो एक बार गंडोला राइड का लुत्फ जरूर लें। यहां पर आपको एक भी सड़क नहीं दिखेगी।

गेनवी

अफ्रीका का छोटा गांव गेनवी अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है। गेनवी की आबादी करीब 20 हजार के आसपास है। यह गांव नोकुई झील के बीच पर बसा है। यहां पर लोग नाव पर बैठकर बिजनेस करते हैं। घूमने के लिहाज से यह बेहतरीन जगह है।

स्टॉकहोम

स्वीडन की राजधानी स्कॉटहोम भी एक खूबसूरत शहर है। यह 14 आइसलैंड पर बना है। बता दें कि स्कॉटलैंड में 50 से ज्यादा ब्रिज मौजूद हैं। झील के किनारे बना यह शहर अपनी नीली इमारतों के लिए भी जाना जाता है। ■

चिट्ठी और डाकिए

ने हिंदी सिनेमा में कभी धड़काए दिल कभी रुलाए

चिट्ठी और डाकिए हिंदी सिनेमा के खास हिस्सा रहे हैं। गीत-संगीत से लेकर कहानियों और पात्रों तक में महत्व मिला है। पूरा एक सुहाना दौर रहा है इनका। आज भी उन गीतों को सुन मन रूमानियत से महक उठता है। भले आज ईमेल, एसएमएस, व्हाट्सएप, फेसबुक आदि साधन सहज उपलब्ध हैं, लेकिन प्रेमी या प्रेमिका के हाथ से लिखी चिट्ठी पढ़ने से, दिल धड़कना लाजिमी है। बीते दौर में भारतीय डाक ने चिट्ठियों से दिल जोड़ने का काम किया। इजहार-ए-मोहब्बत चिट्ठियों के मार्फत होती थी। प्रेमियों के बीच प्यार परवान चढ़ता था।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

इसी दिशा में अगर हम हिंदी फिल्मों के सफर पर नजर डालें तो वर्ष 1962 की शशि कपूर व साधना की फिल्म 'प्रेमपत्र' के शीर्षक ने खूब सुर्खियां बटोरीं। 1985 की फिल्म 'एक चिट्ठी प्यार भरी' में राज बब्बर और रीना राय बीच प्यार का सिलसिला चिट्ठियों से शुरू होता है। 1964 की फिल्म 'संगम' का गीत याद है, जिसमें राजेंद्र कुमार वैजयंती माला के नाम खत लिखते हैं यह मेरा प्रेम पत्र पढ़कर...! 1966 में आई फिल्म 'तीसरी कसम' के लिए गीतकार शैलेंद्र का लिखा गीत सजनवा बैरी हो गई हमार बेहद चर्चित हुआ। आशा पारेख 1966 में फिल्म 'आए दिन बहार के' में खत लिख दे सांवरिया के नाम बाबू की गुहार लगाती हैं। खत के साथ सुगंध का सिलसिला भी बहुत ही पुराना है। तभी तो 1968 में आई फिल्म 'सरस्वतीचंद्र' में नायिका नूतन गाती है फूल तुम्हें भेजा है खत में फूल नहीं मेरा दिल है...! इसी साल प्रदर्शित फिल्म 'कन्यादान' में नायक गाता है लिखे जो खत तुझे वो तेरी याद में, हजारों रंग के नजारे बन गए... ! गीतकार नीरज ने 1970 में आई फिल्म 'प्रेम पुजारी' में फूलों के रंग से दिल की कलम से तुझको लिखी रोज पाती... के रूप में प्रेमपत्र को नया अंदाज दिया। आएगी जरूर चिट्ठी मेरे नाम की सब देखना, हाल मेरे दिल का लोगों तब देखना...! इस बेहद लोकप्रिय गीत के बोल आज भी कानों में एक मीठी सी याद की मानिंद गूंजते हैं। साल 1974 में हेमा मालिनी और जितेंद्र अभिनीत फिल्म 'दुल्हन' में हेमा मालिनी पर फिल्माए गए।

इस बेहद खूबसूरत गीत ने बिल्कुल साफ तौर पर महसूस करा दिया कि एक चिट्ठी के बिना भी जिंदगी कितनी नीरस हो सकती है। मतलब साफ कि डाकिया, चिट्ठी और उससे जनित हर्ष और शोक दोनों ही हिंदी सिनेमा ने भी कहानियों और गीतों में समाहित किए हैं। वर्ष 1977 में आई फिल्म 'पलकों की छांव में' का गुलजार लिखित गीत डाकिया डाक लाया हमें उस दौर की याद दिलाता है, जब डाकिया और डाकघर हर आम-ओ-खास के लिए बेहद अहम हुआ करते थे। अनिल कपूर की 1986 में आई फिल्म 'चमेली की शादी' में बच्चों के मार्फत चिट्ठी का आदान-प्रदान होता है। साल 1991 में आई ऋषि कपूर, जेबा बख्तियार और अश्विनी भावे की फिल्म 'हिना' में चिट्ठियों का विशेष महत्व दिखाया। 'जिगर' (1992) में नायक अजय देवगन 'प्यार के कागज पर दिल की कलम से' गाकर प्रेमिका के नाम खत लिखते हैं। 1997 में आई फिल्म 'बॉर्डर' में सोनू निगम और रूप कुमार राठौड़ द्वारा गाया, जावेद अख्तर का लिखा, अन्नू मलिक के संगीत में सजा गीत संदेशे आते हैं आज भी सुनें तो इमोशनल कर जाता है। साल 1999 में फिल्म 'सिर्फ तुम' में पहली-पहली बार मोहब्बत की है, कुछ न समझ में आए, मैं क्या करूं...! गाना सबको याद होगा, जब नायक-नायिका आपस में कभी नहीं मिलते, चिट्ठियां लिख-लिखकर ही वे एक-दूसरे से बेइंतहां मोहब्बत करते दिखते हैं। वर्ष 2013 में फिल्म 'लंच बॉक्स' में शादीशुदा महिला एवं रिटायरमेंट की दहलीज पर खड़ा शख्स 'लंच बॉक्स' में छिपाकर भेजे जाने वाली 'चिट्ठियों' के जरिये एक-दूसरे को जानते हैं, और प्यार कर बैठते हैं।

फिल्मों को नायक-नायिका की चिट्ठी भी रोचक-रोमांच बनाती रही

फिल्मों में अक्सर ऐसे दृश्य दिखते हैं, जब नायक या नायिका रूठकर चले जाते हैं, तो टेबल पर एक चिट्ठी मिलती है। कभी नायक या नायिका बेबसी की कहानी चिट्ठी में लिखकर देते हैं, जो पाने वाले को समय पर नहीं मिलती या किसी के द्वारा छिपा दी जाती है। अंत में न केवल चिट्ठी मिलती है, बल्कि वो नायक-नायिका को भी मिला देती है। 1967 की फिल्म 'दुल्हन एक रात की' में नायिका अपने अपराधी होने की जानकारी नायक को देती है। लेकिन, यह चिट्ठी उसे नहीं मिलती! 1991 में आई फिल्म 'साजन' में भी माधुरी दीक्षित संजय दत्त की चिट्ठियों को सलमान की चिट्ठी समझ दिल दे बैठती है।

हिंदी सिनेमा ने डाकिए को कई अहम किरदारों में भी पेश किया है

फिल्मों में डाक विभाग का जिक्र महज गीतों तक सीमित नहीं रहा है, किरदारों में भी रहा है। वर्ष 1965 में रविन्द्रनाथ टैगोर की कृति पर फिल्म 'डाकघर' बनी। एक घंटे की इस फिल्म में बलराज साहनी और सचिन ने अभिनय किया। वर्ष 2008 में आई 'वेलकम टू सज्जनपुर' फिल्म में महादेव का पूरे गांव के लोगों के लिए चिट्ठी लिखने का काम और अंदाज कौन भूला है? मेरे प्राणनाथ! चार दिवाली बीत गई हैं, तुम न आए साजन, मुंबई में क्या जोड़ लिया है और किसी से बंधन इन मार्मिक-चुटीले शब्दों से डाक विभाग और चिट्ठी की मदद से बेपरवाह पति को जिम्मेदारी का एहसास कराया।

गीत ही नहीं गजलों को भी अपनी खुशबू से महकाती रही है चिट्ठी

वैसे साहित्य की बात करें तो इसी डाकिए की अहमियत को शायर निदा फाजली साहब ने क्या खूब ढंग से अपने शेर में बयां किया है।

पुराने डाक बंगलों ने भी दिए हैं हिंदी सिनेमा को खूबसूरत एहसास

हिंदी फिल्मों में अक्सर डाक बंगलों का जिक्र आता है। जो कहानी की मांग के अनुरूप पात्रों के ठिकाने बनते रहे हैं। दर्शक रूमानी फिल्मों में इन डाक बंगलों से बेशक खूबसूरत रोमांटिक एहसास लेकर जाते थे। तो कुछ हॉरर फिल्मों में खौफनाक एहसास लेकर। इन डाक बंगलों ने अपनी खूबसूरती से मशहूर फिल्मकारों और कलाकारों को फिल्मों की शूटिंग के लिए खूब लुभाया है। ये वही डाक बंगले हैं, जिनका निर्माण डाक, डाकियों और अंग्रेज अफसरों व उनके चहेतों को अस्थायी निवास हेतु कराया गया था। किसी पर्यटन स्थल के अनुसार इनका विशिष्ट सौंदर्य सबको लुभाता रहा है, कहीं-कहीं अंग्रेजो ने नैसर्गिक सौंदर्य के दर्शन के लिए इन डाक बंगलों का निर्माण किया था। इनमें अधिकारियों के ठहरने के लिए सुविधायुक्त सुसज्जित कक्ष, फलदार व छायादार बागों सहित सुगन्धित पुष्पों से महकता वातावरण था। अतिथिगृह कुछ भिन्न बनाए जाते थे जो डाक बंगले में रुके अधिकारी के अतिथियों के लिए होते थे। उसकी ख्याति उस स्थान के डाक बंगले के नाम से दर्ज हो जाती थी। पर्यटक भी वहां पहुंचने के लिए लालायित हो उठते हैं।

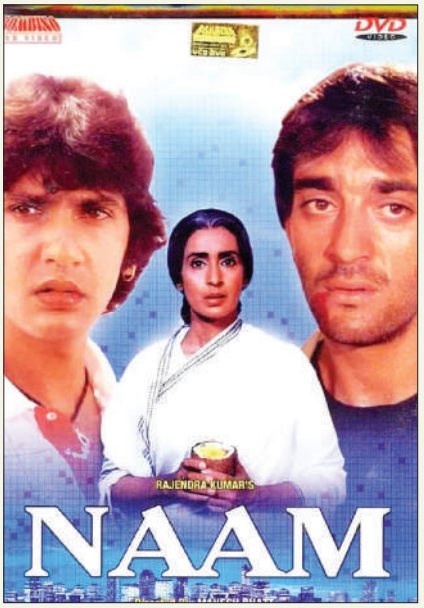

सीधा-साधा डाकिया जादू करे महान, एक ही थैले में भरे आँसू और मुस्कान!

आनंद बख्शी द्वारा लिखी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत में सजी पंकज उधास की आवाज में गजल चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है... वर्ष 1986 में फिल्म 'नाम' की बंपर कामयाबी का हिस्सा बनी। आनंद बक्शी की ही लिखी, उत्तम सिंह के संगीत में सजी, जगजीत सिंह की आवाज में गजल ओह चिट्ठी न कोई संदेश, जाने वो कौन सा देश... 1998 में आई फिल्म 'दुश्मन' में चिट्ठी की बात करती है।

कुछ फिल्मी सितारों के करियर में खास स्थान रहा है चिट्ठियों का

हिंदी सिमेना के सुपर स्टार राजेश खन्ना का कैरियर तो 'आखिरी खत' फिल्म से ही शुरू हुआ था। मशहूर कलाकार देवानंद साहब के तो कैरियर की शुरूआत ही चिट्ठियों के साथ हुई। उनको सेना में सेंसर ऑफिस में पहली नौकरी मिली। जिसमें 165 रुपए मासिक वेतन मिलाता था। यह बात तब की है जब द्वितीय विश्व-युद्ध चल रहा था। उनका काम था फौजियों की चिट्ठियों को सेंसर करना। जिनमें एक से एक बढ़कर रोमांटिक चिट्ठियाँ आती थीं। उस जमाने की एक चिट्ठी का जिक्र खुद देवानंद साहब कभी दिल्लगी से किया करते थे, जिसमें एक मेजर ने अपनी बीवी को लिखा कि उसका मन कर रहा है कि वो इसी वक्त नौकरी छोड़कर उसकी बाहों में चला आए। बस इसके बाद देवानंद साहब को भी ऐसा लगा मैं नौकरी छोड़ दूँ और फिर उन्होंने छोड़ दी यह नौकरी, किस्मत देखो, तीसरे ही दिन प्रभात फिल्म्स से बुलावा आ गया और देवानंद ने 1946 में फिल्मी दुनिया में कदम रख दिया, पहली फिल्म थी प्रभात स्टूडियो की 'हम एक हैं', दुर्भाग्यवश फिल्म तो असफल रही, मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। ■

कहानी

घर की नींव

क्या मां की तड़प को समझ पाया मधुकर?

मां की तड़प मधुकर अच्छी तरह महसूस कर रहा था। मां, जिन्होंने अपना जीवन जीया ही उस के लिए था, उन्हें जीवन के अंतिम क्षणों में अकेला छोड़ देना कितना बड़ा अन्याय था। क्या थी मधुकर की मजबूरी?

सुनीता पाठक

ट्रेन एक हलके से धक्के के साथ चल पड़ी। सैकड़ों विशालकाय लोहे की कैंचियों ने ऋषिकेश तक की दूरी को काटना शुरू कर दिया। बाहर बारिश हो रही है, इधर कई दिनों से उमस हो रही थी। बादल पूरे आसमान में छाए हुए थे, कई दिनों से आसमान को घेरे पड़े थे, उमड़घुमड़ रहे थे, अब जा कर बरसे हैं तो वातावरण हलका हो जाएगा, मधुकर ने नीचे की बर्थ पर चादर बिछाते हुए सोचा, उस का अपना मन भी तो ऐसे ही बोझिल है, जाने कब हलका होगा, उस ने जूते उतारे और पैर समेट कर आराम से बैठ गया। बाहर देखने की कोशिश में अपना चेहरा खिड़की के शीशे से सटा दिया। बाहर खिड़की के कांच पर एकएक बूंद गिरती है, फिर ये एकदूसरे के साथ मिल कर धार बना लेती हैं, अनवरत धार, जो बहती ही चली जाती है। बूंदों में उसे एक चेहरा नजर आने लगा। झुर्रियों भरा, ढेर सारा वात्सल्य समेटे वह चेहरा जिस ने उसे प्यार दिया, जन्म दिया, अपने उदर में आश्रय दिया, आंचल की छांव दी। उस चेहरे की याद आते ही मधुकर की छाती में जैसे गोला सा अटकने लग जाता है। उस की मां पिछले साल से ऋषिकेश के एक आश्रम में रह रही हैं। अपने कामधंधे में इस बीच वह इतना व्यस्त रहा कि पिछले 4 महीनों से मां के खर्च के लिए रुपए भी नहीं भेज सका। वह लगातार टूर पर था। उस ने सोचा कि नमिता ने भेज दिए होंगे और नमिता ने सोचा कि उस ने भेज दिए होंगे। कल जब पता चला कि 4 महीनों से किराया नहीं गया तो फिर उस की बेचैनी का अंत न रहा और उस ने तुरंत ऋषिकेश जाने का निश्चय कर लिया। जाने मां किस हाल में होंगी, उन्होंने कोई पत्र भी नहीं लिखा, असल में वह स्वाभिमानी तो शुरू से ही रही हैं, उस के लिए यही स्वाभाविक था। उन्हें कितनी भी तकलीफ क्यों न हो, दयनीय बनना तो उन की फितरत में नहीं है। सर्वे भवंतु सुखिनः बड़े बड़े अक्षरों में लिखा हुआ, आश्रम का मटमैला गेट उस की नजरों में तैर रहा है। वह कब वहां पहुंचेगा, सोच कर उस ने बेचैनी से पहलू बदला। मधुकर 10 वर्ष का था, तभी हृदयगति रुक जाने से पिता की असामयिक मृत्यु हो गई थी। दबी-ढकी, सकुची-सहमी, व्यक्तित्वहीन सी मां ने इस विकट परिस्थिति में कैसे रंग बदला देख कर वह दंग रह गया। उन्होंने उसे मां-बाप दोनों बन कर पाला। उन के जीवन का सूत्र वही था, उस की पढ़ाई, उस का स्वास्थ्य, उस की खुशी, मां की सारी दुनिया यहीं तक सिमट आई थी। जब मधुकर की नौकरी लगी, तो मां के चेहरे पर एक गहरी परितृप्ति की आभा दिखाई पड़ी, जैसे वह इसी दिन के लिए तो जी रही थीं। मधुकर ने पहली तनख्वाह लाकर मां को दी और कहा कि मां अबतक तुम बहुत मेहनत कर चुकीं, अब बस करो, आशा के विपरीत बिना किसी नानुकर के मां मान गई, जैसे इसी का इंतजार हों।

मधुकर को पहली बार संतोष का एहसास और अपने कर्तव्य को पूरा कर सकने की कृतार्थता जैसी अनुभूति हुई, पर तभी जाने कहां से, मां को उस की शादी कर देने की धुन सवार हो गई। बड़ी खोजबीन के बाद नमिता को उस के लिए मां ने पसंद किया। कई बड़े घरों से रिश्ते आए, लाखों रुपए दहेज का प्रस्ताव भी मां ने ठुकरा दिया यह कह कर कि गरीब घर की लड़की अधिक संवेदनशील होगी, वह तेरा घर सुखमय बनाए रखेगी, एक अच्छी पत्नी और सुघड़ बहू साबित होगी। नमिता को देख कर मधुकर को भी अच्छा लगा। वह उसे विनम्र, सुभाषिणी और संस्कारवान लगी थी। पहली ही मुलाकात में उस ने कहा था नमिता, मेरी मां का खयाल रखना, मेरे लिए उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी होम कर दी है। उस समय तो नमिता ने मुसकरा कर सिर हिला दिया था, पर अब उसे लगता है कि तभी गलती हो गई थी। उसी समय नमिता के मन ने मां को अपना प्रतिद्वंद्वी मान लिया था। समय बीतने के साथ-साथ यह प्रतिद्वंद्विता और गहरी होती गई थी। बच्चे होने के साथ तो यह संघर्ष बढ़ता ही चला गया। बच्चों के पालन-पोषण को लेकर मां कोई भी सुझाव देतीं तो वह उन के मुंह पर ही उन की हंसी उड़ाती। संवेदनशील मां आहत हो कर धीरे-धीरे अपने में ही सिमटती चली गई। मधुकर ने जब भी विरोध करना चाहा, तो मां ने दृढ़ता से कह दिया, देख मधु, मेरी जिंदगी आखिर और कितनी बची है। मेरे लिए तू अपनी गृहस्थी में दरार मत डाल। हां, दादी के हाथों पले बच्चे बड़े होने के बाद, दादी के ही ज्यादा नजदीक थे। मां तो उन के लिए एक थानेदार जैसी थीं, जो केवल निर्देश दिया करती थीं, यह करो और वह न करो। दादी ही उन की असली मां बन गई थीं। दोस्तों से झगड़ कर आने के बाद बच्चे दादी की गोद में ही सिर छिपा कर रोते। यह सब नमिता को उग्र से उग्रतर बनाते चले जा रहे थे। सारी समस्याओं की जड़ में उसे मां ही नजर आतीं। ऋषिकेश के छोटे से स्टेशन पर उतर कर उस का मन हुआ कि एक कप चाय पी ले, आश्रम में पता नहीं चाय मिलेगी भी या नहीं, तो तुरंत खयाल आया कि मां तो बारबार चाय पीती थीं। जब वह पढ़ता था तो मां रात में उस के साथ जागी रहती थीं, घंटे, डेढ़ घंटे में बिना कहे चाय बनातीं। अदरक डली हुई कड़क चाय का प्याला उसे स्फूर्ति दे जाता था, उसी समय मां को भी बारबार चाय पीने की आदत पड़ गई थी। जीवन में ऐसे ढेरों क्षण आते हैं जो चुपचाप गुजर जाते हैं, पर उन में से कुछ स्मृतियों की दहलीज पर अंगद की तरह पैर जमा कर खड़े रह जाते हैं। हमारी चेतना के पटल पर वे फ्रीज हैं तो हैं। मां के साथ बिताए कितने सारे क्षण, जिन में वह केवल याचक है, उस की स्मृति की दहलीज पर कतार बांधे खड़े हैं। विचारों में डूबताउतराता मधुकर आश्रम के जंग खाए, विशालकाय गेट के सामने आ खड़ा हुआ। सड़क पतली, वीरान और खामोश थी। चारों तरफ दरख्तों के झुंड में धूपछांव का खेल चल रहा था। नीला आसमान था, साफ हवा के झोंके थे, मधुकर पुलकित हो कर यह दृश्य देखता रहा। जाने क्या जादू था यहां कि उस की सारी चिंताएं, सारे तनाव जाने कहां खो गए। गेट खोल कर मधुकर अंदर आया तो मां एक खुरपी से मोगरा के फूलों की क्यारी ठीक कर रही थीं। मधुकर को देख उन के मुंह से निकला, बेटा, तू आ गया, और अपनी डबडबाई आंखों को छिपाने के लिए वह इधर-उधर देखने लगीं। आंखें तो उस की भी भर आईं, उस ने मां को यहां क्यों आने दिया। सैकड़ों बार स्वयं से पूछा गया यह सवाल आज भी उस की अंतरात्मा को कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाया। मां अत्यंत बेचैन हो उठीं कि उसे क्या खिलाएं पिलाएं। मां, तुम मेरे खाने-पीने की चिंता मत करो, आज तो हम मां-बेटे सिर्फ बातें करेंगे, लाड़ जताता हुआ मधुकर बोला। हां हां, क्यों नहीं, पर पहले तुम नहा कर तो आओ। तो मां, तुम नहीं सुधरोगी, कहता हुआ मधुकर हंस पड़ा। मां को हमेशा से अच्छा लगता था कि घर के सब लोग सुबह-सुबह नहा-धोकर तैयार हो जाएं और मधुकर इस बात पर खूब टालमटोल करता था। अरे, आश्रम के पास ही गंगा का घाट है, नहाकर तो देखो, कितना अच्छा लगता है, मां ने फिर से अपनी बात पर जोर दिया। जाता हूं, मां जाता हूं, कहता हुआ मधुकर उठ खड़ा हुआ। गंगाजल का शीतल, पावन स्पर्श उस की शिराओं में अज्ञात टौनिक का संचार कर गया। वह बड़ी देर तक तैरता रहा।

नहाकर आया तो मां ने उस की पसंद के आलू के मोटे-मोटे परांठे, घर का निकाला हुआ मक्खन का बड़ा सा डला और दही-चीनी परोसा। बहुत दिनों बाद डायबिटीज और कोलैस्ट्राल को भूल मधुकर ने भरपेट खाना खाया और लेट गया। मां उस के बारबार मना करने के बावजूद उस के सिर में तेल लगाने बैठ गईं, साथ ही, नमिता कैसी है? चिंकी और मिंकू कैसे हैं? मिंकू अब दूध पी लेता है न, रात में बिस्तर गीला करने की आदत छूटी या नहीं इत्यादि सवाल करते समय मां के स्वर का गीलापन साफ-साफ पकड़ में आ रहा था। मधुकर खुद को फिर से कठघरे में खड़ा पा रहा था, साथ ही, लरजता हुआ यह ममतामय स्पर्श, उस का मन हो रहा था कि मां की गोद में सिर छिपा कर फूट-फूट कर रो पड़े। नमिता तो पराई जाति थी, पर उसे क्या हो गया था। अपना घर बचाने के लिए उसने कैसी कीमत चुकाई? क्या उस का घर इतना कीमती है कि उस की बूढ़ी मां का वात्सल्य भी उस के आगे छोटा पड़ जाए। शाम को मधुकर सोकर उठा तो मां भोजन की तैयारी में जुट गई थीं। उस ने कहा, मां, तुम अपना काम निबटाओ, तब तक मैं घूमकर आता हूं। शाम का समय, गंगा का किनारा, शीतल जल, साफ पानी के अंदर गोल चमकीले पत्थर, तनमन का मैल धोने आए कितने ही श्रद्धालु वहां आसपास घूम रहे थे। संध्याकालीन आरती के साथ घंटे-घड़ियालों एवं शंखों की ध्वनि वातावरण में सम्मोहन घोल रहे थे। गंगा की लहरों पर इमारती लकड़ी का एक बड़ा सा कुंदा बहता जा रहा था, उस की जिंदगी भी तो ऐसे ही समय की लहरों से धकेली जा रही है। सुबह, दोपहर, शाम और वह बहता रहा, बहता रहा। परिस्थितियों के हाथों खेलता रहा। नमिता ने मां की शिकायतें कीं, उस ने सुन लिया, मां और फिर बेटा दोनों उस कर्कशा, झगड़ालू पत्नी के हाथों प्रताड़ित होते रहे। उस ने जब भी प्रतिवाद करना चाहा, नमिता ने घर छोड़ कर चले जाने की धमकी दे डाली। बेटे-बहू में बढ़ते तनाव को देखते हुए परेशान मां ने उन के बीच से हट जाने का फैसला लिया और बेटे को समझा दिया कि अब उस के पूजापाठ में मन लगाने के दिन हैं। अपनी एक परिचिता का दिया हुआ ऋषिकेश के आश्रम का पता भी दिया। मधुकर को मां का यह प्रस्ताव बहुत ही अरुचिकर और हृदयविदारक लगा, पर मां को आश्रम भेजने में नमिता की तत्परता और बेटे का घर बना रहे इस के लिए मां का त्याग, दोनों के आगे वह कुछ न कर पाया। काश, वह कुछ कर पाता। यह इतना बड़ा ब्रह्मांड, आकाश, तारे, नक्षत्र, सूर्य, चंद्रमा सब अपनी धुरी पर अपना दायित्व निभाते रहते हैं। कमाल का समायोजन है। हम मानव ही इतने असंतुलित क्यों हैं, सोचते हुए मधुकर के अंदर एक बेचैनी पलने लगी थी, अंदर ही अंदर वह खौल रहा था, उबलते पानी की तरह। कई बार सोचता है, वह कुछ बोलता क्यों नहीं? क्यों अपनी आत्मा पर बोझ ले कर जिंदा है? मां के प्यार का क्या प्रतिदान वह दे रहा है? वह सोच रहा था कि अचानक छपाक की आवाज और किसी औरत की चीख सुनाई दी, अरे, कोई बचाओ, मेरा बच्चा डूब रहा है। बचाओ, अरे कोई तो बचाओ। बेचैन मां की हृदयविदारक चीख सुनाई पड़ते ही मधुकर अपनी तंद्रा से बाहर आता है, उछल कर खड़ा हो जाता है, तब तक बेटे को बचाने के लिए मां भी उस के पीछे नदी में डुबकी लगा चुकी है, न मां का पता है, न बच्चे का। 3-4 मल्लाह पानी में संघर्ष करते दिखाई पड़ते हैं। थोड़ी ही देर में बच्चा ढूंढ़ लिया जाता है, पर मां नहीं मिलती। लगता है, उस ने जलसमाधि ले ली। हलचल मची हुई है, लोग बातें कर रहे हैं, बेचारा बच्चा अनाथ हो गया। मां को तैरना नहीं आता था तो कूदी क्यों, बेचारी, डूब गई। मधुकर को जरा भी आश्चर्य नहीं है। अगर वह डूब रहा होता तो उस की मां भी यही करती। और वह खुद कायर की तरह नमिता के हाथों खेलता रहा, केवल इसलिए कि घर की शांति न भंग हो, घर बचा रहे। अरे, ये बुजुर्ग ही तो घर की नींव होते हैं, बिना नींव के क्या कभी घर टिका है। एक पल में उस का मन निर्द्वंद्व हो गया। उस ने निश्चय कर लिया कि अब चाहे जो हो, अपने घर की नींव को वह पुख्ता और मजबूत बनाएगा। फिर तो उस का घर आंधीतूफान, सबकुछ झेल लेगा, सबकुछ। इस का उसे पक्का यकीन है। और वह सधे कदमों से आश्रम की ओर चल पड़ा। ■

चलो फिर बच्चे बन जाएँ...

चलो फिर बच्चे बन जाएँ
चलो आज फिर से हम बच्चे बन जाएँ

मोहल्ले के बच्चों का एक गुट बनाकर,
हाथों में लड़की और गेंदे जमा कर,
हिटलर आंटी के घर के शीशे चटकाएँ
सारा-सारा दिन हम ऊधम मचाएं,
चलो आज फिर से हम बच्चे बन जाएँ ....!!

कागज के पंखों पर सपने सजाकर
गेंदे के पत्तों से कोई धुन बजाकर
खाली थैलियों की पतंगें उड़ाएँ
रातों को टॉर्च से आसमां चमकाएं
चलो आज फिर से हम बच्चे बन जाएँ ....!!

मम्मी से बेमतलब लाड़ जताकर,
पापा से रेत के घर बनवाकर,
भैया की साइकल के पैडल घुमाकर
दीदी की गुड़िया को भूत बनाकर
रह गयी यादों को फिर से सहलाएं
हर घर की घंटी बजाते भागे जाएँ,
बागों से छुप-छुपकर आम चुराएँ
चलो आज फिर से हम बच्चे बन जाएँ ....!!

अंकिता जैन

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India
NOVA®
DAIRY PRODUCTS
Serving since 1991
Fresh Dahi
Ghee
Plain Chach
घी, दूध, दही, छाछ,
पनीर और डेयरी व्हाईटनर
STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.
E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com
Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)
For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050